CHAUKHAMBA
AYURVEDA POCKET SERIES

द्रव्यगुण-विज्ञान

AS PER CCIM NEW SYLLABUS - IIND PROFESSIONAL

लेखक
बोर्ड आफ स्कालर्स

प्राक्कथन एवं सम्पादक
डॉ. दीपक यादव 'प्रेमचन्द'

Chaukhamba Surbharati Prakashan

विषयानुक्रमणिका

संपादकीय v

पेपर 1 भाग अ

1. द्रव्यगुण शास्त्र परिभाषा 1
2. द्रव्य 6
3. गुण 13
4. रस 26
5. विपाक 41
6. वीर्य 45
7. प्रभाव 49
8. कर्म 53
9. चरक का दशेमानि गण 67
10. मिश्रक गण 87
11. द्रव्य नामकरण सिद्धान्त 111

12. भेषज परीक्षा विधि आदि 114

पेपर 1 भाग ब

13. द्रव्य शोधनादि प्रकरण 123
14. प्रशस्त भेषजादि प्रकरण 129
15. निघण्टु विज्ञान 132
16. Pharmacology 135

पेपर 2 भाग अ

1. प्रमुख द्रव्य प्रकरण 177

पेपर 2 भाग ब

1. सामान्य द्रव्य परिचय 287
2. जांगम द्रव्य प्रकरण 361
3. अन्नपान वर्ग प्रकरण 363

• • •

1. द्रव्यगुण शास्त्र परिभाषा

द्रव्य गुण शास्त्र लक्षण

शास्त्रे यस्मिन् द्रव्यं नामाकृतिधर्मकर्मसंयोगैः।
विव्रियते च प्रयोगैः द्रव्यगुणन्तद् विनिर्दिष्टम्।।

षोडशांगहृदयम् 3.2

जिस शास्त्र में द्रव्य से सम्बन्धित नाम, आकृति, धर्म, कर्म, संयोग और प्रयोग का वर्णन हो – उसे 'द्रव्यगुण शास्त्र' कहते हैं।

द्रव्याणां गुणकर्माणि प्रयोगा विविधास्तथा।
सर्वशो यत्र वर्ण्यन्ते शास्त्रं द्रव्यगुणं हि तत्।।

आचार्य प्रियव्रत शर्मा

गुण शब्देन चेह धर्मवाचिना रसवीर्यविपाक-
प्रभावाः सर्व एव गृह्यन्ते। च.सू. 1.51 पर चक्रपाणि

द्रव्याणां गुणाः। शिवदास सेन

/द्रव्यों के गुण, कर्म और प्रयोग का जि शास्त्र में विवेचन हो उसे

2020-7-11 11:45

'द्रव्यगुणशास्त्र' कहते हैं। 'द्रव्यगुण' शब्द में 'गुण' शब्द धर्म में रूढ़ हो गया है और इससे गुण एवं कर्म दोनों का बोध होता है।

द्रव्यगुण शास्त्र की महत्ता

(1) आयुर्वेद की व्याख्या –

स्वलक्षणतः सुखासुखतो हिताहिततः प्रमाणाप्रमाणतश्च;
यतश्चायुष्याण्यनायुष्याणि च द्रव्यगुणकर्माणि वेदयत्यतोऽ-
प्यायुर्वेदः। च.सू. 30.23

(2) त्रिसूत्र आयुर्वेद –

हेतुलिंगौषधज्ञानं स्वस्थातुरपरायणम्।
त्रिसूत्रं शाश्वतं पुण्यं बुबुधे यं पितामहः।। च.सू. 1.24

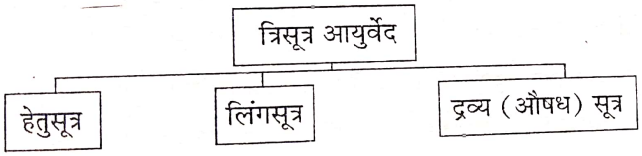

(3) चिकित्सा के चतुष्पाद –

भिषग्द्रव्याण्युपस्थाता रोगी पादचतुष्टयम्।
गुणवत् कारणं ज्ञेयं विकारव्युपशान्तये।। च.सू. 9.3

(4) रोग एवं औषधि परीक्षा –

रोगमादौ परीक्षेत ततोऽनन्तरमौषधम्। च.सू. 20.20

(5) भिषक् का श्रेष्ठत्व –

तेषां कर्मसु बाह्येषु योगमाभ्यन्तरेषु च।
संयोगं च प्रयोगं च यो वेद स भिषग्वरः।। च.सू. 4.29

(6) लोकोक्ति –

निघण्टुना विना वैद्यो विद्वान् व्याकरणं विना।
अनभ्यासेन धानुष्कस्त्रयो हासस्य भाजनम्।। राजनिघण्टु

द्रव्यगुण विज्ञान के मौलिक सिद्धान्त

षड् पदार्थ सिद्धान्त –

सामान्यं च विशेषं च गुणान् द्रव्याणि कर्म च।
समवायं च तज्ज्ञात्वा तन्त्रोक्तं विधिमास्थिताः।। च.सू. 11.28

सामान्य + विशेष + गुण + द्रव्य + कर्म + समवाय

पञ्चमहाभूत सिद्धान्त –

महाभूतानि खं वायुरग्निरापः क्षितिस्तथा।
शब्दः स्पर्शश्च रूपञ्च रसो गन्धश्च तद्गुणाः।। च.शा. 1.27
आकाशपवनदहनतोयभूमिषु यथासंख्यमेकोत्तरपरिवृद्धाः
शब्दस्पर्शरूपरसगन्धाः। सु.सू. 42.3

ख (आकाश), वायु, अग्नि, आप (जल) और क्षिति (पृथिवी) ये

2020-7-11 11

पञ्चमहाभूत हैं। इनके क्रमशः गुण शब्द, स्पर्श, रूप, रस एवं गन्ध हैं। ये भूतों के नैसर्गिक गुण हैं। इसके अतिरिक्त पिछले-पिछले भूत के अगले-अगले भूत में अनुप्रवेश (सम्मिलन) से अगले-अगले भूत में पिछले भूतों के गुण भी आ जाते हैं।

रसादि पञ्च पदार्थ सिद्धान्त -

द्रव्ये रसो गुणो वीर्यं विपाकः शक्तिरेव च।
पदार्थाः पञ्च तिष्ठन्ति स्वं स्वं कुर्वन्ति कर्म च।।

भा.प्र. पू मिश्रवर्ग 6.181

रस + गुण + वीर्य + विपाक + शक्ति

षड् रस सिद्धान्त -

रसनेन्द्रिय के विषय को रस कहते हैं। अर्थात् जिस गुण का रसना के द्वारा ग्रहण होता है वह रस कहलाता है। यथा-

रसनार्थो रसः। च.सू. 1

रसनेन्द्रियग्राह्यो योऽर्थः स रसः। शि.

संख्या - इन रसों की संख्या 6 है। यथा -

रसास्तावत् षट्- मधुराम्ललवणकटुतिक्तकषायाः। च.चि. 1

- मधुर - अम्ल - लवण - कटु
- तिक्त - कषाय

सप्त पदार्थ सिद्धान्त -

द्रव्ये रसो गुणो वीर्यं विपाकः शक्तिरेव च।
पदार्थाः पञ्च तिष्ठन्ति स्वं स्वं कुर्वन्ति कर्म च।।

भा.प्र. पू मिश्रवर्ग 6.181

द्रव्य + रस + गुण + वीर्य + विपाक + शक्ति + कर्म

• • •

2020-7-1

2020-7-11

2. द्रव्य

निरुक्ति –

द्रवति गच्छति परिणाममभीक्ष्णमिति द्रव्यम्।

जो सदैव परिणाम को प्राप्त करते हैं या जिनसे परिणाम का ज्ञान होता है वह द्रव्य है।

द्रवति गच्छति संयोगविभागादिगुणानिति वा द्रव्यम्।

वह पदार्थ जो परिणाम को प्राप्त होता है अथवा जो संयोग–विभाग को प्राप्त होता है, द्रव्य है।

लक्षण –

आचार्य चरक मतेन –

यत्राश्रिताः कर्मगुणाः कारणं समवायि यत्।
तद् द्रव्यम्। च.सू. 1.50

जिसमें कर्म और गुण (समवाय सम्बन्ध से) आश्रित हों, जो (कार्य द्रव्य, गुण एवं कर्म) का समवायिकारण हो, वह द्रव्य है।

आचार्य सुश्रुत मतेन –

द्रव्यलक्षणं तु - क्रियागुणवत् समवायिकारणमिति। सु.सू. 40.3

जो क्रियायुक्त, गुणयुक्त तथा समवायि कारण हो, वह द्रव्य है।

महर्षि कणाद मतेन –

क्रियागुणवत् समवायिकारणमिति द्रव्यलक्षणम्। वै.सू.1.1.15

जो क्रियायुक्त, गुणयुक्त तथा समवायिकारण हो उसे द्रव्य कहा जाता है।

आचार्य अन्नम्भट्ट मतेन –

द्रव्यत्वजातिमत्वं गुणवत्वं समवायिकारणत्वं वा द्रव्यसामान्य-लक्षणम्। तर्कसंग्रह व्याख्या

जो द्रव्यत्व जाति वाला, गुणयुक्त अथवा समवायिकारण हो, वह द्रव्य है।

आचार्य प्रियव्रत शर्मा मतेन –

गुणकर्माश्रयभूतं द्रव्यम्। षोडशांगहृदयम् 3.4

द्रव्य का पाञ्चभौतिकत्व –

सर्वं द्रव्यं पाञ्चभौतिकमस्मिन्नर्थे। च.सू. 26.10

इह हि द्रव्यं पञ्चमहाभूतात्मकम्। अ.सं.सू. 17.3

सभी द्रव्य पाञ्चभौतिक होते हैं।

2020-7-11 11:

द्रव्य का औषधत्व –

अनेनोपदेशेन नानौषधिभूतं जगति किंचिद्द्रव्यमुपलभ्यते तां तां युक्तिमर्थं च तं तमभिप्रेत्य।। च.सू. 26.12

अनेन निदर्शनेन नानौषधीभूतं जगति किञ्चिद्द्रव्यमस्तीति। च.सू. 41.5

द्रव्य प्राधान्य में युक्ति –

आचार्य सुश्रुत मतेन –

पाको नास्ति विना वीर्याद्वीर्यं नास्ति विना रसात्।
रसो नास्ति विना द्रव्याद् द्रव्यं श्रेष्ठतमं स्मृतम्।। सु.सू. 40.15

आचार्य वाग्भट मतेन –

द्रव्यमेव रसादीनां श्रेष्ठं, ते हि तदाश्रयाः। अ.हृ.सू. 9.1

षोडशांगहृदयम् मतेन –

गुर्वाद्यास्तु गुणा ये मधुराम्लाद्याः रसास्तथा वीर्यम्।
द्रव्ये स्थिताः विपाको द्रव्यप्रभावश्च कर्माणि।।

षोडशांगहृदयम् 3.3

द्रव्य वर्गीकरण –

कुल द्रव्यों की संख्या 9 हैं (आयुर्वेद/ वैशेषिक/ न्याय मतेन)

खादीन्यात्मा मनः कालो दिशश्च द्रव्यसंग्रहः। च.सू. 1.48

– आकाश – वायु – अग्नि
– जल – पृथ्वी – आत्मा
– मन – काल – दिशा

द्रव्य के दो भेद –

1. कारण द्रव्य (संख्या: 9)
   - मूर्त्त/परमाणु द्रव्य (5: – वायु – तेज – जल – पृथिवी – मन)
   - अमूर्त/विभु द्रव्य (4: – आकाश – काल – दिशा – आत्मा)
2. कार्य द्रव्य (संख्या: असंख्य)

कार्य द्रव्य के भेद –

1. चेतन द्रव्य (सेन्द्रिय)
   - अन्तश्चेतन
     - वनस्पति (फलैर्वनस्पतिः)
     - वानस्पत्य (पुष्पैर्वानस्पत्यः फलैः)
     - औषध (ओषध्यः फलपाकान्ताः)
     - वीरुध (प्रतानैर्वीरुधः)
   - बहिरन्तश्चेतन – JASU
     - जरायुज (तत्र पशुमनुष्यव्यालादयो जरायुजाः)
     - अण्डज (खगसर्पसरीसृपप्रभृतयोऽण्डजाः)

- उद्भिज्ज (इन्द्रगोपादि)

2. अचेतन द्रव्य (निरिन्द्रिय)

- खनिज
  - धातु
  - अधातु
- कृत्रिम

द्रव्य के अन्य भेद –

1. योनि भेद से: 3

1. जांगम द्रव्य / जान्तव द्रव्य
2. औद्भिद् द्रव्य / वानस्पतिक द्रव्य
   - क. वनस्पति
   - ख. वानस्पत्य
   - ग. औषध
   - घ. वीरुध
3. पार्थिव द्रव्य / भौम द्रव्य

2. प्रयोग भेद से: 2 (चक्रपाणि मतेन)

1. औषध द्रव्य
2. आहार द्रव्य

3. रस भेद से: 6

1. मधुरस्कन्ध
2. अम्लस्कन्ध
3. लवणस्कन्ध
4. कटुस्कन्ध
5. तिक्तस्कन्ध
6. कषायस्कन्ध

4. प्रभाव भेद से: 3

1. दोषशामक
2. धातुप्रकापेक
3. स्वास्थ्यानुवर्त्तन

5. आहार द्रव्य भेद से: 12

1. शूकधान्य वर्ग
2. शमीधान्य वर्ग
3. मांस वर्ग
4. शाक वर्ग
5. फल वर्ग
6. हरित वर्ग
7. मद्य वर्ग
8. जल वर्ग
9. गोरस वर्ग
10. इक्षु वर्ग
11. कृतान्न वर्ग
12. आहारोपयोगी वर्ग

6. आहार द्रव्य वर्गीकरण (सुश्रुतानुसार)

1. द्रवद्रव्य वर्ग: 10
   1. जलवर्ग
   2. क्षीरवर्ग
   3. दधिवर्ग
   4. तक्रवर्ग
   5. घृतवर्ग
   6. तैलवर्ग
   7. मधुवर्ग
   8. इक्षुवर्ग
   9. मद्यवर्ग
   10. मूत्रवर्ग
2. अन्नद्रव्य वर्ग: 12
   1. शालिवर्ग
   2. कुधान्यवर्ग
   3. मुद्गादि वर्ग
   4. मांसवर्ग
   5. फलवर्ग
   6. शाकवर्ग
   7. पुष्पवर्ग
   8. कन्दवर्ग
   9. लवणवर्ग
   10. कृतान्नवर्ग
   11. भक्ष्यवर्ग
   12. अनुपानवर्ग
3. कर्मभेद से: 37 गण

द्रव्य उत्पत्ति –

अम्बुयोन्यग्निपवननभसां समवायतः।

तन्निर्वृत्तिर्विशेषश्च।। अ.हृ.सू. 9.2

द्रव्य के सम्पूर्ण अवयवों के विकास में अम्बु (जल) योनि है (जिस प्रकार घड़े के निर्माण में मिट्टी का गोला पानी की सहायता से बनता है) एवं अग्नि, वायु और आकाश सामूहिक रूप से सहयोगी हैं। द्रव्यों की विशेषताओं का भी यही हेतु है (एक द्रव्य दूसरे द्रव्य से भिन्न है)। इस विशेषता का भी हेतु यही पञ्चभूतात्मक समुदाय है।

द्रव्य प्राधान्य –

सन्दर्भ – सु.सू. 40

(1) व्यवस्थितत्व	(2) नित्यत्व	(3) स्वजात्यवस्थान
(4) पञ्चेन्द्रियग्रहण	(5) आश्रयत्व	(6) आरम्भसामर्थ्य
(7) शास्त्रप्रामाण्य	(8) क्रमापेक्षितत्व	(9) एकदेशसाध्यत्व
(10) तरतमयोगा-नुपलब्धि	(11) विकल्प सामर्थ्य	(12) प्रतीघात सामर्थ्य

• • •

3. गुण

निरुक्ति –

गुण्यते आमन्व्यते लोक अनेन इति गुणाः।

जिसके द्वारा लोग द्रव्य की ओर आकर्षित होते हैं वह गुण है।

लक्षण –

समवायी तु निश्चेष्टः कारणं गुणः। च.सू. 1.51

जो समवाय सम्बन्ध वाला हो, चेष्टारहित हो और ग्रहण में कारण हो उसे गुण कहते हैं।

द्रव्याश्रयगुणवान् संयोगविभागेष्वकारणमनपेक्ष इति गुणलक्षणम्। वै द 1.1.16

गुण वह है जो द्रव्य में आश्रित हो (द्रव्याश्रयी), गुणरहित हो, कर्मरहित या कर्म से भिन्न हो और स्वसमान गुणान्तर की उत्पत्ति में कारण हो।

अथ द्रव्याश्रिता ज्ञेयाः निर्गुणाः निष्क्रिया गुणाः। कारिकावलि

द्रव्याश्रिताः गुणाः प्रोक्ताः। षोडशांगहृदयम् 3.4

संख्या –

- आयुर्वेद मतेन: 41
- योगीन्द्रनाथ सेन मतेन: 42/46
- वैशेषिक दर्शन मतेन: 17
- प्रशस्तपाद मतेन: 24
- न्याय दर्शन मतेन: 24
- तर्कसंग्रह मतेन: 24
- सांख्य दर्शन मतेन: 3

आयुर्वेद मतेन गुण वर्गीकरण –

सार्था गुर्वादयो बुद्धिः प्रयत्नान्ताः परादयः।
गुणाः प्रोक्ताः।। च.सू. 1.49

- सार्था / इन्द्रिय / वैशेषिक गुण: 5
- गुर्वादि / सामान्य / शारीर द्रव्य गुण: 20
- अध्यात्म / आत्म गुण: 6
- परादि / सामान्य गुण: 10

वैशेषिक गुण

पर्यायः सार्थ गुण / इन्द्रिय गुण / विशिष्ट गुण

संख्याः 5

1. शब्द 2. स्पर्श 3. रूप 4. रस 5. गन्ध

गुर्वादि गुण

पर्यायः सामान्य गुण / शारीर गुण (कविराज गंगाधरराय मतेन) / द्रव्य गुण

संख्याः 20

1. गुरु	2. लघु	3. शीत	4. उष्ण	5. स्निग्ध
6. रूक्ष	7. मन्द	8. तीक्ष्ण	9. स्थिर	10. सर
11. मृदु	12. कठिन	13. विशद	14. पिच्छिल	15. श्लक्ष्ण
16. खर	17. सूक्ष्म	18. स्थूल	19. सान्द्र	20. द्रव

ये गुण पञ्चमहाभूतों में सामान्यतया रहते हैं, अतः इन्हें 'सामान्य गुण' भी कहते हैं।

1. गुरु / गुरुत्व (heaviness) –

आद्यपतनासमवायिकारणं गुरुत्वम्।

किसी वस्तु के प्रथम पतन का जो असमवायिकारण है, वह गुरुत्व है।

संयोग–वेग–प्रयत्नाभावे सति गुरुत्वात् पतनमिति। तर्कसंग्रह

2. लघु / लघुत्व (lightness) –

लघूनि हि द्रव्याणि वाय्वग्निगुणबहुलानि भवन्ति। च.सू. 5.6

वायु तथा अग्नितत्त्व की अधिकता के रण द्रव्यों में लघु गुण उत्पन्न होता है।

3. शीत / शीतत्व (coldness) –

शरीर में उष्णता कम करनेवाला गुण 'शीत ।

4. उष्ण / उष्णत्व (heatness) –

उष्णो भवति शीतस्य विपरीतश्च पाचनः। भा.प्र.

जिससे शरीर में उष्णता की वृद्धि हो तथा जो शीत गुण के विपरीत हो वह उष्ण गुण है।

5. स्निग्ध / स्निग्धत्व (soothingness) –

पर्याय: स्नेह

संग्रहहेतुर्गुणः स्नेहः।

पिण्डीभाव के हेतु का नाम 'स्नेह' है।

प्रशस्तपाद ने इसे अमूर्त्त और वैशेषिक गुण माना है।

6. रूक्ष / रूक्षत्व (dryness) –

यस्य शोषणे शक्तिः स रूक्षः। हेमाद्रि

जिसमें शोषण करने की शक्ति हो वह रूक्ष गुण है।

रूक्षस्तद्विपरीतः। सु.सू. 46.516

स्निग्ध के विपरीत गुण को रूक्ष कहते हैं।

वैशेषिक मतेन स्नेह का अभाव ही रूक्ष है।

7. मन्द / मन्दत्व (dullness) –

यस्य शमने शक्तिः स मन्दः। हेमाद्रि

जिस गुण के कारण शरीर में शमन कर्म हो वह मन्द है।

चरक मतेन मन्द और तीक्ष्ण गुण सापेक्ष हैं।

सुश्रुत मतेन मन्द और सर गुण सापेक्ष हैं।

8. तीक्ष्ण / तीक्ष्णत्व (sharpness) –

यस्य शोधने शक्तिः स तीक्ष्णः। हेमाद्रि

शोधन का कारण तीक्ष्ण गुण होता है।

चरक मतेन तीक्ष्ण और मन्द गुण सापेक्ष हैं।

सुश्रुत मतेन तीक्ष्ण और मृदु गुण सापेक्ष हैं।

9. स्थिर / स्थिरत्व (immobility) –

यस्य धारणे शक्तिः स स्थिरः। हेमाद्रि

जिस गुण में धारण शक्ति होती है वह स्थिर है।

यह सर गुण का सापेक्ष गुण है।

10. **सर / सरत्व** (mobility) –

यस्य प्रेरणे शक्तिः स सरः। हेमाद्रि

जिस गुण में प्रेरक गुण होता है वह सर है।

सुश्रुत ने इसे जल महाभूत से युक्त माना है।

11. **मृदु / मृदुत्व** (softness) –

यस्य श्लथने शक्तिः स मृदुः। हेमाद्रि

जो शरीर में शिथिलता या कोमलता उत्पन्न करता है वह मृदु है।

चरक मतेन मृदु एवं कठिन सापेक्ष गुण हैं।

सुश्रुत मतेन मृदु एवं तीक्ष्ण सापेक्ष गुण हैं।

12. **कठिन / कठिनत्व** (hardness) –

यः दृढ़ीकरोति स कठिनः। हेमाद्रि

जिसमें दृढ़ता प्रदान करने की शक्ति हो वह कठिन गुण हैं।

मृदु एवं कठिन गुण सापेक्ष हैं।

13. **विशद / विशदत्व** (clearness) –

यस्य क्षालने शक्तिः स विशदः। हेमाद्रि

जिसमें क्षालन शक्ति हो वह विशद गुण है।

विशद और पिच्छिल सापेक्ष गुण हैं।

14. **पिच्छिल / पिच्छिलत्व** (sliminess) –

यस्य लेपने शक्तिः स पिच्छिलः। हेमाद्रि

जिसमें लेपन कर्म करने की शक्ति हो वह पिच्छिल गुण हैं।

15. **श्लक्ष्ण / श्लक्ष्णत्व** (smoothness) –

यस्य रोपणे शक्तिः स श्लक्ष्णः। हेमाद्रि

जिसमें रोपण शक्ति हो वह श्लक्ष्ण गुण है।

चरक मतेन श्लक्ष्ण और खर सापेक्ष गुण हैं।

सुश्रुत मतेन श्लक्ष्ण और कर्कश सापेक्ष गुण हैं।

16. **खर / खरत्व** (roughness) –

यस्य लेखने शक्तिः स खरः। हेमाद्रि

जिसमें लेखन करने की शक्ति हो वह खर गुण है।

चरक ने पृथिवी महाभूत का असाधारण लक्षण 'खर' कहा है।

17. **सूक्ष्म / सूक्ष्मत्व** (minuteness) –

यस्य विवरणे शक्तिः स सूक्ष्मः। हेमाद्रि

जिसमें विवरण शक्ति अर्थात् स्रोतों को खोलने की शक्ति हो वह सूक्ष्म गुण है।

चरक मतेन सूक्ष्म और स्थूल सापेक्ष गुण हैं।

सुश्रुत मतेन सूक्ष्म और आशु सापेक्ष गुण हैं।

18. **स्थूल / स्थूलत्व** (bulkiness) –

यस्य संवरणे शक्तिः स स्थूलः। हेमाद्रि

जो अवरोध उत्पन्न करने वाला है वह स्थूल गुण है।

19. **सान्द्र / सान्द्रत्व** (solidity) –

यस्य प्रसादने शक्तिः स सान्द्रः। हेमाद्रि

जो प्रसादन करने वाला होता है वह सान्द्र गुण है।

सान्द्र एवं द्रव सापेक्ष गुण हैं।

20. **द्रव / द्रवत्व** (fluidity) –

यस्य विलोडने शक्तिः स द्रवः। हेमाद्रि

जिसमें विलोडन अर्थात् व्याप्त होने की शक्ति हो वह द्रव गुण है।

प्रकार: 2 (1) सांसिद्धिक (जल महाभूत में) एवं (2) नैमित्तिक (तेज एवं पृथिवी महाभूत में)

गुर्वादि 20 गुणों का आधुनिक शब्द एवं उनका भौतिक संगठन

गुण	आधुनिक	भौतिक संगठन
गुरु	heaviness	पृथिवी एवं जल
लघु	lightness	वायु, आकाश एवं अग्नि
स्निग्ध	soothingness	जल
रूक्ष	dryness	पृथिवी, अग्नि एवं वायु

गुण	आधुनिक	भौतिक संगठन
द्रव	fluidity	जल
सान्द्र	solidity	पृथिवी
शीत	cold	जल
उष्ण	hot	अग्नि
मन्द	dullness	पृथिवी एवं जल
तीक्ष्ण	sharpness	अग्नि
स्थिर	immobolity	पृथिवी
सर	mobility	जल
मृदु	softness	जल एवं आकाश
कठिन	hardness	पृथिवी
विशद	clearness	पृथिवी, वायु, तेज एवं आकाश
पिच्छिल	sliminess	जल
श्लक्ष्ण	smoothness	अग्नि
खर	roughness	वायु
स्थूल	bulkiness	पृथिवी
सूक्ष्म	minuteness	अग्नि, वायु एवं आकाश

अध्यात्म गुण

पर्याय: अध्यात्म / आत्म गुण / आध्यात्मिक गुण

संख्या: 6

1. इच्छा 2. द्वेष 3. सुख 4. दु:ख
5. प्रयत्न 6. बुद्धि

परादि गुण

पर्याय: सामान्य गुण / चिकित्सा सिद्धयुपाय गुण

संख्या: 10

1. परत्व 2. अपरत्व 3. युक्ति 4. संख्या
5. संयोग 6. विभाग 7. पृथक्त्व 8. परिणाम
9. संस्कार 10. अभ्यास

1. परत्व (Paratva) –

तच्च परत्वं प्रधानत्वम्। चक्र. च.सू. 26.31 पर

परत्व प्रधान को कहते हैं। एक ही प्रकार के अनेक द्रव्यों में जो श्रेष्ठतम है वह पर कहलाता है।

प्रकार: 2 (1) दिक्कृत् एवं (2) कालकृत्

2. अपरत्व (Aparatva) –

अपरत्वं अप्रधानत्वम्। चक्र. च.सू. 26.31 पर

अपर का अर्थ अप्रधान है। एक समान जाति के द्रव्यों में जो निकृष्टतम द्रव्य होता है, वह अपर कहलाता है।

प्रकार: 2 (1) दिक्कृत् एवं (2) कालकृत्

3. युक्ति (Yukti) –

युक्तिश्च योजना या तु युज्यते। च.सू. 26.31

योजना को युक्ति कहते हैं।

4. संख्या (Samkhya) –

संख्या स्याद्गणितम्। च.सू. 26.32

एक, दो, तीन आदि करके जो गणना की जाती है, वह संख्या है।

एकत्वादिव्यवहारहेतुः संख्या। तर्कसंग्रह

एक – दो – तीन आदि संज्ञायें जो व्यवहार का कारण हैं, वे ही संख्या कहलाती हैं।

5. संयोग (Sanyoga) –

योगः सह संयोग उच्यते।

द्रव्याणां द्वन्द्वसर्वैककर्मजोऽनित्य एव च।। च.सू. 26.32

दो या अधिक द्रव्यों का योग अर्थात् साथ में मिलना संयोग कहा जाता है।

प्रकार: 3 (1) द्वन्द्वकर्मज संयोग (2) सर्वकर्मज संयोग एवं (3) एककर्मज संयोग DAS

2020-7-11

6. विभाग (Vibhaga) –

विभागस्तु विभक्तिः स्याद्वियोगो भागशो ग्रहः। च.सू. 26.33

द्रव्यों के विभाजन अथवा संयोग के नाश के कारण को विभाग कहते हैं।

प्रकार: 3 (1) द्वन्द्वकर्मज संयोग (2) सर्वकर्मज संयोग एवं (3) एककर्मज संयोग

7. पृथक्त्व (Prthaktva) –

पृथक्त्वं स्यादसंयोगो वैलक्षण्यमनेकता। च.सू. 26.33

एक द्रव्य को दूसरे द्रव्य से अलग करनेवाले गुण को पृथक्त्व कहते हैं।

प्रकार: 3 (1) असंयोगज (2) वैलक्षण्य एवं (3) अनेकता

8. परिणाम (Parinama) –

परिमाणं पुनर्मानम्। च.सू. 26.34

किसी वस्तु को माप कर या तौल कर जो उसका मान लिया जाता है, वह परिमाण है।

प्रकार: 4 (1) अणु (2) महत् (3) ह्रस्व एवं (4) दीर्घ

• अमरकोष मतेन 3 प्रकार (1) पौतव (2) द्रुवय एवं (3) पाय्य

9. संस्कार (Samskara) –

संस्कारः करणं मतम्। च.सू. 26.34

जिसके कारण द्रव्य के स्वाभाविक गुण में परिवर्तन लाया जाये, वह 'संस्कार' है।

भेद: 3 (वैशेषिक तथा न्याय मतेन) – (1) वेग (2) स्थिति-स्थापक एवं (3) भावना

10. अभ्यास (Abhyasa) –

भावाभ्यसनमभ्यासः शीलनं सततक्रिया। च.सू. 26.34

किसी द्रव्य विशेष का निरन्तर सेवन 'अभ्यास' है।

पर्यायः – अभ्यसन – शीलन – सततक्रिया

गुणों की कार्मुकता –

कर्मभिस्त्वनुमीयन्ते नानाद्रव्याश्रया गुणाः।। सु.सू. 46.514

द्रव्याश्रित गुणों का अनुमान उनके कर्मों के द्वारा होता है।

गुणा य उक्ता द्रव्येषु शरीरेष्वपि ते तथा।
स्थानवृद्धिक्षयास्तस्माद्देहिनां द्रव्यहेतुकाः।। सु.सू. 41.12

गुण प्राधान्य –

(1) रसाभिभव (2) रसानुग्रह (3) विपाककारणत्व
(4) संख्याबाहुल्य (5) प्रयोगबाहुल्य (6) कर्मबाहुल्य
(7) विषयबाहुल्य (8) उपदेश (9) अपदेश
(10) अनुमान

• • •

2020-7-11

4. रस

निरुक्ति –

रसति अहरहर्गच्छतीति रसः।

शरीर का आद्य धातु 'रस' जो कि निरन्तर गतिशील रहता है, उसे 'रस' (धातु) कहते हैं।

रसनात् सर्वधातूनां रस इत्यभिधीयते। र.र.स. 1.76

जो सभी धातुओं को आत्मसात् कर लेता है उसे 'रस' (पारद) कहते हैं।

रसति शरीरे आशु प्रसरति इति रसः।

जो शरीर में प्रयुक्त होने पर शीघ्र फैल जाता है, उसे 'रस' (कल्पना) कहते हैं।

रसनेन्द्रियग्राह्यवस्तुनि रसः।

रसनेन्द्रिय से जिस वस्तु का ग्रहण किया जाता है, उसे 'रस' (इन्द्रियार्थ) कहते हैं।

लक्षण –

रसनार्थो रसः। च.सू. 1.64

रसनार्थस्तु रसः स्याद्। षोडशांगहृदयम् 3.4

रसना (जिह्वा) के अर्थ (ग्राह्य वस्तु या विषय) को 'रस' कहते हैं।

संख्या –

स्वादुरम्लोऽथ लवणः कटुकस्तिक्त एव च।
कषायश्चेति षट्कोऽयं रसानां संग्रहः स्मृतः।। च.सू. 1.65

रस	आधुनिक नाम	बल
1. स्वादु अर्थात् मधुर	Sweet	++++++
2. अम्ल	Sour	+++++
3. लवण	Salty	++++
4. तिक्त	Bitter	+++
5. उष्ण अर्थात् कटु	Pungent	++
6. कषाय	Astringent	+

पाञ्चभौतिकत्व –

रसनार्थो रसस्तस्य द्रव्यमापः क्षितिस्तथा।
निर्वृत्तौ च विशेषे च प्रत्ययाः खादयस्त्रयः।। च.सू. 1.64

- रसना द्वारा ग्राह्य विषय

2020-7-11

- रस की निर्वृत्ति: जल और पृथिवी द्वारा
- रस का विशेष ज्ञान: आकाश, वायु एवं अग्नि द्वारा

तत्र, भूम्यम्बुगुणबाहुल्यान्मधुरः, भूम्यग्निगुणबाहुल्यादम्लः, तोयाग्निगुणबाहुल्याल्लवणः, वाय्वग्निगुणबाहुल्यात् कटुकः, वाय्वाकाशगुणबाहुल्यात्तिक्तः, पृथिव्यनिलगुणबाहुल्यात् कषाय इति।। सु.सू. 42.3

तेषां षण्णां रसानां सोमगुणातिरेकान्मधुरो रसः, पृथिव्यग्निभूयिष्ठत्वादम्लः, सलिलाग्निभूयिष्ठत्वाल्लवणः, वाय्वग्निभूयिष्ठत्वात् कटुकः, वाय्वाकाशातिरिक्तत्वात्तिक्तः, पवनपृथिवीव्यतिरेकात् कषाय इति। च.सू. 26.40

रस	पाञ्चभौतिक संगठन	
	चरक मतेन	सुश्रुत मतेन
मधुर	जल + पृथिवी	जल + पृथिवी
अम्ल	पृथिवी + अग्नि	पृथिवी + अग्नि
लवण	जल + अग्नि	जल + अग्नि
कटु	वायु + अग्नि	वायु + अग्नि
तिक्त	वायु + आकाश	वायु + आकाश
कषाय	वायु + पृथिवी	वायु + पृथिवी

ऋतु प्रभाव –

ऋतु	रसोत्पत्ति
शिशिर (Extreme winter)	तिक्त
वसन्त (Spring)	कषाय
ग्रीष्म (Summer)	कटु
वर्षा (Rainy season)	अम्ल
शरद् (Autumn)	लवण
हेमन्त (Early winter)	मधुर

रस और अनुरस में भेद –

तत्र व्यक्तो रसः स्मृतः।।

अव्यक्तोऽनुरसः किञ्चिदन्ते व्यक्तोऽपि चेष्यते। अ.ह.सू. 9/3-4

द्रव्य में स्थित व्यक्त रस → रस

अन्त में व्यक्त होनेवाला रस → अनुरस

लक्षण –

मधुर रस –

स्नेहनप्रीणनाह्लादनमार्दवैरुपलभ्यते।

मुखस्थो मधुरश्चास्यं वाप्नुवॅल्लिम्पतीव च।। च.सू. 26.74

स्नेहन, प्रीणन, आह्लादन, मार्दव गुणों से मुख में स्थित मधुर रस

मुख के चारों ओर फैलता हुआ मुख को लिप्त कर देता है, वह मधुर रस है।

अम्ल रस –

दन्तहर्षान्मुखास्त्रावात् स्वेदनान्मुखबोधनात्।
विदाहाच्चास्यकण्ठस्य प्राश्यैवाम्लं रसं वदेत्।। च.सू. 26.75

दन्तहर्ष से, मुख स्राव से, स्वेद उत्पन्न करने से, मुख बोधन की शक्ति को उत्पन्न करने से, मुख एवं कण्ठ में विदाह करने से तथा प्राशन से इसे अम्ल रस कहते हैं।

लवण रस –

प्रलीयन् क्लेदविष्यन्दमार्दवं कुरुते मुखे।
यः शीघ्रं लवणो ज्ञेयः स विदाहान्मुखस्य च।। च.सू. 26.76

जो मुख में रखा हुआ शीघ्र ही प्रलीन कर देता है, क्लेदन, विष्यन्दन और मृदुता करता है और मुख में विदाह उत्पन्न करता है – वह लवण रस है।

कटु रस –

संवेजयेद्यो रसानां निपाते तुदतीव च।
विदहन्मुखनासाक्षि संस्रावी स कटुः स्मृतः।। च.सू. 26.77

जो जिह्वा पर रखने मात्र से घबराहट उत्पन्न करे, जिह्वा पर चुभने सी

पीड़ा करे, दाहकारक हो, मुख, नासिक और नेत्र से स्राव उत्पन्न करे वह कटु रस है।

तिक्त रस –

प्रतिहन्ति निपाते यो रसनं स्वदते न च।
स तिक्तो मुखवैशद्यशोषप्रह्लादकारकः।। च.सू. 26.78

जो जिह्वा को कष्ट दे, अन्य रस का ज्ञान न होने दे, मुख विशदता को दूर कर प्रह्लादकारक हो – वह तिक्त रस है।

कषाय रस –

वैशद्यस्तम्भजाड्यैर्यो रसनं योजयेद्रसः।
बध्नातीव च यः कण्ठं कषायः स विकास्यपि।। च.सू. 26.79

जो जिह्वा की विशदता को दूर करे परन्तु जाड्यता भी उत्पन्न करे, कण्ठ बँधन करे और जो विकासी गुण का ह्रासक हो – वह कषाय रस है।

कर्म –

- **मधुर रस –**

तत्र, मधुरो रसः शरीरसात्म्याद्रसरुधिरमांसमेदोस्थिमज्जौजः-शुक्राभिवर्धन आयुष्यः षडिन्द्रियप्रसादनो बलवर्णकरः पित्तविषमारुतघ्नस्तृष्णादाहप्रशमनस्त्वच्यः केश्यः कण्ठ्यो बल्यः प्रीणनो जीवनस्तर्पणो बृंहणः स्थैर्यकरः क्षीणक्षत-

2020-7-11

सन्धानकरो घ्राणमुखकण्ठौष्ठजिह्वाप्रह्लादनो दाहमूर्च्छाप्रशमनः षट्पदपिपीलिकानामिष्टतमः स्निग्धः शीतो गुरुश्च।

च.सू. 26.43(1)

- अम्ल रस –

अम्लो रसो भक्तं रोचयति, अग्निं दीपयति, देहं बृंहयति ऊर्जयति, मनो बोधयति, इन्द्रियाणि दृढीकरोति, बलं वर्धयति, वातमनुलोमयति, हृदयं तर्पयति, आस्यमास्रावयति, भुक्तमपकर्षयति, क्लेदयति जरयति, प्रीणयति, लघुरुष्णः स्निग्धश्च। च.सू. 26.43(2)

- लवण रस –

लवणो रसः पाचनः क्लेदनो दीपनश्छ्यावनश्छेदनो भेदनस्तीक्ष्णः सरो विकास्यधःस्रंस्यवकाशकरो वातहरः स्तम्भबन्धसंघातविधमनः सर्वरसप्रत्यनीकभूतः, आस्यमास्रावयति, कफं विष्यन्दयति, मार्गान् विशोधयति, सर्वशरीरावयवान् मृदूकरोति, रोचयत्याहारम्, आहारयोगी, नात्यर्थं गुरुः स्निग्ध उष्णश्च। च.सू. 26.43(3)

- कटु रस –

कटुको रसो वक्त्रं शोधयति, अग्निं दीपयति, भुक्तं शोषयति, घ्राणमास्रावयति, चक्षुर्विरेचयति, स्फुटीकरोतीन्द्रियाणि,

अलसकश्वयथूपचयोदर्दाभिष्यन्दस्नेहस्वेदक्लेदमलानुपहन्ति, रोचयत्यशनं, कण्डूर्विनाशयति, व्रणानवसादयति, क्रिमीन् हिनस्ति, मांसं विलिखति, शोणितसंघातं भिनत्ति, बन्धांश्छिनत्ति, मार्गान् विवृणोति, श्लेष्माणं शमयति, लघुरुष्णो रूक्षश्च। च.सू. 26.43(4)

- तिक्त रस –

तिक्तो रसः स्वयमरोचिष्णुरप्यरोचकघ्नो विषघ्नः क्रिमिघ्नो मूर्च्छादाहकण्डूकुष्ठतृष्णाप्रशमनस्त्वङ्मांसयोः स्थिरीकरणो ज्वरघ्नो दीपनः पाचनः स्तन्यशोधनो लेखनः क्लेदमेदोवसामज्जलसीकापूयस्वेदमूत्रपुरीषपित्तश्लेष्मोपशोषणो रूक्षः शीतो लघुश्च। च.सू. 26.43(5)

- कषाय रस –

कषायो रसः संशमनः संग्राही सन्धानकरः पीडनो रोपणः शोषणः स्तम्भनः श्लेष्मरक्तपित्तप्रशमनः शरीरक्लेदस्योपयोक्ता रूक्षः शीतोऽलघुश्च। च.सू. 26.43(6)

रस	कर्म
मधुर रस	– आजन्म सात्म्य होने से धातुओं को प्रबल बल देना – बाल, वृद्ध, क्षत, क्षीण, वर्ण, केश और इन्द्रियाँ तथा ओज के लिये प्रशस्त

2020-7-11

रस	कर्म
	– बृंहण – कण्ठ्य – स्तन्यवर्धक – सन्धानकृत् – गुरु – आयुवर्धक – जीवन – स्निग्ध – पित्त, वायु और विष को नष्ट करने वाला
अम्ल रस	– अग्निदीपक – स्निग्ध – हृद्य – पाचन – रोचन – उष्णवीर्य – शीत स्पर्श वाला – प्रीणन – क्लेदन – लघु – कफ, रक्त एवं पित्तवर्धक – मूढ वात का अनुलोमन
लवण रस	– स्तम्भ, संघात और बन्ध का नाशक – अग्निवर्धक – स्नेहन – स्वेदन – तीक्ष्ण – रोचन – छेदन – भेदन
तिक्त रस	– स्वयं ही अरोचक होने पर भी अरुचिनाशक – कृमि – तृष्णा – विष – कुष्ठ – मूर्च्छा – ज्वर – उत्क्लेश – दाह और पित्तकफ नाशक – क्लेद, मेद, वसा, मज्जा, मल, मूत्र का शोषक – लघु – मेध्य – शीत – रूक्ष – स्तन्यशोधक – कण्ठशोधक
कटु रस	– गलरोग – उदर्द – कुष्ठ – अलसक – शोफ नाशक – व्रणावसादन नाशक

रस	कर्म
	– स्नेह, मेद और क्लेद उपशोषक – दीपन – पाचन – रुचिकर – शोधन – अन्न शोषक – अवरोधों को दूर करना – स्रोतों को फैलाना – कफघ्न
कषाय रस	– पित्तकफहर – गुरु – रक्तशोधक – पीडन – रोपण – शीत – क्लेद और मेद का शोषक – आमस्तम्भ – ग्राही – रुक्ष – त्वचा को अतिनिर्मल करने वाला

रसों की तुलनात्मक गुणवत्ता –

रस	शीतता एवं औष्ण्य	गुरुता एवं लघुता	रूक्षता एवं स्निग्धता
मधुर	शीततम	गुरुतम	स्निग्धतम
अम्ल	उष्णतर	लघु	स्निग्धतर
लवण	उष्णतम	गुरु	स्निग्ध
कटु	उष्ण	लघुतर	रूक्षतर
तिक्त	शीत	लघुतम	रूक्ष
कषाय	शीततर	गुरुतर	रूक्षतम

रसों का अधोवात–मूत्रादि मलों पर प्रभाव –

मधुर – अम्ल – लवण	वात – मूत्र – पुरीष निकालने में सुखदायक
कटु – तिक्त – कषाय	वात – मूत्र – पुरीष निकालने में दुःखदायक

2020-7-11 11:51

षड्रस द्वारा दोष कोपन एवं शमन –

स्वाद्वम्ललवणा वायुं, कषायस्वादुतिक्तकाः।
जयन्ति पित्तं, श्लेष्माणं कषायकटुतिक्तकाः।।
(कट्वम्ललवणाः पित्तं, स्वाद्वम्ललवणाः कफम्।
कटुतिक्तकषायाश्च कोपयन्ति समीरणम्।।1।।) च.सू. 1.66(1)

रस	वात दोष पर प्रभाव	पित्त दोष पर प्रभाव	कफ दोष पर प्रभाव
मधुर (Sweet)	क्षय	क्षय	वृद्धि
अम्ल (Sour)	क्षय	वृद्धि	वृद्धि
लवण (Salty)	क्षय	वृद्धि	वृद्धि
तिक्त (Bitter)	वृद्धि	क्षय	क्षय
कटु (Pungent)	वृद्धि	वृद्धि	क्षय
कषाय (Astringent)	वृद्धि	क्षय	क्षय

रस अतियोगजन्य लक्षण एवं विकार –

सन्दर्भ – अ.ह.सूत्रस्थान अध्याय 9

रस	अतियोगजन्य लक्षण एवं विकार
मधुर रस	– मेदोज रोग – श्लेष्मज रोग – स्थौल्य – अग्निमान्द्य – संन्यास – प्रमेह – गलगण्ड – अर्बुदादि विकार
अम्ल रस	– शैथिल्य – तिमिर – भ्रम – कण्डू – पाण्डुरोग – वीसर्प – शोफ – विस्फोट – तृष्णा – ज्वर

रस	अतियोगजन्य लक्षण एवं विकार
लवण रस	– वातरक्त – खालित्य – पलित – वलि पड़ना – तृष्णा – कुष्ठ – विष – विसर्प – बल का ह्रास
तिक्त रस	– धातुक्षय – वातव्याधि
कटु रस	– तृष्णा – शुक्रक्षय – बलक्षय – मूर्च्छा – सिरादि का संकोच – कम्प – कटि एवं पृष्ठादि में व्यथा
कषाय रस	– विष्टम्भ – आध्मान – हृत्प्रदेश में वेदना – तृष्णा – काश्र्य – पौरुषभ्रंश – स्रोतोरोध – मलग्रह

रसोपलब्धि में हेतु –

प्रत्क्षतोऽनुमानादुपदेशतश्च रसानामुपलब्धिः। र.वै. 3.108

प्रत्यक्ष, अनुमान एवं उपदेश प्रमाण से रसों का ज्ञान होता है।

आहार में रस –

नित्यं सर्वरसाभ्यासः स्वस्वाधिक्यमृतावृतौ।। अ.ह.सू. 3/57
पूर्वं मधुरमश्नीयान्मध्येऽम्ललवणौ रसौ।।
पश्चाच्छेषान् रसान् वैद्यो भोजनेष्ववचारयेत्। सु.सू. 46.460-461

– सर्वप्रथम मधुर रसात्मक द्रव्यों का सेवन।
– मध्य में अम्ल एवं लवण रसात्मक द्रव्यों का सेवन।
– अन्त में कटु-तिक्त-कषाय रसात्मक द्रव्यों का सेवन।

2020-7-11

औषधि में रस -

दोषावस्था	प्रयोग काल	प्रयोक्तव्य रस	रस प्रयोग का आधार
वातज	आदि	लवण	• प्रक्लेदि गुण द्वारा वायु के विबन्ध का शमन • उष्ण गुण द्वारा वायु की शीतता का शमन • गुरु गुण द्वारा वायु की लघुता का शमन
	मध्य	अम्ल	• तीक्ष्ण गुण द्वारा अवरुद्ध स्रोतों को खोलना • उष्ण गुण द्वारा विमार्गगामी वायु का अनुलोमन
	अन्त	मधुर	• गुरु गुण द्वारा वायु की लघुता का शमन • पिच्छिल गुण द्वारा वायु की विशदता का शमन • स्निग्ध गुण द्वारा वायु के रूक्ष गुण का शमन
पित्तज	आदि	तिक्त	• आमपित्त का पाचन

दोषावस्था	प्रयोग काल	प्रयोक्तव्य रस	रस प्रयोग का आधार
	मध्य	मधुर	• शीत-गुरु-स्निग्ध एवं माधुर्य द्वारा पित्त का शमन
	अन्त	कषाय	• रूक्षता एवं शोषण धर्म द्वारा पित्त के द्रवत्व का नाश
कफज	आदि	कटु	• कफ की पिच्छिलता एवं गौरवता का नाश
	मध्य	तिक्त	• मुखगत माधुर्य का नाश कर कफ का शोषण
	अन्त	कषाय	• कफ के स्नेहांश का नाश एवं कफोत्पत्ति का अन्त

रस भेद – 63

एक रस – 6

द्विक रस – 15

त्रिक रस – 20

चतुष्क रस – 15

पञ्चक रस – 6

षट्क रस – 1

रस प्राधान्य –

(1) आगमात् (2) उपदेशात् (3) अनुमानात्
(4) आप्तवचन (5) रसेषु गुणसंज्ञा

• • •

5. विपाक

निरुक्ति –

विशिष्टः जरणनिष्ठाकाले रसविशेषस्य पाकः
प्रादुर्भावः विपाकः।

पाचनक्रिया के अन्त में उत्पन्न विशिष्ट रस को 'विपाक' कहते हैं।

पर्याय – निष्ठापाक

लक्षण –

जाठरेणाग्निना योगाद्यदुदेति रसान्तरम्।
रसानां परिणामान्ते स विपाक इति स्मृतः।। अ.हृ.सू. 9/20

रसयुक्त द्रव्यों का जठराग्नि द्वारा पाक हो जाने के पश्चात् जो रसान्तर (अन्य रस) उत्पन्न होता है, वह **'विपाक'** कहलाता है।

विपाकः कर्मनिष्ठया। च.सू. 26.66

द्रव्यों का जो चरम कर्म शरीर पर परिलक्षित होता है, वह 'विपाक' कहलाता है।

विपाक इति पाकः पचनं द्रव्याणां स्वरूपरसयोः परावृत्तिः। सा च स्वरूपान्तरत्वेन रसान्तरत्वेन परिणतिः, तस्या विशेषो विपाकः। कविराज गंगाधर राय

परिणामलक्षणो विपाकः। रसवैशेषिक

परिणाम या रूपान्तर होना या जारण होना विपाक का लक्षण है।

संख्या –

आचार्य चरक एवं वाग्भट मतेन – 3

स्वादुः पटुश्च मधुरमम्लोऽम्लं पच्यते रसः।
तिक्तोषणकषायाणां विपाकः प्रायशः कटुः।। अ.ह.सू. 9/21

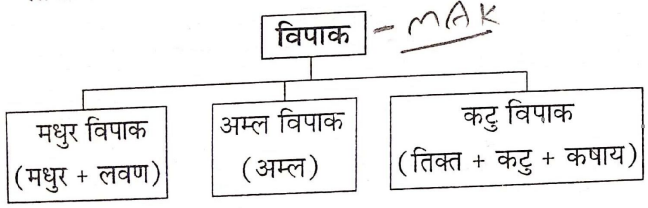

आचार्य सुश्रुत मतेन – 2

आगमे हि द्विविध एव पाको मधुरः कटुकश्च।
तयोर्मधुराख्यो गुरुः, कटुकाख्यो लघुरिति।
तत्र पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशानां द्वैविध्यं भवति गुण-साधर्म्यादगुरुता लघुता च; पृथिव्यापश्च गुर्व्यः, शेषाणि लघूनि; तस्माद्विविध एव पाक इति।। सु.सू. 40.10

आगम प्रमाण एवं पञ्चमहाभूतों के आधार पर मधुर एवं कटु भेद से विकार दो प्रकार होता है। इनमें मधुर विपाक गुरु तथा कटु विपाक लघु होता है। पञ्चमहाभूतों के गुणों की साम्यता से गुरु या लघु विपाक होता है अर्थात् पृथिवी और जल महाभूत के कारण गुरु विपाक एवं शेष तीन (अग्नि, आकाश, वायु) के कारण लघु विपाक होता है।

विपाक के कर्म –

मधुर विपाक –

मधुरः सृष्टविण्मूत्रो विपाकः कफशुक्रलः।। च.सू. 26.61

अम्ल विपाक –

पित्तकृत् सृष्टविण्मूत्रः पाकोऽम्लः शुक्रनाशनः। च.सू. 26.62

कटु विपाक –

शुक्रहा बद्धविण्मूत्रो विपाको वातलः कटुः। च.सू. 26.61

विपाक	शुक्र पर परिणाम	मल पर परिणाम	दोष पर	स्वभाव
मधुर विपाक	शुक्रल	सृष्ट विट् मूत्र	कफवर्धक	गुरु
अम्ल विपाक	शुक्रनाश	सृष्ट विट् मूत्र	पित्तकृत्	लघु
कटु विपाक	शुक्रनाश	बद्ध विट् मूत्र	वातल	लघु

विपाकों की गौरवता एवं लाघवता –

तेषां गुरुः स्यान्मधुरः कटुकाम्लावतोऽन्यथा।। च.सू. 26.62

विपाक	स्वभाव
मधुर विपाक	गुरु
अम्ल विपाक	लघु
कटु विपाक	लघु

विपाक प्राधान्य –

(1) तन्निमित्तत्वात् प्रशमनवर्धनयोः।

(2) भातूपदेहात्।

(3) विपाकापेक्षत्वादितरेषां, प्रायशो विपाकसाद्गुण्ये च गुणवतामप्यदोषात्।

(4) शास्त्रप्रामाण्यात्।

(5) तदभावे चिकित्साभावात्।

(6) आरोग्यप्रयोजनत्वादायुर्वेदस्य, सम्यग्विपाके तदुपलब्धेः।

• • •

6. वीर्य

निरुक्ति –

वीरयते विक्रान्तः कर्मसमर्थो भवति अनेन इति वीर्यम्।

जिसके द्वारा द्रव्य कर्मसम्पादन में समर्थ होता है, उसे 'वीर्य' कहते हैं।

लक्षण –

येन कुर्वन्ति, तद्वीर्यम्। च.सू. 26.13

जिससे कार्य करते हैं वह वीर्य है।

वीर्यं तु क्रियते येन या क्रिया। च.सू. 26.65

जिससे जो क्रिया की जाती है, उसे उसका वीर्य कहते हैं। क्योंकि बिना वीर्य के किसी कार्य का सम्पादन नहीं किया जा सकता, अतः जितनी क्रियायें हैं, वे सब वीर्य से ही की जाती हैं।

कर्मलक्षणं वीर्यम्। रसवैशेषिक 11।169

कर्म लक्षण ही 'वीर्य' है।

वीर्यं शक्तिर्येन द्रव्यं कुरुते कर्म सर्वदा।
नावीर्यं कुरुते किञ्चित् सर्वा वीर्यकृताः क्रियाः।।

प्रि.नि.द्रव्यादिवर्ग.39

वीर्य वह शक्ति है जिससे द्रव्य अपना कर्म करने में समर्थ होता है। बिना वीर्य के कोई द्रव्य कर्म नहीं कर सकता क्योंकि सभी कर्म वीर्य से ही सम्पन्न होते हैं।

द्विविध वीर्य –

उष्णशीतगुणोत्कर्षात्तत्र वीर्यं द्विधा स्मृतम्। अ.ह.सू. 1/17

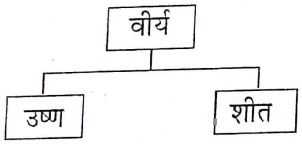

द्विविध वीर्य के कर्म –

तत्रोष्णं भ्रमतृड्ग्लानिस्वेददाहाशुपाकिताः।।
शमं च वातकफयोः करोति, शिशिरं पुनः।
ह्लादनं जीवनं स्तम्भं प्रसादं रक्तपित्तयोः।। अ.ह.सू. 9.18–19

उष्ण वीर्य के कर्म	शीत वीर्य के कर्म
– भ्रम	– ह्लादन
– तृड्	– जीवन
– ग्लानि	– स्तम्भ
– स्वेद	– रक्त एवं पित्त प्रसादन
– दाह	
– आशुपाक	
– वातकफशमन	

अष्टविध वीर्य –

संख्या	वीर्य	भूतोत्कर्ष
1	शीत	पृथिवी + जल
2	उष्ण	अग्नि
3	स्निग्ध	जल
4	रूक्ष	वायु
5	गुरु	पृथिवी + जल
6	लघु	अग्नि + वायु + आकाश
7	मृदु	जल + आकाश
8	तीक्ष्ण	अग्नि

आचार्य सुश्रुत ने सूत्रस्थान के 41वें अध्याय में गुरु एवं लघु के स्थान पर पिच्छिल और विशद को वीर्य कहा है। पिच्छिल वीर्य में जल तथा विशद वीर्य में पृथिवी + वायु की प्रधानता होती है।

पञ्चदश वीर्य –

आचार्य निमि मतेन – 15

वीर्य की उपलब्धि में हेतु –

वीर्यं यावदधीवासान्निपाताच्चोपलभ्यते।। च.सू. 26.66

द्रव्यगत वीर्य का ज्ञान शरीर के साथ सम्बन्ध (निपात) होने से लेकर जब तक वह शरीर के अन्दर रहता है (अधिवास), तब तक शरीर पर होने वाली उसकी क्रियाओं द्वारा होता है।

वीर्य की प्रधानता –

सन्दर्भ – रसवैशेषिक

(1) आप्तोपदेश

(2) तुल्यरसगुणेषु विशेषात्

(3) कर्मकारणात्

(4) वीर्यप्राधान्याद् द्रव्याणाम्

• • •

7. प्रभाव

निरुक्ति –

प्रभवति सामर्थ्यविशिष्टं भवति द्रव्यमनेन इति प्रभावः।

जिसके कारण द्रव्य में विशिष्ट सामर्थ्य उत्पन्न होता है, उसे 'प्रभाव' कहते हैं।

लक्षण –

रसवीर्यविपाकानां सामान्यं यत्र लक्ष्यते।

विशेषः कर्मणां चैव प्रभावस्तस्य स स्मृतः।। च.सू. 26.67

..... प्रभावोऽचिन्त्य उच्यते।। च.सू. 26.70

दो या दो से अधिक द्रव्यों के रसादि में अनुरूपता अर्थात् समानता रहते हुए भी जहाँ कर्मों की विशेषता देखी जाती है – वह कर्म प्रभावजन्य होता है।

रसादिसाम्ये यत् कर्म विशिष्टं तत् प्रभावजम्। अ.ह.सू. 9.26

2020-7-11 11:52

रस एवं विपाक आदि की समानता होने पर भी उन उन द्रव्यों का जो प्रमुख कर्म होता है उसमें प्रभाव ही कारण है।

प्रभावः स विशिष्टा या कर्मशक्तिः स्वभावजा।
शिरीषस्य विषघ्नत्वं यथा हृद्यत्वमर्जुने।। प्रि.नि.द्रव्यादिवर्ग.47

द्रव्य की स्वाभाविक विशिष्ट शक्ति को 'प्रभाव' कहते हैं। यथा - शिरीष का विषघ्न और अर्जुन का हृद्य प्रभाव आदि।

पर्याय - - विशिष्ट शक्ति - अचिन्त्य शक्ति - अमीमांस्य शक्ति
- अतर्क्य शक्ति - अनवधारणीय

उदाहरण -

कटुकः कटुकः पाके वीर्योष्णश्चित्रको मतः।
तद्वद्दन्ती प्रभावात्तु विरेचयति मानवम्।।
विषं विषघ्नमुक्तं यत् प्रभावस्तत्र कारणम्।
ऊर्ध्वानुलोमिकं यच्च तत् प्रभावप्रभावितम्।।
मणीनां धारणीयानां कर्म यद्विविधात्मकम्।
तत् प्रभावकृतं तेषां प्रभावोऽचिन्त्य उच्यते।। च.सू. 26.68-70

- चित्रक एवं दन्ती के समान गुणयुक्त होने पर भी दन्ती की विरेचन कार्मुकता
- विषों की विषघ्नता

- वमन द्रव्यों की ऊर्ध्व गति
- विरेचन द्रव्यों की अधः गति
- मणी आदि के कर्म आदि।

मणिमन्त्रादियोगानां कर्माचिन्त्यञ्च यत् पुनः।
तत् सर्वं कर्मवैशेष्यात् प्रभावे विनिवेश्यते।। प्रि.नि.द्रव्यादिवर्ग.48

प्रभावजन्य कर्मों का वर्गीकरण -

1. औषधीय कर्म
2. अगदीय कर्म
3. रक्षोघ्न कर्म
4. मानस कर्म
5. भौतिक कर्म

समान-प्रत्यारब्ध एवं विचित्र-प्रत्यारब्ध द्रव्य

समान-प्रत्यारब्ध द्रव्य - जिन द्रव्य विशेषों में द्रव्य और तदाश्रित रसादि का भौतिक संगठन समान हो उन्हें 'समान-प्रत्यारब्ध द्रव्य' कहते हैं। इन द्रव्यों में रसादि के अनुकूल ही कर्म होते हैं।

विचित्र-प्रत्यारब्ध द्रव्य - जिन द्रव्य विशेषों में द्रव्य और तदाश्रित रसादि का भौतिक संगठन भिन्न-भिन्न हो उन्हें 'विचित्र-प्रत्यारब्ध द्रव्य' कहते हैं। इन द्रव्यों में रसादि से भिन्न प्रकार के कर्म होते हैं। यथा -

इति सामान्यतः कर्म द्रव्यादीनां, पुनश्च तत्।।

विचित्रप्रत्ययारब्धद्रव्यभेदेन भिद्यते। अ.हृ.सू. 9.27–28

उदाहरण –

स्वादुर्गुरुश्च गोधूमो वातजिद्वातकृद्यवः।।

उष्णा मत्स्याः पयः शीतं कटुः सिंहो न शूकरः।।

अ.हृ.सू. 9.28–28½

प्रभाव का प्राधान्य –

सन्दर्भ – रसवैशेषिक 1.132–140

(1) अचिन्त्यत्वात् (2) दैवीप्रतीघातात्

(3) विषप्रतीघातात् (4) दर्शनाच्छ्रवणात्

(5) तुल्यरसगुणेषु विशेषात् (6) दर्शनाच्चाद्भुतादीनां कर्मणाम्

(7) आगमात्

• • •

स्वरूप – द्रव्यों को शरीर पर जो वमन आदि क्रिया होती है। उसे कर्म कहते हैं।

8. कर्म

निरुक्ति –

क्रियते इति कर्म।

जो किया जाय उसे 'कर्म' कहते हैं।

लक्षण –

संयोगे च विभागे च कारणं द्रव्यमाश्रितम्।

कर्तव्यस्य क्रिया कर्म कर्म नान्यदपेक्षते।। च.सू. 1.52

जो संयोग और विभाग में अनपेक्ष (स्वतन्त्र) कारण हो तथा द्रव्य में आश्रित हो उसे कर्म कहते हैं। कर्त्तव्य की क्रिया को कर्म कहते हैं। पूर्वोक्त संयोग और विभाग के लिए कर्म किसी अन्य साधन की अपेक्षा नहीं रखता।

प्रयत्नादि कर्म चेष्टितमुच्यते। च.सू. 1/49

प्रयत्न आदि चेष्टाओं को कर्म कहा जाता है।

एकद्रव्यमगुणं संयोग विभागेष्वनपेक्षकारणमिति कर्मलक्षणम्।
वै द 1/17

एक द्रव्य के आश्रित रहनेवाला, अगुण (गुण रहित) तथा संयोग – विभाग का निरपेक्ष (अन्य की अपेक्षा न रखते वाला) कारण कर्म कहलाता है।

कर्मवाङ्मनः शरीरप्रवृत्तिः। च.सू. 11/39

वाणी, मन और शरीर की चेष्टाओं को कर्म कहते हैं।

कर्म तत् क्रियते द्रव्यैर्यत् संयोगविभागकृत्।
प्राणिनामपि यत्नादि कर्म चेष्टितमुच्यते।। प्रि.नि.द्रव्यादिवर्ग.53

कर्म उसे कहते है – जो द्रव्यों द्वारा संयोग एवं विभाग के रूप में किया जाता है। प्राणियों की प्रयत्नमूलक चेष्टा को 'कर्म' कहते हैं।

पर्याय –

प्रवृत्तिस्तु खलु चेष्टा कार्यार्था, सैव क्रिया, कर्म, यत्नः कार्यसमारम्भश्च।। च वि 8.77

– चेष्टा – क्रिया – कर्म – यत्न – कार्य समारम्भ

कर्म के विषय में षट् विचारणीय विषय –

यत् कुर्वन्ति, तत् कर्म; येन कुर्वन्ति, तद्वीर्यं; यत्र कुर्वन्ति, तदधिकरणं; यदा कुर्वन्ति, स कालः; यथा कुर्वन्ति, स उपायः; यत् साध्यन्ति, तत् फलम्।। च.सू. 26.13

(1) कर्म (2) वीर्य (3) अधिकरण
(4) काल (5) उपाय (6) फल

वर्गीकरण –

प्रयोग भेद से – 3

(1) स्थानिक कर्म (local action)
(2) सार्वदैहिक कर्म (generalized/ systemic action)
(3) विशिष्ट कर्म (specific action)

सार्वदैहिक कर्म (generalized/ systemic action) का वर्गीकरण–

नाड़ीसंस्थान –

(1) मेध्य (2) मदकारी (3) संज्ञास्थापन
(4) निद्राजनन (5) निद्राशमन (6) वेदनास्थापन
(7) आक्षेपजनन (8) आक्षेपशमन (9) ज्वरघ्न
(10) विदाही

रक्तवह संस्थान –

(1) हृदय (2) हृदयोत्तेजक (3) हृदयावसादक
(4) रक्तभारवर्द्धक (5) रक्तभारशामक (6) रक्तस्तम्भक

लसीका संस्थान –

(1) शोथहर (2) शोथजनन

2020-7-1

श्वसन संस्थान –

(1) श्वसन केन्द्रोत्तेजक (2) श्वसन केन्द्रावसादक
(3) श्वसनोत्तेजक (4) छेदन (5) कासहर
(6) श्वासहर (7) हिक्कानिग्रहण (8) कण्ठ्य
(9) श्लेष्मपूतिहर

पाचन संस्थान –

(1) लालाप्रसेकजनन (2) लालाप्रसेकशमन
(3) तृष्णानिग्रहण (4) मुखदौर्गन्ध्यनाशक
(5) वैशद्यकारक (6) तृप्तिघ्न (7) रोचन
(8) दीपन (9) पाचन (10) विदाही
(11) अनुलोमन (12) वमन (13) वमनोपग
(14) छर्दिनिग्रहण (15) पुरीषसंग्रहणीय – (अ) ग्राही एवं (ब) स्तम्भन
(16) पुरीषविरजनिय (17) शूलप्रशमन
(18) आस्थापन (19) अनुवासन (20) संशोधन
(21) कृमिघ्न (22) पित्तविरेचक (23) अर्शोघ्न
(24) प्लीहघ्न

प्रजनन संस्थान –

स्त्री प्रजजन संस्थान –

(1) प्रजास्थापन (2) आर्तवजनन (3) स्तन्यजनन
(4) स्तन्यशोधन

पुरुष प्रजनन संस्थान –(1) वाजीकरण

(अ) शुक्रजनन
(ब) शुक्रस्तम्भन
(क) शुक्ररेचन
(ड) शुक्रशोधन

मूत्रवह संस्थान –

(1) मूत्रविरेचनीय (2) मूत्रविरजनीय (3) मूत्राश्मरीघ्न
(4) मूत्रसंग्रहणीय (5) मूत्रविशोधन

ज्ञानेन्द्रिय –

चक्षुरिन्द्रिय – (1) चक्षुष्य
श्रोत्रेन्द्रिय – (1) कर्ण्य
घ्राणेन्द्रिय – (1) नस्य)
रसनेन्द्रिय – (1) रस्य
स्पर्शनेन्द्रिय – (1) त्वच्य (2) स्वेदजनन (3) विदाही
(4) स्नेह (5) वर्ण्य (6) कण्डूघ्न
(7) कुष्ठघ्न (8) उदर्दप्रशमन

विविध कर्मभेद

कर्म	परिभाषा	उदाहरण
दीपन	पचेन्नामं वह्निकृच्च दीपनं तद्यथा मिशिः। शा पू 4.1 दीपयत्यनलं यद्धि दीपनं रामठं यथा। प्रि.नि.द्रव्यादिवर्ग. 54	– मिशि – रामठ
पाचन	पचत्यामं न वह्निं च कुर्याद्यत्तद्धि पाचनम्।। नागकेशरवद्विद्याच्चित्रो दीपनपाचनः। शा पू 4.1–2 यदपक्वं पाचयति पाचनं बीजपूरकम्। प्रि.नि.द्रव्यादिवर्ग.54	– नागकेशर – बीजपूरक
संशोधन	स्थानाद्बहिर्नयेदूर्ध्वमधो वा मलसंचयम्।। देहसंशोधनं तत्स्याद्देवदालीफलं यथा। शा पू 4.8–9 मलान्निरस्य दोषादीन् देहं शोधयतीह यत्। द्रव्यं तच्छोधनं ज्ञेयं मदनं त्रिवृता यथा।। प्रि.नि.द्रव्यादिवर्ग.63	– देवदाली फल – मदन – त्रिवृत्
संशमन	न शोधयति न द्वेष्टि समान् दोषांस्तथोद्धतान्।।	– अमृता

कर्म	परिभाषा	उदाहरण
	समीकरोति विषमाञ्शमनं तद्यथाऽमृता। शा पू 4.2–3 शमयत् कुपितं दोषं यदा संशोधनं विना। निवारयति वैषम्यं शमनं तद्यथाऽमृता।। प्रि.नि.द्रव्यादिवर्ग.62	
अनुलोमन	कृत्वा पाकं मलानां यद्धित्त्वा बन्धमधो नयेत्।। तच्चानुलोमनं ज्ञेयं यथा प्रोक्ता हरीतकी। शा पू 4.3–4 अपानं निजमार्गेषु प्रेरयन्मारुतं मलान्। बहिर्मुखान् यथा शुण्ठी कुरुते तदनु- लोमनम्।। प्रि.नि.द्रव्यादिवर्ग.56	– हरीतकी – शुण्ठी
स्रंसन	पक्तव्यं यदपक्त्वैव श्लिष्टं कोष्ठे मलादिकम्।। नयत्यधः स्रंसनं तद्यथा स्यात्कृतमालकः।। शा पू 4.4–5	– कृतमालक
भेदन	मलादिकमबद्धं च बद्धं वा पिण्डितं मलैः।। भित्त्वाद्यः पातयति तद्भेदनं कटुकी यथा। शा पू 4.5–6	– चित्रक

2020-7-

कर्म	परिभाषा	उदाहरण
	भिनत्ति पिण्डितं गुल्मं पुरीषनिचयन्तथा। शक्त्या तद् भेदनं ज्ञेयं चित्रकः कटुका यथा।। प्रि.नि.द्रव्यादिवर्ग.57	– कटुका
रेचन	विपक्वं यदपक्वं वा मलादि द्रवतां नयेत्।। रेचयत्यपि तज्ज्ञेयं रेचनं त्रिवृता यथा। शा पू 4.6–7	– त्रिवृत्
छेदन	श्लिष्टान्कफादिकान्दोषानुन्मूलयति यद्बलात्।।	– क्षार
	छेदनं तद्यथा क्षारा मरिचानि शिलाजतु। शा पू 4.9–10	– शिलाजत्तु
	श्लिष्टान् कफादिकान् दोषांस्तैक्ष्ण्याद् विच्छिद्य तान् द्रुतम्।	– यवक्षार
	निःसारयेच्छेदनं तद् यवक्षारो यथोषणम्।। प्रि.नि.द्रव्यादिवर्ग.68	– मरिच
लेखन	धातून्मलान्ता देहस्य विशोष्योल्लेखयेच्च यत्।।	– मधु
	लेखनं तद्यथा क्षौद्रं नीरमुष्णं वचा यवाः। शा पू 4.10–11	– उष्ण जल

कर्म	परिभाषा	उदाहरण
	रौक्ष्याच्छरीरधातून् यच्छोषयित्वा तु कर्शयेत्।	– वचा
	देहं तल्लेखनं प्रोक्तं यथा क्षौद्रं वचा यवाः।। प्रि.नि.द्रव्यादिवर्ग.69	– यव
ग्राही	दीपनं पाचनं यत्स्यादुष्णत्वाद्द्रवशोषकम्।।	– शुण्ठी
	ग्राहि तच्च यथा शुण्ठी जीरकं गजपिप्पली। शा पू 4.11–12	– जीरक
	भुक्तं गृह्णाति सम्पक्तुं ग्रहणीबलवर्धनम्।	– गजपिप्पली
	ग्राहि तदुष्णकटुकं जीरं जातीफलं यथा।। प्रि.नि.द्रव्यादिवर्ग.58	– जातीफल
स्तम्भन	रौक्ष्याच्छैत्यात्कषायत्वाल्लघुपाकाच्च यद्भवेत्।।	– वत्सक
	वातकृत्स्तम्भनं तत्स्याद्यथा वत्सकटुण्टुकौ। शा पू 4.12–13	– टुण्टुक
	स्तम्भनं शैत्यजननात् संस्तम्भयति यत्तनुम्।	– हिम स्पर्श
	यथा हिमस्य संस्पर्शः हिमपोट्टलिकाधृतिः।। प्रि.नि.द्रव्यादिवर्ग.87	– हिम पोट्टली

2020-7-11

कर्म	परिभाषा	उदाहरण
मदकारी	बुद्धिं लुम्पति यद्द्रव्यं मदकारि तदुच्यते।। तमोगुणप्रधानं च यथा मद्यं सुरादिकम्। शा पू 4.21–22 कार्याकार्यविवेकं यच्छिनत्ति मदकारि तत्। यथा भंगाऽहिफेनं स्युर्मद्यानि विविधानि च।। प्रि.नि.द्रव्यादिवर्ग.77	– मद्य – सुरा – भंगा – अहिफेन
प्रमाथी	निजवीर्येण यद्द्रव्यं स्त्रोतोभ्यो दोषसंचयम्।। निरस्यति प्रमाथि स्यात्तद्यथा मरिचं वचा। शा पू 4.23–24 द्रव्यं तैक्ष्ण्यौष्ण्यवैशद्यसूक्ष्मत्वात् स्त्रोतसां मुखम्। प्रमथ्य विवृणोत्याशु तत्प्रमाथि यथा सुरा।। प्रि.नि.द्रव्यादिवर्ग.79	– मरिच – वचा – सुरा
अभिष्यन्दि	पैच्छिल्याद्गौरवाद्द्रव्यं रुद्ध्वा रसवहाः सिराः।। धत्ते यद्गौरवं तत्स्यादभिष्यन्दि यथा दधि। शा पू 4.24–25 विष्यन्दनाच्च पैच्छिल्यात् रुद्ध्वा स्त्रोतांसि गौरवम्।	– दधि – मन्दक दधि

कर्म	परिभाषा	उदाहरण
	कुरुते तदभिष्यन्दि मन्दकञ्च यथा दधि।। प्रि.नि.द्रव्यादिवर्ग.78	
व्यवायी	पूर्वं व्याप्याखिलं कायं ततः पाकं च गच्छति।। व्यवायि तद्यथा भंगा फेनं चाहिसमुद्भवम्। शा पू 4.19–20 जठराग्निं विना गत्वा व्याप्नोति सकलां तनुम्। रक्तेन सह संवत्र्य तद् व्यवायि यथा विषम्।। प्रि.नि.द्रव्यादिवर्ग.80	– भंगा – अहिफेन – विष
विकाशी	सन्धिबन्धांस्तु शिथिलान्यत्करोति विकाशि तत्।। विश्लेष्यौजश्च धातुभ्यो यथा क्रमुककोद्रवाः। शा पू 4.20–21 ओजः क्षयाद्धि शैथिल्यमवसादं तनोति यत्। देहे विकाशि तत्प्रोक्तं यथा पूगं तमाखु च।। प्रि.नि.द्रव्यादिवर्ग.81	– क्रमुक – कोद्रव – पूग – तमाखु
रसायन	रसायनं च तज्ज्ञेयं यज्जराव्याधिनाशनम्।। यथाऽमृता रुदन्ती च गुग्गुलुश्च हरीतकी। शा पू 4.13–14	– अमृता – रुदन्ती

2020-7-11

कर्म	परिभाषा	उदाहरण
	लाभोपायो हि शस्तानां धातूनां तद् रसायनम्। जराव्याधिहरञ्चापि यथा त्वामलकीफलम्।। प्रि.नि.द्रव्यादिवर्ग.70	– गुग्गुलु – हरीतकी – आमलकी फल
वाजीकरण	यस्माद्द्रव्याद्भवेत्स्त्रीषु हर्षो वाजीकरं च तत्।। यथा नागबलाद्याः स्युर्बीजं च कपिकच्छुजम्। शा पू 4.14–15 येन नारीषु सामर्थ्यं वाजिवल्लभते नरः। तद् वाजीकरणं प्रोक्तमाकारकरभो यथा।। प्रि.नि.द्रव्यादिवर्ग.72	– नागबला – कपिकच्छु – आकारकरभ
जीवनीय	जीवनं आयुः तस्मै हितं जीवनीयम्। चक्रपाणि	– क्षीर – जीवनीय महाकषाय
बल्य	बलाय हितं बल्यम्। योगीन्द्रनाथ सेन	– बल्य महाकषाय
बृंहण	बृहत्त्वं यच्छरीरस्य जनयेत्तच्च बृंहणम्। च.सू. 22.10	– दुग्ध

कर्म	परिभाषा	उदाहरण
	बृहत्त्वं गौरवं यत्तु जनयेत्तद्धि बृंहणम्। पयो घृतं स्वादु स्निग्धञ्चान्नं सर्वं यथाऽऽमिषम्।। प्रि.नि.द्रव्यादिवर्ग.82	– घृत – मधुर एवं स्निग्ध द्रव्य – आमिष
लंघन	यत् किञ्चिल्लाघवकरं देहे तल्लंघनं स्मृतम्।। च.सू. 22.9 यत् किञ्चिल्लाघवकरं देहे तल्लंघनं स्मृतम्। यथा तिक्तो रसः शुद्धिर्व्यायामो लघु-भोजनम्।। प्रि.नि.द्रव्यादिवर्ग.83	– तिक्त रस – शोधन – व्यायाम – लघु भोजन
मेध्य	मेधाय हितं मेध्यम्। धीधृतिस्मृतिरूपान्तु मेधां वर्धयतीह यत्। मेध्यं हि तद् यथा ब्राह्मी जलनिम्बश्च शंखिनी।। प्रि.नि.द्रव्यादिवर्ग.76	– ब्राह्मी – जलनिम्ब – शंखपुष्पी

रसादि गुणों के परस्पर सम्बन्ध का निरूपण

सन्दर्भ – प्रियनिघण्टु द्रव्यादिवर्ग। 49–52

किञ्चिद् रसेन कुरुते कर्म वीर्येण चापरम्।
द्रव्यं गुणेन पाकेन प्रभावेण च किञ्चन।।
एवं सर्वे गुणा द्रव्यकर्मणि परिनिष्ठिताः।
सह सम्भूय तिष्ठन्ति साधयन्तः परस्परम्।।

2020-7-11 11

द्रव्य कुछ कर्म रस द्वारा, कुछ वीर्य द्वारा, कुछ गुण द्वारा, कुछ विपाक द्वारा और कुछ प्रभाव द्वारा करता है। इस प्रकार द्रव्य के सम्पूर्ण कर्म में ये सभी गुण सहयोगी बन कर परस्पर साथ देते हैं।

रसं विपाकस्तौ वीर्यं प्रभावस्तान्यपोहति।

बलसाम्ये रसादीनामिति नैसर्गिकं बलम्।।

स्वभावत: सबका बल समान होने पर रस को विपाक, इन दोनों को वीर्य और इन सबको प्रभाव दबा देता है।

यद् यद् द्रव्ये रसादीनां बलवत्त्वेन वर्त्तते।

अभिभूयेतरांस्तत्तत् कारणत्वं प्रपद्यते।।

बलवैषम्य होने पर रस आदि में जो प्रबल होता है वह दुर्बलों को दबा कर अपना कर्म करता है।

• • •

9. चरक का दशेमानि गण

सन्दर्भ – च.सू. 4 (षड्विरेचनशताश्रितीय अध्याय)

कुल गण (महाकषाय) संख्या – 50

प्रत्येक गण (महाकषाय) में द्रव्यों की संख्या – 10

(1) जीवनीय महाकषाय	(2) बृंहणीय महाकषाय
(3) लेखनीय महाकषाय	(4) भेदनीय महाकषाय
(5) सन्धानीय महाकषाय	(6) दीपनीय महाकषाय
(7) बल्य महाकषाय	(8) वर्ण्य महाकषाय
(9) कण्ठ्य महाकषाय	(10) हृदय महाकषाय
(11) तृप्तिघ्न महाकषाय	(12) अर्शोघ्न महाकषाय
(13) कुष्ठघ्न महाकषाय	(14) कण्डूघ्न महाकषाय
(15) क्रिमिघ्न महाकषाय	(16) विषघ्न महाकषाय
(17) स्तन्यजनन महाकषाय	(18) स्तन्यशोधन महाकषाय
(19) शुक्रजनन महाकषाय	(20) शुक्रशोधन महाकषाय

(21) स्नेहोपग महाकषाय (22) स्वेदोपग महाकषाय
(23) वमनोपग महाकषाय (24) विरेचनोपग महाकषाय
(25) आस्थापनोपग महाकषाय (26) अनुवासनोपग महाकषाय
(27) शिरोविरेचनोपग महाकषाय (28) छर्दिनिग्रहण महाकषाय
(29) तृष्णानिग्रहण महाकषाय (30) हिक्कानिग्रहण महाकषाय
(31) पुरीषसंग्रहणीय महाकषाय (32) पुरीषविरजनीय महाकषाय
(33) मूत्रसंग्रहणीय महाकषाय (34) मूत्रविरजनीय महाकषाय
(35) मूत्रविरेचनीय महाकषाय (36) कासहर महाकषाय
(37) श्वासहर महाकषाय (38) शोथहर महाकषाय
(39) ज्वरहर महाकषाय (40) श्रमहर महाकषाय
(41) दाहप्रशमन महाकषाय (42) शीतप्रशमन महाकषाय
(43) उदर्दप्रशमन महाकषाय (44) अंगमर्दप्रशमन महाकषाय
(45) शूलप्रशमन महाकषाय (46) शोणितस्थापन महाकषाय
(47) वेदनास्थापन महाकषाय (48) संज्ञास्थापन महाकषाय
(49) प्रजास्थापन महाकषाय (50) वय:स्थापन महाकषाय

(1) जीवनीय महाकषाय –

जीवकर्षभकौ मेदा महामेदा काकोली क्षीरकाकोली मुद्गपर्णी माषपर्ण्यौ जीवन्ती मधुकमिति दशेमानि जीवनीयानि भवन्ति। च.सू. 4.9(1)

(1) जीवक (2) ऋषभक (3) मेदा (4) महामेदा
(5) काकोली (6) क्षीरकाकोली (7) मुद्गपर्णी (8) माषपर्णी
(9) जीवन्ती (10) मधुक

(2) बृंहणीय महाकषाय –

क्षीरिणी राजक्षवकाश्वगन्धाकाकोलीक्षीरकाकोलीवाट्यायनीभद्रौदनीभारद्वाजीपयस्यर्ष्यगन्धा इति दशेमानि बृंहणीयानि भवन्ति। च.सू. 4.9(2)

(1) क्षीरिणी (2) राजक्षवक (3) अश्वगन्धा (4) काकोली
(5) क्षीर-काकोली (6) वाट्यायनी (7) भद्रौदनी (8) भारद्वाजी
(9) पयस्या (10) ऋष्यगन्धा

(3) लेखनीय महाकषाय –

मुस्तकुष्ठहरिद्रादारुहरिद्रावचातिविषाकटुरोहिणीचित्रकचिरबिल्वहैमवत्य इति दशेमानि लेखनीयानि भवन्ति। च.सू. 4.9(3)

(1) मुस्त (2) कुष्ठ (3) हरिद्रा (4) दारुहरिद्रा
(5) वचा (6) अतिविषा (7) कटुरोहिणी (8) चित्रक
(9) चिरबिल्व (10) हैमवती

(4) भेदनीय महाकषाय –

सुवहार्कोरुबुकाग्निमुखीचित्राचित्रकचिरबिल्वशंखिनीशकुलादनी-स्वर्णक्षीरिण्य इति दशेमानि भेदनीयानि भवन्ति। च.सू. 4.9(4)

(1) सुवहा (2) अर्क (3) उरुबुक (4) अग्निमुखी
(5) चित्रा (6) चित्रक (7) चिरबिल्व (8) शंखिनी
(9) शकुलादनी (10) स्वर्णक्षीरी

(5) सन्धानीय महाकषाय –

मधुकमधुपर्णीपृश्निपर्ण्यम्बष्ठकीसमंगामोचरसधातकीलोध्रप्रियंगु-कट्फलानीति दशेमानि सन्धानीयानि भवन्ति। च.सू. 4.9(5)

(1) मधुक (2) मधुपर्णी (3) पृश्निपर्णी (4) अम्बष्ठकी
(5) समंगा (6) मोचरस (7) धातकी (8) लोध्र
(9) प्रियंगु (10) कट्फल

(6) दीपनीय महाकषाय –

पिप्पलीपिप्पलीमूलचव्यचित्रकशृंगवेराम्लवेतसमरिचाजमोदाभल्लात-कास्थिहिंगुनिर्यासा इति दशेमानि दीपनीयानि भवन्ति।

च.सू. 4.9(6)

(1) पिप्पली (2) पिप्पलीमूल (3) चव्य (4) चित्रक
(5) शृंगवेर (6) अम्लवेतस (7) मरिच (8) अजमोदा
(9) भल्लातकास्थि (10) हिंगुनिर्यास

(7) बल्य महाकषाय –

ऐन्द्यृषभ्यतिरसर्ष्यप्रोक्तापयस्याश्वगन्धास्थिरारोहिणीबलातिबला इति दशेमानि बल्यानि भवन्ति। च.सू. 4.10(7)

(1) ऐन्द्री (2) ऋषभी (3) अतिरसा (4) ऋष्यप्रोक्ता
(5) पयस्या (6) अश्वगन्धा (7) स्थिरा (8) रोहिणी
(9) बला (10) अतिबला

(8) वर्ण्य महाकषाय –

चन्दनतुंगपद्मकोशीरमधुकमञ्जिष्ठासारिवापयस्यासितालता इति दशेमानि वर्ण्यानि भवन्ति। च.सू. 4.10(8)

(1) चन्दन (2) तुंग (3) पद्मक (4) उशीर
(5) मधुक (6) मञ्जिष्ठा (7) सारिवा (8) पयस्या
(9) सिता (10) लता

(9) कण्ठ्य महाकषाय–

सारिवेक्षुमूलमधुकपिप्पलीद्राक्षाविदारीकैटर्यहंसपादीबृहतीकण्टकारिका इति दशेमानि कण्ठ्यानि भवन्ति। च.सू. 4.10(9)

(1) सारिवा (2) इक्षुमूल (3) मधुक (4) पिप्पली
(5) द्राक्षा (6) विदारी (7) कैटर्य (8) हंसपादी
(9) बृहती (10) कण्टकारिका

(10) हृद्य महाकषाय –

आम्राम्रातकलिकुचकरमर्दवृक्षाम्लाम्लवेतसकुवलबदरदाडिम-मातुलुंगानीति दशेमानि हृद्यानि भवन्ति। च.सू. 4.10(10)

(1) आम्र (2) आम्रातक (3) लिकुच (4) करमर्द
(5) वृक्षाम्ल (6) अम्लवेतस (7) कुवल (8) बदर
(9) दाडिम (10) मातुलुंग

(11) तृप्तिघ्न महाकषाय –

नागरचव्यचित्रकविडंगमूर्वागुडूचीवचामुस्तपिप्पलीपटोलानीति दशेमानि तृप्तिघ्नानि भवन्ति। च.सू. 4.11(11)

(1) नागर (2) चव्य (3) चित्रक (4) विडंग
(5) मूर्वा (6) गुडूची (7) वचा (8) मुस्त
(9) पिप्पली (10) पटोल

(12) अर्शोघ्न महाकषाय –

कुटजबिल्वचित्रकनागरातिविषाभयाधन्वयासकदारुहरिद्रावचाचव्यानीति दशेमान्यर्शोघ्नानि भवन्ति। च.सू. 4.11(12)

(1) कुटज (2) बिल्व (3) चित्रक (4) नागर
(5) अतिविषा (6) अभया (7) धन्वयासक (8) दारुहरिद्रा
(9) वचा (10) चव्य

(13) कुष्ठघ्न महाकषाय –

खदिराभयामलकहरिद्रारुष्करसप्तपर्णारग्वधकरवीरविडंगजातीप्रवाला इति दशेमानि कुष्ठघ्नानि भवन्ति। च.सू. 4.11(13)

(1) खदिर (2) अभया (3) आमलक (4) हरिद्रा
(5) अरुष्कर (6) सप्तपर्ण (7) आरग्वध (8) करवीर
(9) विडंग (10) जाती प्रवाल

(14) कण्डूघ्न महाकषाय –

चन्दननलदकृतमालनक्तमालनिम्बकुटजसर्षपमधुकदारुहरिद्रामुस्तानीति दशेमानि कण्डूघ्नानि भवन्ति। च.सू. 4.11(14)

(1) चन्दन (2) नलद (3) कृतमाल (4) नक्तमाल
(5) निम्ब (6) कुटज (7) सर्षप (8) मधुक
(9) दारुहरिद्रा (10) मुस्ता

(15) क्रिमिघ्न महाकषाय –

अक्षीवमरिचगण्डीरकेबुकविडंगनिर्गुण्डीकिणिहीश्वदंष्ट्रावृषपर्णिकाखुपर्णिका इति दशेमानि क्रिमिघ्नानि भवन्ति। च.सू. 4.11(15)

2020-7-11

(1) अक्षीव (2) मरिच (3) गण्डीर (4) केबुक
(5) विडंग (6) निर्गुण्डी (7) किणिही (8) श्वदंष्ट्रा
(9) वृषपर्णिका (10) आखुपर्णी

(16) विषघ्न महाकषाय –

हरिद्रामञ्जिष्ठासुवहासूक्ष्मैलापालिन्दीचन्दनकतकशिरीषसिन्धुवार-श्लेष्मातका इति दशेमानि विषघ्नानि भवन्ति। च.सू. 4.11(16)

(1) हरिद्रा (2) मञ्जिष्ठा (3) सुवहा (4) सूक्ष्मैला
(5) पालिन्दी (6) चन्दन (7) कतक (8) शिरीष
(9) सिन्धुवार (10) श्लेष्मातक

(17) स्तन्यजनन महाकषाय –

वीरणशालिषष्टिकेक्षुवालिकादर्भकुशकाशगुन्द्रेत्कटकत्तृणमूलानीति दशेमानि स्तन्यजननानि भवन्ति। च.सू. 4.12(17)

(1) वीरण (2) शालि (3) षष्टिक (4) इक्षुवालिका
(5) दर्भ (6) कुश (7) काश (8) गुन्द्रा
(9) इत्कट (10) कत्तृण मूल

(18) स्तन्यशोधन महाकषाय –

पाठामहौषधसुरदारुमुस्तमूर्वागुडूचीवत्सकफलकिराततिक्तकदुरोहिणी-सारिवा इति दशेमानि स्तन्यशोधनानि भवन्ति। च.सू. 4.12(18)

(1) पाठा (2) महौषध (3) सुरदारु (4) मुस्त
(5) मूर्वा (6) गुडूची (7) वत्सक फल (8) किरात-तिक्त
(9) कटुरोहिणी (10) सारिवा

(19) शुक्रजनन महाकषाय –

जीवकर्षभककाकोलीक्षीरकाकोलीमुद्गपर्णीमाषपर्णीमेदावृद्धरुहा-जटिलाकुलिंगा इति दशेमानि शुक्रजननानि भवन्ति। च.सू. 4.12(19)

(1) जीवक (2) ऋषभक (3) काकोली (4) क्षीर-काकोली
(5) मुद्गपर्णी (6) माषपर्णी (7) मेदा (8) वृद्धरुहा
(9) जटिला (10) कुलिंगा

(20) शुक्रशोधन महाकषाय –

कुष्ठैलवालुककट्फलसमुद्रफेनकदम्बनिर्यासेक्षुकाण्डेक्ष्विक्षुरकव-सुकोशीराणीति दशेमानि शुक्रशोधनानि भवन्ति। च.सू. 4.12(20)

(1) कुष्ठ (2) एलवालुक (3) कट्फल (4) समुद्रफेन
(5) कदम्ब निर्यास (6) इक्षु (7) काण्डेक्षु (8) इक्षुरक
(9) वसुक (10) उशीर

2020-7-11

(21) स्नेहोपग महाकषाय –

मृद्वीकामधुकमधुपर्णीमेदाविदारीकाकोलीक्षीरकाकोलीजीवकजीवन्ती-शालपर्ण्य इति दशेमानि स्नेहोपगानि भवन्ति। च.सू. 4.13(21)

(1) मृद्वीका (2) मधुक (3) मधुपर्णी (4) मेदा
(5) विदारी (6) काकोली (7) क्षीरकाकोली (8) जीवक
(9) जीवन्ती (10) शालपर्णी

(22) स्वेदोपग महाकषाय –

शोभाञ्जनकैरण्डार्कवृश्चीरपुनर्नवायवतिलकुलत्थमाषबदराणीति दशेमानि स्वेदोपगानि भवन्ति। च.सू. 4.13(22)

(1) शोभाञ्जन (2) एरण्ड (3) अर्क (4) वृश्चीर
(5) पुनर्नवा (6) यव (7) तिल (8) कुलत्थ
(9) माष (10) बदर

(23) वमनोपग महाकषाय –

मधुमधुककोविदारकर्बुदारनीपविदुलबिम्बीशणपुष्पीसदापुष्पाप्रत्यक्पुष्पा इति दशेमानि वमनोपगानि भवन्ति। च.सू. 4.13(23)

(1) मधु (2) मधुक (3) कोविदार (4) कर्बुदार
(5) नीप (6) विदुल (7) बिम्बी (8) शणपुष्पी
(9) सदापुष्पा (10) प्रत्यक्पुष्पा

(24) विरेचनोपग महाकषाय –

द्राक्षाकाश्मर्यपरूषकाभयामलकविभीतककुवलबदरकर्कन्धुपीलूनीति दशेमानि विरेचनोपगानि भवन्ति। च.सू. 4.13(24)

(1) द्राक्षा (2) काश्मर्य (3) परूषक (4) अभया
(5) आमलक (6) बिभीतक (7) कुवल (8) बदर
(9) कर्कन्धु (10) पीलु

(25) आस्थापनोपग महाकषाय –

त्रिवृद्बिल्वपिप्पलीकुष्ठसर्षपवचावत्सकफलशतपुष्पामधुकमदनफला-नीति दशेमान्यास्थापनोपगानि भवन्ति। च.सू. 4.13(25)

(1) त्रिवृत् (2) बिल्व (3) पिप्पली (4) कुष्ठ
(5) सर्षप (6) वचा (7) वत्सक फल (8) शतपुष्पा
(9) मधुक (10) मदनफल

(26) अनुवासनोपग महाकषाय –

रास्नासुरदारुबिल्वमदनशतपुष्पावृश्चीरपुनर्नवाश्वदंष्ट्राग्निमन्थश्योनाका इति दशेमान्यनुवासनोपगानि भवन्ति। च.सू. 4.13(26)

(1) रास्ना (2) सुरदारु (3) बिल्व (4) मदन
(5) शतपुष्पा (6) वृश्चीर (7) पुनर्नवा (8) श्वदंष्ट्रा
(9) अग्निमन्थ (10) श्योनाक

2020-7-1

(27) शिरोविरेचनोपग महाकषाय –

ज्योतिष्मतीक्षवकमरिचपिप्पलीविडंगशिग्रुसर्षपापामार्गतण्डुलश्वेता-महाश्वेता इति दशेमानि शिरोविरेचनोपगनि भवन्ति। च.सू. 4.13(27)

(1) ज्योतिष्मती (2) क्षवक (3) मरिच (4) पिप्पली
(5) विडंग (6) शिग्रु (7) सर्षप (8) अपामार्ग तण्डुल
(9) श्वेता (10) महाश्वेता

(28) छर्दिनिग्रहण महाकषाय –

जम्ब्वाम्रपल्लवमातुलुंगाम्लबदरदाडिमयववयष्टिकोशीरमृल्लाजा इति दशेमानि छर्दिनिग्रहणानि भवन्ति। च.सू. 14.(28)

(1) जम्बु (2) आम्रपल्लव (3) मातुलुंग (4)अम्ल बदर
(5) दाडिम (6) यव (7) यष्टिक (8) उशीर
(9) मृत् (10) लाजा

(29) तृष्णानिग्रहण महाकषाय –

नागरधन्वयवासकमुस्तपर्पटकचन्दनकिराततिक्तकगुडूचीह्रीवेरधान्यकपटोलानीति दशेमानि तृष्णानिग्रहणानि भवन्ति। च.सू. 4.14(29)

(1) नागर (2) धन्वयासक (3) मुस्त (4) पर्पटक
(5) चन्दन (6) किराततिक्तक (7) गुडूची (8) ह्रीबेर
(9) धान्यक (10) पटोल

(30) हिक्कानिग्रहण महाकषाय –

शटीपुष्करमूलबदरबीजकण्टकारिकाबृहतीवृक्षरुहाभयापिप्पलीदुरालभा-कुलीरशृंग्य इति दशेमानि हिक्कानिग्रहणानि भवन्ति। च.सू. 4.14(30)

(1) शटी (2) पुष्करमूल (3) बदर बीज (4) कण्टकारिका
(5) बृहती (6) वृक्षरुहा (7) अभया (8) पिप्पली
(9) दुरालभा (10) कुलीरशृंगी

(31) पुरीषसंग्रहणीय महाकषाय –

प्रियङ्गवनन्ताम्रास्थिकट्वंगलोध्रमोचरससमंगाधातकीपुष्पपद्मापद्मकेशराणीति दशेमानि पुरीषसंग्रहणीयानि भवन्ति। च.सू. 4.15(31)

(1) प्रियंगु (2) अनन्ता (3) आम्रास्थि (4) कट्वंग
(5) लोध्र (6) मोचरस (7) समंगा (8) धातकी पुष्प
(9) पद्मा (10) पद्मकेशर

(32) पुरीषविरजनीय महाकषाय –

जम्बुशल्लकीत्वक्कच्छुरामधूकशाल्मलीश्रीवेष्टकभृष्टमृत्पयस्योत्पलतिलकणा इति दशेमानि पुरीषविरजनीयानि भवन्ति। च.सू. 4.15(32)

2020-7-11

(1) जम्बु (2) शल्लकी त्वक् (3) कच्छुरा (4) मधूक
(5) शाल्मली (6) श्रीवेष्टक (7) भृष्ट मृत् (8) पयस्या
(9) उत्पल (10) तिलकणा

(33) मूत्रसंग्रहणीय महाकषाय –

जम्ब्वाम्रप्लक्षवटकपीतनोडुम्बराश्वत्थभल्लातकाश्मन्तकसोमवल्का इति दशेमानि मूत्रसंग्रहणीयानि भवन्ति। च.सू. 4.15(33)

(1) जम्बु (2) आम्र (3) प्लक्ष (4) वट
(5) कपीतन (6) उडुम्बर (7) अश्वत्थ (8) भल्लातक
(9) अश्मन्तक (10) सोमवल्क

(34) मूत्रविरजनीय महाकषाय –

पद्मोत्पलनलिनकुमुदसौगन्धिकपुण्डरीकशतपत्रमधुकप्रियंगुधातकी-पुष्पाणीति दशेमानि मूत्रविरजनीयानि भवन्ति। च.सू. 4.15(34)

(1) पद्म (2) उत्पल (3) नलिन (4) कुमुद
(5) सौगन्धिक (6) पुण्डरीक (7) शतपत्र (8) मधुक
(9) प्रियंगु (10) धातकीपुष्प

(35) मूत्रविरेचनीय महाकषाय –

वृक्षादनीश्वदंष्ट्रावसुकवशिरपाषाणभेददर्भकुशकाशगुन्द्रेत्कटमूलानीति दशेमानि मूत्रविरेचनीयानि भवन्ति। च.सू. 4.15(35)

(1) वृक्षादनी (2) श्वदंष्ट्रा (3) वसुक (4) वशिर
(5) पाषाणभेद (6) दर्भ (7) कुश (8) काश
(9) गुन्द्र (10) इत्कटमूल

(36) कासहर महाकषाय –

द्राक्षाभयामलकपिप्पलीदुरालभाशृंगीकण्टकारिकावृश्चीरपुनर्नवातामलक्य इति दशेमानि कासहराणि भवन्ति। च.सू. 4.16(36)

(1) द्राक्षा (2) अभया (3) आमलक (4) पिप्पली
(5) दुरालभा (6) शृंगी (7) कण्टकारिका (8) वृश्चीर
(9) पुनर्नवा (10) तामलकी

(37) श्वासहर महाकषाय –

शटीपुष्करमूलाम्लवेतसैलाहिंग्वगुरुसुरसातामलकीजीवन्तीचण्डा इति दशेमानि श्वासहराणि भवन्ति। च.सू. 4.16(37)

(1) शटी (2) पुष्करमूल (3) अम्लवेतस (4) एला
(5) हिंगु (6) अगुरु (7) सुरसा (8) तामलकी
(9) जीवन्ती (10) चण्डा

(38) श्वयथुहर महाकषाय –

पाटलाग्निमन्थश्योनाकबिल्वकाश्मर्यकण्टकारिकाबृहतीशालपर्णीपृश्नि-पर्णीगोक्षुरका इति दशेमानि श्वयथुहराणि भवन्ति। च.सू. 4.16(38)

2020-7-11 11

(1) पाटला (2) अग्निमन्थ (3) श्योनाक (4) बिल्व
(5) काश्मर्य (6) कण्टकारिका (7) बृहती (8) शालपर्णी
(9) पृश्निपर्णी (10) गोक्षुरक

(39) ज्वरहर महाकषाय –

सारिवाशर्करापाठामञ्जिष्ठाद्राक्षापीलुपरूषकाभयामलकबिभीतकानीति दशेमानि ज्वरहराणि भवन्ति। च.सू. 4.16(39)

(1) सारिवा (2) शर्करा (3) पाठा (4) मञ्जिष्ठा
(5) द्राक्षा (6) पीलु (7) परूषक (8) अभया
(9) आमलक (10) बिभीतक

(40) श्रमहर महाकषाय –

द्राक्षाखर्जूरप्रियालबदरदाडिमफल्गुपरुषकेक्षुयवषष्टिका इति दशेमानि श्रमहराणि भवन्ति। च.सू. 4.16(40)

(1) द्राक्षा (2) खर्जूर (3) प्रियाल (4) बदर
(5) दाडिम (6) फल्गु (7) परुषक (8) इक्षु
(9) यव (10) षष्टिक

(41) दाहप्रशमन महाकषाय –

लाजाचन्दनकाश्मर्यफलमधूकशर्करानीलोत्पलोशीरसारिवागुडूचीह्रीबेराणीति दशेमानि दाहप्रशमनानि भवन्ति। च.सू. 4.17(41)

(1) लाजा (2) चन्दन (3) काश्मर्यफल (4) मधूक
(5) शर्करा (6) नीलोत्पल (7) उशीर (8) सारिवा
(9) गुडूची (10) ह्रीबेर

(42) शीतप्रशमन महाकषाय –

तगरागुरुधान्यकशृंगवेरभूतीकवचाकण्टकार्यग्निमन्थश्योनाकपिप्पल्य इति दशेमानि शीतप्रशमनानि भवन्ति। च.सू. 4.17(42)

(1) तगर (2) अगुरु (3) धान्यक (4) शृंगवेर
(5) भूतीक (6) वचा (7) कण्टकारी (8) अग्निमन्थ
(9) श्योनाक (10) पिप्पली

(43) उदर्दप्रशमन महाकषाय –

तिन्दुकप्रियालबदरखदिरकदरसप्तपर्णाश्वकर्णार्जुनासनारिमेदा इति दशेमान्युदर्दप्रशमनानि भवन्ति। च.सू. 4.17(43)

(1) तिन्दुक (2) प्रियाल (3) बदर (4) खदिर
(5) कदर (6) सप्तपर्ण (7) अश्वकर्ण (8) अर्जुन
(9) असन (10) अरिमेद

(44) अंगमर्दप्रशमन महाकषाय –

विदारीगन्धापृश्निपर्णीबृहतीकण्टकारिकैरण्डकाकोलीचन्दनोशीरेलामधुकानीति दशेमान्यंगमर्दप्रशमनानि भवन्ति। च.सू. 4.17(44)

2020-7-11 11

(1) विदारीगन्धा (2) पृश्निपर्णी (3) बृहती (4) कण्टकारि
(5) एरण्ड (6) काकोली (7) चन्दन (8) उशीर
(9) एला (10) मधुक

(45) शूलप्रशमन महाकषाय –

पिप्पलीपिप्पलीमूलचव्यचित्रकशृंगवेरमरिचाजमोदाजगन्धाजाजीगण्डी राणीति दशेमानि शूलप्रशमनानि भवन्ति। च.सू. 4.17(45)

(1) पिप्पली (2) पिप्पलीमूल (3) चव्य (4) चित्रक
(5) शृंगवेर (6) मरिच (7) अजमोदा (8) अजगन्ध
(9) अजाजी (10) गण्डीर

(46) शोणितस्थापन महाकषाय –

मधुमधुकरुधिरमोचरसमृत्कपाललोध्रगैरिकप्रियंगुशर्कराला इति दशेमानि शोणितस्थापनानि भवन्ति। च.सू. 4.18(46)

(1) मधु (2) मधुक (3) रुधिर (4) मोचरस
(5) मृत्कपाल (6) लोध्र (7) गैरिक (8) प्रियंगु
(9) शर्करा (10) लाजा

(47) वेदनास्थापन महाकषाय –

शालकट्फलकदम्बपद्मकतुम्बमोचरसशिरीषवञ्जुलैलवालुकाशोक इति दशेमानि वेदनास्थापनानि भवन्ति। च.सू. 4.18(47)

(1) शाल (2) कट्फल (3) कदम्ब (4) पद्मक
(5) तुम्ब (6) मोचरस (7) शिरीष (8) वञ्जुल
(9) एलवालुक (10) अशोक

(48) संज्ञास्थापन महाकषाय –

हिंगुकैटर्यारिमेदावचाचोरकवयस्थागोलोमीजटिलापलंकषाशोकरोहिण्य इति दशेमानि संज्ञास्थापनानि भवन्ति। च.सू. 4.18(48)

(1) हिंगु (2) कैटर्य (3) अरिमेद (4) वचा
(5) चोरक (6) वयस्था (7) गोलोमी (8) जटिला
(9) पलंकषा (10) अशोकरोहिणी

(49) प्रजास्थापन महाकषाय –

ऐन्द्रीब्राह्मीशतवीर्यासहस्त्रवीर्याऽमोघाऽव्यथाशिवाऽरिष्टावाट्यपुष्पी-विष्वक्सेनकान्ता इति दशेमानि प्रजास्थापनानि भवन्ति। च.सू. 4.18(49)

(1) ऐन्द्री (2) ब्राह्मी (3) शतवीर्या (4) सहस्त्रवीर्या
(5) अमोघा (6) अव्यथा (7) शिवा (8) अरिष्टा
(9) वाट्यपुष्पी (10) विष्वक्सेनकान्ता

(50) वयःस्थापन महाकषाय –

अमृताऽभयाधात्रीमुक्ताश्वेताजीवन्त्यतिरसामण्डूकपर्णीस्थिरापुनर्नवा इति दशेमानि वयःस्थापनानि भवन्ति। च.सू. 4.18(50)

2020-7-1

(1) अमृता (2) अभया (3) धात्री (4) मुक्ता
(5) श्वेता (6) जीवन्ती (7) अतिरसा (8) मण्डूक-पर्णी
(9) स्थिरा (10) पुनर्नवा

• • •

10. मिश्रक गण

औद्भिद् गण

बृहत्पञ्चमूल –

बिल्वकाश्मर्यतर्कारीपाटलाटिण्टुकैर्महत्।।

जयेत्कषायतिक्तोष्णं पञ्चमूलं कफानिलौ। अ.ह.सू. 6.167-168

बिल्व + काश्मर्य + तर्कारी + पाटला + टिण्टुक

गुण – – कषाय –तिक्त – उष्ण – कफवातघ्न

लघुपञ्चमूल –

ह्रस्वं बृहत्यंशुमतीद्वयगोक्षुरकैः स्मृतम्।।

स्वादुपाकरसं नातिशीतोष्णं सर्वदोषजित्। अ.ह.सू. 6.168-169

बृहती + कण्टकारी + शालिपर्णी + पृश्निपर्णी + गोक्षुर

गुण – – मधुर रस – मधुर पाकी – न अधिक शीतल – न अधिक उष्ण – त्रिदोषहर

2020-7-1

दशमूल –

उभाभ्यां पञ्चमूलाभ्यां दशमूलमुदाहृतम्।

दशमूलं त्रिदोषघ्नं श्वासकासशिरोरुजः।

तन्द्राशोथज्वरानाहपार्श्वपीडाऽरुचीर्हरेत्।। भा.प्र. हरीतक्यादिवर्ग

बृहत्पञ्चमूल (बृहती + कण्टकारी + शालिपर्णी + पृश्निपर्णी + गोक्षुर)

+

लघुपञ्चमूल (बिल्व + काश्मर्य + तर्कारी + पाटला + टिण्टुक)

गुण – – त्रिदोषघ्न – श्वास – कास – शिरोवेदनानाशक – तन्द्रा - शोथ – ज्वर – आनाह – पार्श्वशूल – अरोचक नाशक

वल्ली पञ्चमूल –

विदारीसारिवारजनीगुडूच्योऽजशृंगी चेति वल्लीसंज्ञः।।

सु.सू. 38.72

विदारी + सारिवा + रजनी + गुडूची + अजशृंगी

कण्टक पञ्चमूल –

करमर्दीत्रिकण्टकसैरीयकशतावरीगृध्रनख्य इति कण्टकसंज्ञः।।

सु.सू. 38.73

करमर्द + त्रिकण्टक + सैरेयक + शतावरी + गृध्रनखी

तृण पञ्चमूल –

सुश्रुत मतेन –

कुशकाशनलदर्भकाण्डेक्षुका इति तृणसंज्ञकः।। सु.सू. 38.75

कुश + काश + नल + दर्भ + काण्डेक्षु

वाग्भट मतेन –

तृणाख्यं पित्तजिद्दर्भकासेक्षुशरशालिभिः।। अ.हृ.सू. 6.171

दर्भ + कास + इक्षु + शर + शालि

मध्यम पञ्चमूल –

बलापुनर्नवैरण्डशूर्पपर्णीद्वयेन तु।।

मध्यमं कफवातघ्नं नातिपित्तकरं सरम्। अ.हृ.सू. 6.169–170

बला + पुनर्नवा + एरण्ड + मुद्गपर्णी + माषपर्णी

गुण – – कफवातघ्न – नातिपित्तकर – सर

जीवन पञ्चमूल –

अभीरुवीराजीवन्तीजीवकर्षभकैः स्मृतम्।।

जीवनाख्यं तु चक्षुष्यं वृष्यं पित्तानिलापहाम्।

अ.हृ.सू. 6.170–171

शतावरी + काकोली + जीवन्ती + जीवक + ऋषभक

गुण – – चक्षुष्य – वृष्य – पित्तवातघ्न

2020-7-11

पञ्चपल्लव –

आम्रजम्बूकपित्थानां बीजपूरकबिल्वयोः।
गन्धकर्मणि सर्वत्र पत्राणि पञ्चपल्लवम्।।

आम्र + जम्बू + कपित्थ + बीजपूर + बिल्व

पञ्चवल्कल –

पर्याय – पञ्चवेतस (नरहरि पण्डित मतेन)

न्यग्रोधोदुम्बराश्वत्थ–प्लक्षवेतसवल्कलैः।
सर्वैरेकत्र मिलितैः पञ्चवेतसमुच्यते।। रा.नि.मिश्रकादिवर्ग.25

न्यग्रोध + उदुम्बर + अश्वत्थ + प्लक्ष + वेतस

त्रिफला –

पर्याय – – फलत्रिक – वरा

पथ्याबिभीतकधात्रीणां फलैः स्यात्त्रिफला समैः।
फलत्रिकञ्च त्रिफला सा वरा च प्रकीर्तिता।।

भा.प्र. हरीतक्यादिवर्ग. 42

हरीतकी + आमलकी + बिभीतकी

त्रिकटु –

पर्याय – – कटुत्रिक – त्र्यूषण – व्योष

विश्वोपकुल्या मरिचं त्रयं त्रिकटु कथ्यते।
कटुत्रिकं तु त्रिकटु त्रयूषणं व्योष उच्यते।।

भा.प्र. हरीतक्यादिवर्ग 162

प्रिप्पली + मरिच + शुण्ठी

त्रिमद –

विडंगमुस्तचित्रैश्च त्रिमदः समुदाहृतः।

विडंग + मुस्तक + चित्रक

चतुरूषण –

व्योषः सकणामूलः कथितं चतुरूषणं भिषग्वर्यैः।
तत्तुल्यगुणं किन्तु प्रकीर्त्तितं प्रोल्बणं वीर्ये।।

प्रियनिघण्टु शरादिवर्ग।100

पिप्पली + मरिच + शुण्ठी + पिप्पलीमूल

पञ्चकोल –

पिप्पली पिप्पलीमूलं चव्यचित्रकनागरैः।
पञ्चभिः कोलमात्रं यत्पञ्चकोलं तदुच्यते।।

भा.प्र. हरीतक्यादिवर्ग।72

पिप्पली + पिप्पलीमूल + चव्य + चित्रक + नागर

षडूषण –

पञ्चकोलं समरिचं षडूषणमुदाहृतम्।
पञ्चकोलगुणं तत्तु रूक्षमुष्णं विषापहम्।।

भा.प्र. हरीतक्यादिवर्ग।74

2020-7-11

पिप्पली + पिप्पलीमूल + चव्य + चित्रक + नागर + मरिच

चतुर्बीज –

मेथिका चन्द्रशूरश्च कालाऽजाजी यवानिका।
एतच्चतुष्टयं युक्तं चतुर्बीजमिति स्मृतम्।।

भा.प्र. हरीतक्यादिवर्ग।98

मेथिका + चन्द्रशूर + कालाऽजाजी + यवानिका

जीवनीय गण –

जीवन्ती काकोल्यौ मेदे द्वे मुद्गमाषपर्ण्यौ च।
ऋषभकजीवकमधुकं चेति गणो जीवनीयाख्यः।। अ.हृ.सू. 15.8

जीवन्ती + काकोली + क्षीरकाकोली + मेदा + महामेदा + मुद्गपर्णी + माषपर्णी + ऋषभक + जीवक + मधुक

अष्टवर्ग –

जीवकर्षभकौ मेदे काकोल्यौ ऋद्धिवृद्धिके।।
अष्टवर्गोऽष्टभिर्द्रव्यैः कथितश्चरकादिभिः।।
अष्टवर्गो हिमः स्वादुर्बृंहणः शुक्रलो गुरुः।
भग्नसन्धानकृत्कामबलासबलवर्द्धनः।
वातपित्तास्रतृड्दाहज्वरमेहक्षयप्रणुत्।।

भा.प्र. हरीतक्यादिवर्ग।120–122

जीवक + ऋषभक + मेदा + महामेदा + काकोली + क्षीरकाकोली + ऋद्धि + वृद्धि

गुणकर्म – – शीत – मधुर – बृंहण – शुक्रल – गुरु – भग्नसन्धानकर – कामवर्द्धक – कफवर्द्धक – बलवर्द्धक – वातपित्तघ्न – रक्तविकारनाशक – तृष्णा – दाह – ज्वर – प्रमेह – क्षय नाशक

प्रतिनिधि द्रव्य –

1. जीवक → विदारीकन्द
2. ऋषभक → विदारीकन्द
3. मेदा → शतावरी
4. महामेदा → शतावरी
5. काकोली → अश्वगन्धा
6. क्षीरकाकोली → अश्वगन्धा
7. ऋद्धि → वाराहीकन्द
8. वृद्धि → वाराहीकन्द

त्रिजातक –

पर्याय – त्रिसुगन्धि

त्वगेलापत्रकैस्तुल्यैस्त्रिसुगन्धि त्रिजातकम्। रा.नि.मिश्रकादिवर्ग.18

त्वक् + एला + तेजपत्र

2020-7-11 12:0

चतुर्जातक –

नागकेशरसंयुक्तं चातुर्जातकमुच्यते। रा.नि.मिश्रकादिवर्ग.18

त्वक् + एला + तेजपत्र + नागकेशर

कटु चतुर्जातक –

एलात्वक्पत्रकैस्तुल्यैर्मरिचेन समन्वितैः।

कटुपूर्वमिदं चान्यच्चातुर्जातकमुच्यते।। रा.नि.मिश्रकादिवर्ग.19

एला + त्वक् + तेजपत्र + मरिच

पञ्चतिक्त –

गुडूची निम्बमूलत्वक् भिषङ्माता निदिग्धिका।

पटोलपत्रमित्येतत् पञ्चतिक्तं प्रकीर्तितम्।। र त

गुडूची + निम्बमूल त्वक् + वासा + कण्टकारी + पटोल पत्र

अम्ल पञ्चक –

रसतरंगिणी मतेन –

अम्लवेतस + जम्बीर + मातुलुंग + नारंग + निम्बुक

राजनिघण्टु मतेन –

(1) कोल + दाडिम + वृक्षाम्ल + चुल्लकी + अम्लवेतस

(2) जम्बीर + नारंग + अम्लवेतस + तिन्तिडीक + बीजपूर

त्रिकार्षिक –

नागरातिविषा मुस्ता त्रयमेतत्त्रिकार्षिकम्।। रा.नि.मिश्रकादिवर्ग.16

नागर + अतिविषा + मुस्ता

चातुर्भद्रक –

गुडूच्या मिलितं तच्च चातुर्भद्रकमुच्यते।। रा.नि.मिश्रकादिवर्ग.17

नागर + अतिविषा + मुस्ता + गुडूची

स्वल्प त्रिफला –

स्वल्पा काश्मर्यखर्जूरपरूषकफलैर्भवेत्।

काश्मर्य + खर्जूर + परूषक

मधुर त्रिफला –

पर्याय – मधुरादि फलत्रय

द्राक्षाकाश्मर्य्यखर्जूरीफलानि मिलितानि तु।

मधुरत्रिफला ज्ञेया मधुरादिफलत्रयम्।। रा.नि.मिश्रकादिवर्ग.3

द्राक्षा + काश्मर्य + खर्जूरीफल

महाविष –

संख्या – राजनिघण्टु मतेन – 5

शृंगिकः कालकूटश्च मुस्तको वत्सनाभकः।

सक्तुकश्चेति योगोऽयं महापञ्चविषाभिधः।।

रा.नि.मिश्रकादिवर्ग.42

2020-7-1 12:00

1. शृंगिक 2. कालकूट 3. मुस्तक 4. वत्सनाभ 5. सक्तुक

उपविष –

संख्या – रसरत्नसमुच्चय मतेन – 7
रसतरंगिणी मतेन – 11
राजनिघण्टु मतेन – 5

लांगली विषमुष्टिश्च करवीरं जया तथा।
नीलकः कनकोऽर्कश्च वर्गो ह्युपविषात्मकः।। र र स 10.84

1. लांगली (कलिहारी) 2. कुचला 3. कनेर
4. भॉग 5. भल्लातक 6. धत्तूरा
7. अर्क

विषतिन्दुकबीजं च त्वहिफेनञ्च रेचकम्।
धत्तूरबीजं विजया गुञ्जा भल्लातकाह्वयः।।
अर्कक्षीरं स्नुहीक्षीरं लांगली करवीरकम्।
समाख्यातो गणोऽयं तु बुधैरुपविषा भिधः।। र त 24.163–164

1. विषतिन्दुक बीज 2. अहिफेन 3. जयपाल
4. धत्तूरबीज 5. विजया (भॉग) 6. गुञ्जा
7. भल्लातक 8. अर्कक्षीर 9. स्नुहीक्षीर
10. लांगली 11. करवीर

अग्र औषधि वर्ग –

सन्दर्भ एवं कुल द्रव्य संख्या –

संहिता	सन्दर्भ	कुल अग्र द्रव्य संख्या
चरक संहिता	च.सू. 25.40	152 (156 – गणना करने पर)
अष्टांग संग्रह	अ सं 13.3	155
अष्टांग हृदय	अ) उ 40.48–58	54

चरकोक्त अग्र औषधि वर्ग –

1. अन्नं वृत्तिकराणां श्रेष्ठम्
2. उदकमाश्वासकराणाम्
3. (सुरा श्रमहराणाम्)
4. क्षीरं जीवनीयानाम्
5. मांसं बृंहणीयानाम्
6. रसस्तर्पणीयानाम्
7. लवणमन्नद्रव्यरुचिकराणाम्
8. अम्लं हृदयानाम्
9. कुक्कुटो बल्यानाम्
10. नक्ररेतो वृष्याणाम्
11. मधु श्लेष्मपित्तप्रशमनानाम्
12. सर्पिर्वातपित्तप्रशमनानाम्

2020-7-11

13. तैलं वातश्लेष्मप्रशमनानाम्
14. वमनं श्लेष्महराणाम्
15. विरेचनं पित्तहराणाम्
16. बस्तिर्वातहराणाम्
17. स्वेदो मार्दवकराणाम्
18. व्यायामः स्थैर्यकराणाम्
19. क्षारः पुंस्त्वोपघातिनाम्
20. (तिन्दुकमनन्नद्रव्यरुचिकराणाम्)
21. आमं कपित्थमकण्ठ्यानाम्
22. आविकं सर्पिरहृदयानाम्
23. अजाक्षीरं शोषघ्नस्तन्यसात्म्यरक्तसांग्राहिकरक्तपित्तप्रशमनानाम्
24. अविक्षीरं श्लेष्मपित्तजननानाम्
25. महिषीक्षीरं स्वप्नजननानाम्
26. मन्दकं दध्यभिष्यन्दकराणाम्
27. गवेधुकान्नं कर्शनीयानाम्
28. उद्दालकान्नं विरूक्षणीयानाम्
29. इक्षुर्मूत्रजननानाम्
30. यवाः पुरीषजननानाम्
31. जाम्बवं वातजननानाम्

32. शष्कुल्यः श्लेष्मपित्तजननानाम्
33. कुलत्था अम्लपित्तजननानाम्
34. माषाः श्लेष्मपित्तजननानाम्
35. मदनफलं वमनास्थापनानुवासनोपयोगिनाम्
36. त्रिवृत् सुखविरेचनानाम्
37. चतुरंगुलो मृदुविरेचनानाम्
38. स्नुक्पयस्तीक्ष्णविरेचननाम्
39. प्रत्यक्पुष्पा शिरोविरेचनानाम्
40. विडंगं क्रिमिघ्नानाम्
41. शिरीषो विषघ्नानाम्
42. खदिरः कुष्ठघ्नानाम्
43. रास्ना वातहराणाम्
44. आमलकं वयःस्थापनानाम्
45. हरीतकी पथ्यानाम्
46. एरण्डमूलं वृष्यवातहराणाम्
47. पिप्पलीमूलं दीपनीयपाचनीयानाहप्रशमनानाम्
48. चित्रकमूलं दीपनीयपाचनीयगुदशोथार्शःशूलहराणाम्
49. पुष्करमूलं हिक्काश्वासकासपार्श्वशूलहराणाम्
50. मुस्तं सांग्राहिकदीपनीयपाचनीयानाम्

2020-7-1

51. उदीच्यं निर्वापणदीपनीयपाचनीयच्छर्द्यतीसारहराणाम्
52. कट्वंगं सांग्राहिकपाचनीयदीपनीयानाम्
53. अनन्ता सांग्राहिकरक्तपित्तप्रशमनानाम्
54. अमृता सांग्राहिकवातहरदीपनीयश्लेष्मशोणितविबन्धप्रशमनानाम्
55. बिल्वं सांग्राहिकदीपनीयवातकफप्रशमनानाम्
56. अतिविषा दीपनीयपाचनीयसांग्राहिकसर्वदोषहराणाम्
57. उत्पलकुमुदपद्मकिञ्जल्कः सांग्राहिकरक्तपित्तप्रशमनानाम्
58. दुरालभा पित्तश्लेष्मप्रशमनानाम्
59. गन्धप्रियंगु शोणितपित्तातियोगप्रशमनानाम्
60. कुटजत्वक् श्लेष्मपित्तरक्तसांग्राहिकोपशोषणानाम्
61. काश्मर्यफलं रक्तसांग्राहिकरक्तपित्तप्रशमनानाम्
62. पृश्निपर्णी सांग्राहिकवातहरदीपनीयवृष्याणाम्
63. विदारिगन्धा वृष्यसर्वदोषहराणाम्
64. बला सांग्राहिकबल्यवातहराणाम्
65. गोक्षुरको मूत्रकृच्छ्रानिलहराणाम्
66. हिंगुनिर्यासश्छेदनीयदीपनीयानुलोमिकवातकफप्रशमनानाम्
67. अम्लवेतसो भेदनीयदीपनीयानुलोमिकवातश्लेष्महराणाम्
68. यावशूकः स्रंसनीयपाचनीयार्शोघ्नानाम्
69. तक्राभ्यासो ग्रहणीदोषशोफार्शोघृतव्यापत्प्रशमनानाम्

70. क्रव्यान्मांसरसाभ्यासो ग्रहणीदोषशोषार्शोघ्नानाम्
71. क्षीरघृताभ्यासो रसायनानाम्
72. समघृतसक्तुप्राशाभ्यासो वृष्योदावर्तहराणाम्
73. तैलगण्डूषाभ्यासो दन्तबलरुचिकराणाम्
74. चन्दनं दुर्गन्धहरदाहनिर्वापणलेपनानाम्
75. रास्नागुरुणी शीतापनयनप्रलेपनानाम्
76. लामज्जकोशीरं दाहत्वग्दोषस्वेदापनयनप्रलेपनानाम्
77. कुष्ठं वातहराभ्यंगोपनाहोपयोगिनाम्
78. मधुकं चक्षुष्यवृष्यकेश्यकण्ठ्यवर्ण्यविरजनीयरोपणीयानाम्
79. वायुः प्राणसंज्ञाप्रदानहेतूनाम्
80. अग्निरात्मस्तम्भशीतशूलोद्वेपनप्रशमनानाम्
81. जलं स्तम्भनीयानाम्
82. मृद्भृष्टलोष्ट्रनिर्वापितमुदकं तृष्णाच्छर्द्यतियोगप्रशमनानाम्
83. अतिमात्रशनमामप्रदोषहेतूनाम्
84. यथाग्न्यभ्यवहारोऽग्निसन्धुक्षणानाम्
85. यथासात्म्यं चेष्टाभ्यवहारौ सेव्यानाम्
86. कालभोजनमारोग्यकराणाम्
87. तृप्तिराहारगुणानाम्
88. वेगसन्धारणमनारोग्यकराणाम्

2020-7-11

89. मद्यं सौमनस्यजननानाम्
90. मद्याक्षेपो धीधृतिस्मृतिहराणाम्
91. गुरुभोजनं दुर्विपाककराणाम्
92. एकाशनभोजनं सुखपरिणामकराणाम्
93. स्त्रीष्वतिप्रसंगः शोषकराणाम्
94. शुक्रवेगनिग्रहः षाण्ड्यकराणाम्
95. पराघातनमन्नाश्रद्धाजननानाम्
96. अनशनमायुषो ह्रासकराणाम्
97. प्रमिताशनं कर्शनीयानाम्
98. अजीर्णाध्यशनं ग्रहणीदूषणानाम्
99. विषमाशनमग्निवैषम्यकराणाम्
100. विरुद्धवीर्याशनं निन्दितव्याधिकराणाम्
101. प्रशमः पथ्यानाम्
102. आयासः सर्वापथ्यानाम्
103. मिथ्यायोगो व्याधिकराणाम्
104. रजस्वलाभिगमनमलक्ष्मीमुखानाम्
105. ब्रह्मचर्यमायुष्याणाम्
106. परदाराभिगमनमनायुष्याणाम्
107. संकल्पो वृष्याणाम्

108. दौर्मनस्यमवृष्याणाम्
109. अयथाबलमारम्भः प्राणोपरोधिनाम्
110. विषादो रोगवर्धनानाम्
111. स्नानं श्रमहराणाम्
112. हर्षः प्रीणनानाम्
113. शोकः शोषणानाम्
114. निवृत्तिः पुष्टिकराणाम्
115. पुष्टिः स्वप्नकराणाम्
116. अतिस्वप्नस्तन्द्रकराणाम्
117. सर्वरसाभ्यासो बलकराणाम्
118. एकरसाभ्यासो दौर्बल्यकराणाम्
119. गर्भशल्यमाहार्याणाम्
120. अजीर्णमुद्धार्याणाम्
121. बालो मृदुभेषजीयानाम्
122. वृद्धो याप्यानाम्
123. गर्भिणी तीक्ष्णौषधव्यवायव्यायामवर्जनीयानाम्
124. सौमनस्यं गर्भधारणानाम्
125. सन्निपातो दुश्चिकित्स्यानाम्
126. आमो विषमचिकित्सानाम्

2020-7-11

127. ज्वरो रोगाणाम्
128. कुष्ठं दीर्घरोगाणाम्
129. राजयक्ष्मा रोगसमूहानाम्
130. प्रमेहोऽनुषंगिणाम्
131. जलौकसोऽनुशस्त्राणाम्
132. बस्तिस्तन्त्राणाम्
133. हिमवानौषधिभूमीनाम्
134. सोम ओषधीनाम्
135. मरुभूमिरारोग्यदेशानाम्
136. अनूपोऽहितदेशानाम्
137. निर्देशकारित्वमातुरगुणानाम्
138. भिषक् चिकित्सांगानाम्
139. नास्तिको वर्ज्यानाम्
140. लौल्यं क्लेशकराणाम्
141. अनिर्देशकारित्वमरिष्टानाम्
142. अनिर्वेदो वार्तलक्षणानाम्
143. वैद्यसमूहो निःसंशयकराणाम्
144. योगो वैद्यगुणानाम्
145. विज्ञानमौषधीनाम्

146. शास्त्रसहितस्तर्कः साधनानाम्
147. संप्रतिपत्तिः कालज्ञानप्रयोजनानाम्
148. अव्यवसायः कालातिपत्तिहेतूनाम्
149. दृष्टकर्मता निःसंशयकराणाम्
150. असमर्थता भयकराणाम्
151. तद्विद्यसंभाषा बुद्धिवर्धनानाम्
152. आचार्यः शास्त्राधिगमहेतूनाम्
153. आयुर्वेदोऽमृतानाम्
154. सद्वचनमनुष्ठेयानाम्
155. असद्ग्रहणं सर्वाहितानाम्
156. सर्वसन्न्यासः सुखानाम्

वाग्भटोक्त अग्र्य औषधि वर्ग –

1. मुस्तापर्पटकं ज्वरे
2. तृषि जलं मृद्भृष्टलोष्टोद्भवम्
3. लाजाश्छर्दिषु
4. बस्तिजेषु गिरिजम्
5. मेहेषु धात्रीनिशे
6. पाण्डौ श्रेष्ठमयो
7. अभयाऽनिलकफे

2020-7-11

8. प्लीहामये पिप्पली
9. सन्धाने कृमिजा
10. विषे शुकतरुः
11. मेदोनिले गुग्गुलुः
12. वृषोऽस्रपित्ते
13. कुटजोऽतिसारे
14. भल्लातकोऽर्शःसु
15. गरेषु हेम
16. स्थूलेषु ताक्ष्यम्
17. क्रिमिषु कृमिघ्नम्
18. शोषे सुरा
19. च्छागपयोऽथ मांसम्
20. अक्ष्यामयेषु त्रिफला
21. गुडूची वातास्रगे
22. मथितं ग्रहण्याम्
23. कुष्ठेषु सेव्यः खदिरस्य सारः
24. सर्वेषु रोगेषु शिलाह्वयम्
25. उन्मादं घृतमनवम्
26. शोकं मद्यम्

27. व्यपस्मृतिं ब्राह्मी
28. निद्रानाशं क्षीरं जयति
29. रसाला प्रतिश्यायम्
30. मांसं कार्श्यम्
31. लशुनः प्रभञ्जनम्
32. स्तब्धगात्रतां स्वेदः
33. गुडमञ्जर्याः खपुरो नस्यात् स्कन्धांसबाहुरुजम्
34. नवनीतखण्डमर्दितमौष्ट्रं मूत्रं पयश्च हन्त्युदरम्
35. नस्यं मूर्धविकारान्
36. विद्रधिमचिरोत्थमस्रविस्रावः
37. नस्यं कवलो मुखजान्
38. नस्याञ्जनतर्पणानि नेत्ररुजः
39. वृद्धत्वं क्षीरघृते
40. मूर्च्छां शीताम्बुमारुतच्छायाः
41. समशुक्तार्द्रकमात्रा मन्दे वह्नौ
42. श्रमे सुरा स्नानम्
43. दुःखसहत्वे स्थैर्ये व्यायामो
44. गोक्षुरुर्हितः कृच्छ्रे
45. कासे निदिग्धिका

2020-7-11

46. पार्श्वशूले पुष्करजा जटा
47. वयसः स्थापने धात्री
48. त्रिफला गुग्गुलुर्व्रणे
49. बस्तिर्वातविकारान्
50. पैत्तान् रेकः
51. कफोद्भवान् वमनम्
52. क्षौद्रं जयति बलासम्
53. सर्पिः पित्तम्
54. समीरणं तैलम्

जांगम गण

क्षीराष्टक –

अविक्षीरमजाक्षीरं गोक्षीरं माहिषं च यत्।
उष्ट्रीणामथ नागीनां वडवायाः स्त्रियास्तथा।। च.सू. 1.106

अवि दुग्ध + अजा दुग्ध + गोदुग्ध + माहिष दुग्ध + उष्ट्री दुग्ध + हस्तिनी दुग्ध + अश्व दुग्ध + स्त्री दुग्ध

मूत्राष्टक –

अविमूत्रमजामूत्रं गोमूत्रं माहिषं च यत्।।
हस्तिमूत्रमथोष्ट्रस्य हयस्य च खरस्य च। च.सू. 1.93-94

अविमूत्र + अजामूत्र + गोमूत्र + माहिष मूत्र + हस्ति मूत्र + उष्ट्र मूत्र + अश्व मूत्र + गर्दभ मूत्र

प्रथम चार प्राणियों के मादा का तथा अन्तिम चार प्राणियों के नर का मूत्र ग्रहण करना चाहिए।

पित्त पञ्चक –

पित्तं पञ्चविधं मत्स्यगवाश्वनरबर्हिजम्। रसार्णव

मत्स्य पित्त + गोपित्त + अश्व पित्त + नर पित्त + मयूर पित्त

पार्थिव गण

लवण पञ्चक –

सैन्धवञ्चाथ सामुद्रं विडं सौवर्चलं तथा।
रोमकञ्चेति विज्ञेयं बुधैर्लवणपञ्चकम्।। र त 2.3

सैन्धव लवण (Rock salt) + सामुद्र लवण (sea salt) + विड् लवण (omononium chloride) + सौवर्चल लवण (black salt) + रोमक लवण (black salt)

क्षार द्वय –

स्वर्जिका यावशूकश्च क्षारद्वयमुदाहृतम्।
भा.प्र. हरीतक्यादिवर्ग।257

स्वर्जिक्षार + यवक्षार

2020-7-11

क्षाराष्टक –

पलाशवज्रिशिखरिचिञ्चाऽर्कतिलानालजाः।।

यवजः स्वर्जिका चेति क्षाराष्टकमुदाहृतम्।

भा.प्र. हरीतक्यादिवर्ग।258–259

पलाश क्षार + वज्रिक्षार + शिखरि क्षार + चिञ्चा क्षार + अर्कक्षार + तिलनाल क्षार + यवक्षार + स्वर्जिक्षार

• • •

11. द्रव्य नामकरण सिद्धान्त

द्रव्य नामकरण का सिद्धान्त

नरहरि पण्डित मतेन –

नामानि क्वचिदिह रूढ़ितः प्रभावात् देश्योक्त्या क्वचन च लाञ्छनोपमाभ्याम्।

वीर्य्येण क्वचिदितराह्वयादिदेशात् द्रव्याणां ध्रुवमिति सप्तधोदितानि।। रा.नि. प्रस्तावना।13

(1) रूढ़ि (2) प्रभाव (3) देश्योक्ति (4) लाञ्छन

(5) उपमा (6) वीर्य (7) इतराह्वय

द्रव्य नामकरण के आधार

(1) बाह्य रचना के आधार पर

(2) उपमा के आधार पर

(3) देश या उत्पत्ति स्थान के आधार पर

2020-7-1

(4) काल के आधार पर
(5) गन्ध के आधार पर
(6) रस के आधार पर
(7) कर्म के आधार पर
(8) प्राचीन मान्यताओं एवं धार्मिक अनुष्ठानों के आधार पर
(9) सामान्य प्रयोगों के आधार पर
(10) ऐतिहासिकता के आधार पर
(11) विभिन्न जन्तुओं एवं उनके अंग-प्रत्यंग के आधार पर
(12) विशेष आन्तरिक संरचना के आधार पर
(13) लाञ्छन चिह्न के आधार पर
(14) रूढ़ि के आधार पर
(15) वीर्य के आधार पर
(16) इतराह्व

पर्याय

एकं तु नाम प्रथितं बहूनामेकस्य नामानि तथा बहूनि।
द्रव्यस्य जात्याकृतिवर्णवीर्यरसप्रभावादिगुर्णभवन्ति।। ध.नि.9

द्रव्य की जाति, आकृति, वर्ण, वीर्य, रस, प्रभाव आदि गुणों से बहुत द्रव्यों का एक ही नाम विख्यात होता है और एक ही द्रव्य के बहुत से नाम होते हैं।

महत्त्व –

अनामविन्मोहमुपैति वैद्यो न वेत्ति पश्यन्नपि भेषजानि। ध नि 13

जो वैद्य औषध के नाम (एवं पर्याय) को नहीं जानते हैं, वे सन्देहयुक्त होते हैं। वे औषधियों को देखते हुए भी नहीं जानते या नहीं पहचान पाते।

• • •

2020-7-11

12. भेषज परीक्षा विधि आदि

भेषज परीक्षा विधि

करणं पुनर्भेषजम्। भेषजं नाम तद्यदुपकरणायोपकल्पते भिषजो धातुसाम्याभिनिर्वृत्तौ प्रयतमानस्य विशेषतश्चोपायान्तेभ्यः।

तद्द्विविधं व्यपाश्रयभेदात् – दैवव्यपाश्रयं, युक्तिव्यपाश्रयं चेति।

तत्र दैवव्यपाश्रयं – मन्त्रौषधिमणिमंगलबल्युपहारहोमनियमप्रायश्चित्तोपवासस्वस्त्ययनप्रणिपातगमनादि, युक्तिव्यपाश्रयं – संशोधनोपशमने चेष्टाश्च दृष्टफलाः। एतच्चैव भेषजमंगभेदादपि द्विविधं – द्रव्यभूतम्, अद्रव्यभूतं च। यत्र यददव्यभूतं तदुपायाभिप्लुतम्। उपायो नाम भयदर्शनविस्मापनविस्मारणक्षोभणहर्षणभर्त्सनवधबन्धस्वप्नसंवाहनादिरमूर्तो भावविशेषो यथोक्ताः सिद्धयुपायाश्चोपायाभिप्लुता इति। यत्तु

द्रव्यभूतं तद्वमनादिषु योगमुपैति। तस्यापीयं परीक्षा – इदमेवंप्रकृत्यैवंगुणमेवंप्रभावमस्मिन् देशे जातमस्मिन्नृतावेवं गृहीतमेवं निहितमेवमुपस्कृतमनया च मात्रया युक्तमस्मिन् व्याधावेवंविधस्य पुरुषस्यैवतावन्तं दोषमपकर्षत्युपशमयति वा, यदन्यदपि चैवंविधं भेषजं भवेत्तच्चानेन विशेषेण युक्तमिति।।

च.वि. 8.87

भेषज को 'करण' कहते हैं। भेषज वह है - जो धातुसाम्य (रोगमुक्ति) के लिए प्रयत्नशील चिकित्सक के लिए विशेष कर कार्ययोनि, प्रवृत्ति, देश, काल तथा उपाय पर्यन्त पूर्वोक्त साधन सहायक होता है।

आश्रय भेद से भेषज के दो प्रकार –

1. दैवव्यपाश्रय 2. युक्तिव्यपाश्रय

1. दैवव्यपाश्रय भेषज – दैवव्यपाश्रय के अन्तर्गत मन्त्र, औषधि, मणि, मंगल, बलि, उपहार, होम, नियम, प्रायश्चित्तादि ये सभी विधियाँ समाविष्ट हैं।

2. युक्तिव्यपाश्रय भेषज – युक्तिव्यपाश्रय के अन्तर्गत संशोधन, उपशमन और प्रत्यक्ष फलदायी समस्त क्रियायें समाविष्ट हैं।

अंगभेद से भेषज के दो प्रकार – 1. द्रव्यभूत 2. अद्रव्यभूत

1. अद्रव्यभूत भेषज – अद्रव्यभूत उपायों द्वारा व्याप्त है। उपाय हैं

2020-7-1

– भयदर्शन, विस्मापन, विस्मारण, क्षोभण, हर्षण, भर्त्सन, वध, बन्धन आदि।

2. द्रव्यभूत भेषज – द्रव्यभूत का प्रयोग वमनादि मूर्त्त क्रियाओं में होता है।

इस द्रव्य की इस प्रकार परीक्षा करनी चाहिए –

1. यह द्रव्य इस प्रकृति (स्वभाव) का है।
2. यह इस द्रव्य का गुण है।
3. यह इस द्रव्य का प्रभाव है।
4. यह द्रव्य इस देश में, ऋतु में उत्पन्न हुआ है।
5. यह द्रव्य इस ऋतु में ग्रहण किया गया।
6. यह द्रव्य इस स्थान पर इस तरह संग्रहीत किया गया।
7. यह द्रव्य इन क्रियाओं द्वारा निर्मित किया गया। आदि।

द्रव्य संग्रह

तानि तु द्रव्याणि देश–काल–गुण–भाजन– संपद्वीर्यबलाधानात् क्रियासमर्थतमानि भवन्ति।। च क 1.7

द्रव्यसंग्रहार्थ प्रशस्त भूमि –

श्वभ्रशर्कराश्मविषमवल्मीकश्मशानाघातनदेवतायतन सिकताभिरनुपहतामनूषरामभंगुरामदूरोदकां स्निग्धां प्ररोहवतीं मृद्वीं

स्थिरां समां कृष्णां गौरीं लोहितां वा भूमिमौषधग्रहणाय परीक्षेत। सु.सू. 36.3

– श्वभ्र – शर्करा – अश्म – विषम – वल्मीक – श्मशान – आघातन – देवतायन – सिकता आदि से रहित भूमि

– अनूपर – अभंगुर – उदक युक्त – स्निग्ध – प्ररोहवती – मृदु – स्थिर – सम – कृष्ण – गौरी – लोहित वर्णीय मृत्तिका से युक्त

प्रयोज्यांगानुसार संग्रह काल

सामान्य काल (शा.पू. 1.59)–

- सभी कार्यों के लिए – शरद् ऋतु
- वमन एवं विरेचन कर्म के लिए – वसन्त ऋतु
- प्रातःकाल में (**गृह्णीयात्तानि सुमनाः शुचिः प्रातः सुवासरे।।** शा.पू. 1.56)

विशेष काल –

- आचार्य चरक मतेन – 9 (च.क. 1)
- आचार्य सुश्रुत मतेन – 6 (सु.सू. 36)
- आचार्य नरहरि पण्डित मतेन – 5

तेषां शाखापलाशमचिरप्ररूढं वर्षावसन्तयोर्ग्राह्यं,

ग्रीष्मे मूलानि शिशिरे वा शीर्णप्ररूढपर्णानां,

2020-7-1

शरदि त्वक्कन्दक्षीराणि, हेमन्ते साराणि, यथर्तु पुष्पफलमिति।। च.क. 1/10

द्रव्य अंग	आचार्य चरक मतेन	आचार्य सुश्रुत द्वारा उल्लिखित अन्य का मत	आचार्य नरहरि पण्डित मतेन
शाखा	वर्षा एवं वसन्त	–	–
पत्र	पल्लव – वर्षा एवं वसन्त	वर्षा	ग्रीष्म
मूल	शीर्णप्ररूढ़पर्ण – ग्रीष्म एवं शिशिर	प्रावृट्	शिशिर
त्वक्	शरद्	शरद्	–
कन्द	शरद्	–	हेमन्त
क्षीर	शरद्	हेमन्त	–
सार	हेमन्त	वसन्त	–
पुष्प	यथा काल	–	वसन्त
फल	यथा काल	ग्रीष्म	–
पञ्चांग	–	–	शरद्

आचार्य सुश्रुत मतेन – सौम्य औषधियों को सौम्य ऋतु में तथा आग्नेय औषधियों को आग्नेय ऋतु में संग्रह करना चाहिए।

द्रव्य संग्रह स्थल

सामान्य –

आग्नेया विन्ध्यशैलाद्याः सौम्यो हिमगिरिर्मतः। शा.पू. 1.55

- आग्नेय द्रव्य → विन्ध्य पर्वत क्षेत्र
- सौम्य द्रव्य → हिमालय पर्वत क्षेत्र

पञ्चमहाभूतानुसार (सु.सू. 36.6) –

- विरेचनार्थ द्रव्य → पृथिवी एवं जल महाभूत प्रधान भूमि से
- वमनार्थ द्रव्य → अग्नि, आकाश एवं वायु महाभूत प्रधान भूमि से
- उभय कर्मार्थ द्रव्य → पञ्चमहाभूत प्रधान भूमि से
- शमन द्रव्य → आकाश महाभूत प्रधान भूमि से

देश एवं भूमि

देशस्त्वधिष्ठानम्।। च.वि. 8.75

रोग या चिकित्सोपयोगी द्रव्य मात्र का जो आधार है वह देश है।

देशो भूमिरातुरश्च। च.वि. 8.84

भूमि और आतुर को देश कहते हैं।

2020-7-11

भेद –

..... भूमिदेहप्रभेदेन देशमाहुरिह द्विधा।
जांगलं वातभूयिष्ठमनूपं तु कफोल्वणम्।।
साधारणं सममलं त्रिधा भूदेशमादिशेत्। अ.ह.सू. 1/23–24

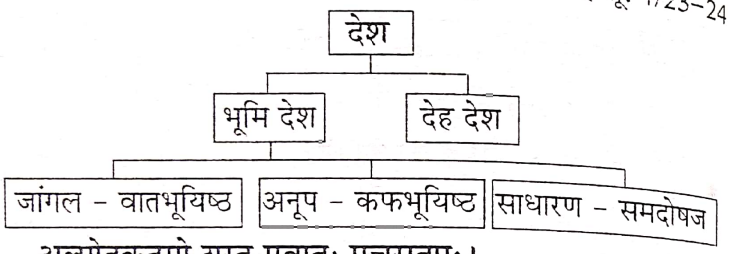

अल्पोदकद्रुमो यस्तु प्रवातः प्रचुरातपः।
ज्ञेयः स जांगलो देशः स्वल्परोगतमोऽपि च।।
प्रचुरोदकवृक्षो यो निवातो दुर्लभातपः।
अनूपो बहुदोषश्च, समः साधारणो मतः।। च.वि. 3.47–48

देश के भेद		
जांगल देश	आनूप देश	साधारण देश
• अल्प जलाशय एवं अल्प वृक्ष	• प्रचुर जलाशय एवं प्रचुर वृक्ष	• सम
• प्रवात एवं प्रचुर मात्रा में आतप	• निवात एवं दुर्लभ मात्रा में आतप	

जांगल देश	आनूप देश	साधारण देश
• स्वल्प रोग युक्त देश • **'मरुभूमिरारोग्य-देशानाम्।'** च.सू. 25.40	• बहु दोष युक्त देश • **'अनूपोऽहित-देशानाम्।'** च.सू. 25.40	

भेषजागार

सन्दर्भ –

- सुश्रुत संहिता सूत्रस्थान 36 एवं 38
- अष्टांग संग्रह सूत्रस्थान 8

प्लोतमृद्भाण्डफलकशंकुविन्यस्तभेषजम्।
प्रशस्तायां दिशि शुचौ भेषजागारमिष्यते।। सु.सू. 36.17
धूमवर्षानिलक्लेदैः सर्वर्तुष्वनभिद्रुते।
ग्राहयित्वा गृहे न्यस्येद्विधिनौषधसंग्रहम्।। सु.सू. 38.81

– प्लोत – मृत्तिका भाण्ड – फलक – शंकु पर औषध रखने की पूर्व या उत्तर दिशा में अच्छी स्वस्थ व्यवस्था हो

– उत्तम भूमि पर निर्मित

– धूम – वर्षा – वायु – क्लेद से रहित गृह।

2020-7-11

प्रयोज्यांग

औद्भिद् द्रव्यों के प्रयाज्यांग –

मूलत्वक्सारनिर्यासनाल(ड)स्वरसपल्लवाः।
क्षाराः क्षीरं फलं पुष्पं भस्म तैलानि कण्टकाः।।
पत्राणि शुंगाः कन्दाश्च प्ररोहाश्चौद्भिदो गणः। च.सू. 1.73-74

– मूल	– त्वक्	– सार	– निर्यास
– नाल	– स्वरस	– पल्लव	– क्षार
– क्षीर	– फल	– पुष्प	– भस्म
– तैल	– कण्टक	– पत्र	– शुंग
– कन्द	– प्ररोह		

जांगम द्रव्यों के प्रयोज्यांग –

मधूनि गोरसाः पित्तं वसा मज्जाऽसृगामिषम्।।
विण्मूत्रचर्मरेतोस्थिस्नायुशृंगनखाः खुराः।
जंगमेभ्यः प्रयुज्यन्ते केशा लोमानि रोचनाः।। च.सू. 1.68-69

– मधु	– गोरस	– पित्त	– वसा
– मज्जा	– रक्त	– आमिष	– विट्
– मूत्र	– चर्म	– रेतस्	– अस्थि
– स्नायु	– शृंग	– नख	– खुर
– केश	– लोम	– रोचना	

• • •

पेपर 1 भाग ब

13. द्रव्य शोधनादि प्रकरण

शोधन प्रकरण

परिभाषा –

शोधनं कर्म विज्ञेयं द्रव्यदोषनिवारणम्। प्रियव्रत शर्मा
उद्दिष्टैरौषधैः सार्द्धं क्रियते पेषणादिकम्।
मलविच्छित्तये यत्तु शोधनं तदिहोच्यते।। र.त. 2/52

किसी भी द्रव्य के मल को दूर करने के लिए बताई गई औषधियों के साथ मिलाकर मर्दन, क्षालन, निर्वाप आदि कर्म करने को शोधन कहा जाता है।

विविध द्रव्यों की शोधन विधि

वत्सनाभ – वत्सनाभ के चने के बराबर छोटे-छोटे टुकड़े कर गोदुग्ध अजादुग्ध में दोलायन्त्र विधि से 6 घण्टे तक स्वेदन कर लेने से शुद्ध हो जाता है।

कुचला – कुचला बीज को काञ्जी में डुबो कर 3 दिन तक पड़ा

2020-7-1

रहने दें तथा तीन दिन बाद बीजों को काञ्जी से निकालकर बाहरी त्वचा को छीलकर अलग कर दें तथा धूप में सुखा कर लोहे के इमामदस्ते में कूटकर चूर्ण को रख लें।

जयपाल – जयपाल के नूतन बीज को लेकर सर्वप्रथम उसका छिलका तथा बीज के दो दलों को अलग करके बीच के हरें रंग के अंकुर सदृश जीभ को निकाल दें। अब इस जीभरहित बीज मज्जा को एक कपड़े में बाँधकर दोलायन्त्र विधि से 1 प्रहर तक स्वेदन कर शुद्ध करें।

धत्तूर – धत्तूर बीज को दोलायन्त्र विधि से गो दुग्ध में 3 घण्टे तक स्वेदन कर तत्पश्चात् गर्म जल से प्रक्षालन कर सुखा लेने से धत्तूर बीज शुद्ध हो जाता है।

भंगा – भांग की पत्ती को जल में भिगो–निचोड़ कर धूप में सुखा लेने के पश्चात् इसे गोघृत में मन्द–मन्द अग्नि पर भून लें, इस प्रकार भांग शुद्ध हो जाती है।

भल्लातक – एक मजबूत कपड़े की पोट्टली अथवा थैली में भल्लातक एवं इष्टिका चूर्ण भर कर हाथों के मध्यम दबाव से रगड़ें। जब ईंट का चूर्ण तैल से तर हो जाय और भल्लातक की त्वचा निकल जाय तब इसे गरम पानी में डालकर अच्छी प्रकार धोकर साफ कर सुखाकर रख लें।

गुञ्जा – नवीन गुञ्जा बीज के मोटे चूर्ण को द्विगुण वस्त्र की पोट्टली में बाँधकर गोदुग्ध में दोलायन्त्र विधि से 6 घण्टे (2 प्रहर) स्वेदन कर लेने से गुञ्जा बीज शुद्ध हो जाता है।

स्नुही – दो पल (8 तोला) स्नुहीदुग्ध तथा 2 तोले चिञ्चा (इमली) पत्र स्वरस (कपड़े से छना हुआ) को एकत्र मिलाकर धूप में सुखा कर रख लें, इस प्रकार स्नुहीदुग्ध शुद्ध हो जाता है।

लांगली – लांगली को गोमूत्र में एक दिन रखने से यह शुद्ध हो जाता है।

अहिफेन – जल एवं गोदुग्ध द्वारा स्वच्छ अहिफेन को आर्द्रक स्वरस की सात से इक्कीस भावना देकर सुखा कर रख लेने से अहिफेन शुद्ध हो जाता है।

अतिविषा – अतिविषा को गोमय रस में स्वेदन करके धूप में सुखा लेने सुशुद्धिकरण हो जाता है।

गुग्गुलु – गुग्गुलु को एक प्रहर तक चौगुने गोदुग्ध में स्वेदन कर शुद्ध करना चाहिए।

2020-7-11

अभाव प्रतिनिधि द्रव्य

योगरत्नाकर मतेन –

द्रव्य	प्रतिनिधि द्रव्य	द्रव्य	प्रतिनिधि द्रव्य
गुडूची सत्त्व	गुडूची स्वरस	चित्रक	– दन्ती – अपामार्ग
धन्वयास	दुरालभा	तगर	कुष्ठ
मूर्वा	जिंगिनी	अहिंस्रा	मानकन्द
लक्ष्मणा	नीलकण्ठशिखा	बकुल	कह्लार
उत्पल	पंकज	नीलोत्पल	कुमुद
कमल	कमलाक्ष	बकुल	आभा त्वक्
जातीपत्र	– लवंग – जातीफल	अर्कादि क्षीर	अर्कादि पत्र
पुष्कर	– कुष्ठ – एरण्ड मूल	स्थौणेयक	कुष्ठ
– चविका – गजपिप्पली	पिप्पलीमूल	सोमराजी	प्रपुन्नाट फल
दार्वी	हरिद्रा	रसाञ्जन	दार्वी
सौराष्ट्रिका	स्फटिक	तालीसपत्र	स्वर्णताली
भार्गी	– तालीसपत्र – कण्टकारी मूल	रुचक लवण	पांसुत्थ लवण

द्रव्य	प्रतिनिधि द्रव्य	द्रव्य	प्रतिनिधि द्रव्य
लवण	सैन्धव	यष्टीमधु	धातकी
अम्लवेतस	चुक्र	चुक्र	जम्बीरादि
द्राक्षा	काश्मरीफल	– द्राक्षा – कुसुम	मधूक
नखी	लवंग कुसुम	कस्तूरी	– कंकोल – जातीपुष्प – मालतीपुष्प या पत्र
कर्पूर	– सुगन्धि मुस्तक – ग्रन्थिपर्ण	कुंकुम	नवीन कुसुम्भ पुष्प
– श्रीखण्ड चन्दन – श्वेतचन्दन	कर्पूर		

अष्टवर्ग के प्रतिनिधि द्रव्य (भावमिश्र मतेन) –

1. जीवक ⟶ विदारीकन्द
2. ऋषभक ⟶ विदारीकन्द
3. मेदा ⟶ शतावरी
4. महामेदा ⟶ शतावरी

5. काकोली → अश्वगन्धा

6. क्षीरकाकोली → अश्वगन्धा

7. ऋद्धि → वाराहीकन्द

8. वृद्धि → वाराहीकन्द

• • •

Plant extract - FOOD VATT

Fluid extracts, oils, oleoresin

Dry, Viscous, Aqueous, Tincture

Thin.

14. प्रशस्त भेषजादि प्रकरण

प्रशस्त भैषज्य

बहुता तत्रयोग्यत्वमनेकविधकल्पना।
संपच्चेति चतुष्कोऽयं द्रव्याणां गुण उच्यते।। च.सू. 9.7

– बहुता – योग्यता – अनेकविधकल्पना – सम्पत्

तदेव युक्तं भैषज्यं यदारोग्याय कल्पते।
स चैव भिषजां श्रेष्ठो रोगेभ्यो यः प्रमोचयेत्।। च.सू. 1.134

वही भैषज्य श्रेष्ठ है जो आरोग्य दान में सक्षम हो।

बहुकल्पं बहुगुणं सम्पन्नं योग्यमौषधम्।। अ.हृ.सू. 1/28

– बहुकल्पम् – बहुगुणम् – सम्पन्न – योग्य

विरुद्ध द्रव्य सिद्धान्त

परिभाषा – जब दो या दो से अधिक औषधि द्रव्यों का संयोग रोगी के लिए हितकारक न होकर अहितकारक होता है, तब इसे 'विरोध'/'विरुद्ध संयोग'/'असंयोज्यता' कहा जाता है।

2020-7-1

यत् किञ्चिद्दोषमास्राव्यं न निर्हरति कायतः।
आहारजातं तत् सर्वमहितायोपपद्यते।। च.सू. 26.85

जो कोई द्रव्य विशेष किसी दोषविशेष को प्रकुपित कर शरीर से बाहर निर्हरण नहीं करता है, उस सम्पूर्ण द्रव्य समूह को 'अहितकारक' (विरोधी) कहते हैं।

यत्किंचिद्दोषमुत्क्लेश्य भुक्तं कायान्न निर्हरेत्।
रसादिष्वयथार्थं वा तद्विकाराय कल्पते।। सु.सू. 20.20

जो भुक्त द्रव्य दोषों को प्रकुपित कर तथा रसादियों में विकारोत्पत्ति करते हैं किन्तु शरीर से बाहर उत्सर्ग नहीं करते हैं वे विकार उत्पन्न करते हैं।

विरुद्ध द्रव्य संयोग के भेद –

आचार्य चरक मतेन – 18

यच्चापि देशकालाग्निमात्रासात्म्यानिलादिभिः।
संस्कारतो वीर्यतश्च कोष्ठावस्थाक्रमैरपि।।
परिहारोपचाराभ्यां पाकात् संयोगतोऽपि च।
विरुद्धं तच्च न हितं ह्रत्संपद्विधिभिश्च यत्।। च.सू. 26.86-87

(1) देश – विरुद्ध
(2) काल – विरुद्ध
(3) अग्नि – विरुद्ध
(4) मात्रा – विरुद्ध
(5) सात्म्य – विरुद्ध
(6) दोष – विरुद्ध

(7) संस्कार – विरुद्ध
(8) वीर्य – विरुद्ध
(9) कोष्ठ – विरुद्ध
(10) अवस्था – विरुद्ध
(11) क्रम – विरुद्ध
(12) परिहार – विरुद्ध
(13) उपचार – विरुद्ध
(14) पाक – विरुद्ध
(15) संयोग – विरुद्ध
(16) हृदय – विरुद्ध
(17) सम्पद् – विरुद्ध
(18) विधि – विरुद्ध

विरुद्ध संयोग की व्याधिजनकता –

षाण्ढ्यान्ध्यवीसर्पदकोदराणां विस्फोटकोन्मादभगन्दराणाम्।
मूर्च्छामदाध्मानगलग्रहाणां पाण्ड्वामयस्यामविषस्य चैव।।
किलासकुष्ठग्रहणीगदानां शोथाम्लपित्तज्वरपीनसानाम्।
सन्तानदोषस्य तथैव मृत्योर्विरुद्धमन्नं प्रवदन्ति हेतुम्।।

च.सू. 26.102-103

षाण्ढ्य	आन्ध्य	विसर्प	दकोदर	विस्फोट
उन्माद	भगन्दर	मूर्च्छा	मद	आध्मान
गलग्रह	पाण्डुरोग	आमविष	किलास	कुष्ठ
ग्रहणीगद	शोथ	अम्लपित्त	ज्वर	पीनस
सन्तानदोष	मृत्यु			

• • •

2020-7-11

15. निघण्टु विज्ञान

धन्वन्तरि निघण्टु -

लेखक: महेन्द्रभोगिक

काल: 10 वीं शती

वैशिष्ट्य: द्रव्यों के पर्याय सहित गुणकर्मादि का विवेचन, प्रयोगों का वर्णन, वर्गीकरण और विभाजन एक स्थान पर संग्रहीत मिलता है। इसी विवेचन शैली को परवर्ती निघण्टुकारों ने भी अपनाया है।

समस्त औषधियों को 7 वर्गों में विभाजित किया है। यथा:

- गुडूच्यादिवर्ग (136 द्रव्यों का वर्णन)
- शतपुष्पादिवर्ग (54 द्रव्य)
- चन्दनादिवर्ग (79 द्रव्य)
- करवीरादिवर्ग (75 द्रव्य)
- आम्रादिवर्ग (74 द्रव्य)

- सुवर्णादिवर्ग
- मिश्रकादिवर्ग

भावप्रकाश निघण्टु

लेखक: भावमिश्र

निवास: कविराज गणनाथ सेन मतेन: वाराणसी। प्रियव्रत शर्मा मतेन: मगध

काल: 16 वीं शती

वैशिष्ट्य: भावप्रकाश निघण्टु यह मूल ग्रन्थ भावप्रकाश में वर्णित निघण्टु भाग है। भावमिश्र ने इस निघण्टु भाग में मदनपाल का अनुसरण किया है। इसमें विषय वस्तु 23 वर्गों में विभाजित की गई है। यथा:

- हरीतक्यादि वर्ग
- कर्पूरादि वर्ग
- गुडूच्यादि वर्ग
- पुष्प वर्ग
- वटादि वर्ग
- आम्रादि वर्ग
- धात्वादि वर्ग
- धान्य वर्ग
- शाक वर्ग
- मांस वर्ग
- कृतान्न वर्ग
- वारिवर्ग
- दुग्ध वर्ग
- दधि वर्ग
- तक्र वर्ग
- नवनीत वर्ग
- घृत वर्ग
- मूत्र वर्ग
- तैल वर्ग
- सन्धान वर्ग
- मधु वर्ग
- इक्षु वर्ग
- अनेकार्थनाम वर्ग

राज निघण्टु

लेखक: नरहरि पण्डित

निवास: कश्मीर

काल: 17 वीं शती

ग्रन्थ पर्याय नाम: निघण्टु राजअभिधानचूड़ामणि

वैशिष्ट्य: नरहरि पण्डित शैव थे तथा सभी शास्त्रों में पारंगत थे। इस निघण्टु में नामों पर विशेष रूप से विचार किया गया है जिसमें संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश तथा क्षेत्रिय नामों दृष्टि में रखा गया है। द्रव्यों के नामकरण का आधार निम्नोक्त 7 विषय हैं: RPUVDAU

- रूढ़ि
- प्रभाव
- देशयोक्ति
- आकृति
- उपमा
- वीर्य
- उत्पत्तिस्थान

इस निघण्टु में 23 वर्गों में द्रव्यों का विभाजन किया गया है। यथा:

- अनूपादि
- शताह्वादि
- मूलकादि
- करवीरादि
- सुवर्णादि
- शाल्यादि
- सिंहादि वर्ग
- मिश्रकादि
- भूम्यादि
- पर्पटादि
- शाल्मल्यादि
- आम्रादि
- पानीयादि
- मांस वर्ग
- रोगादि
- एकार्थादि
- गुडूच्यादि
- पिप्पल्यादि
- प्रभद्रादि
- चन्दनादि
- क्षीरादि
- मनुष्यादि वर्ग
- सत्वादि

• • •

16. Pharmacology

Definitions

Pharmacology – The science of drugs is known as 'Pharmacology'.

Pharmacon (drug) + **logos** (science) = Pharmacology

Pharmcodynamics – The study of effects of drugs on the body is known as 'Pharmacodynamics'.

Pharmacokinetics – The study of bodies reaction towards the drug is known as 'Pharmacokinetics'.

Drug – A substance that is used for diagnosis, treatment and prevention of diseases is known as a 'Drug'.

Father of Pharmacology – Oswald Schmiedeberg

2020-7

Essential drugs – As per WHO Essential drugs are 'those that satisfy the priority health care needs of the population'.

Bio-availability – The rate and extent of absorption of a drug from a given dosage. It is determined by drug's concentration - time curve in blood or by its excretion in the urine.

Synergism – The action of one drug is facilitated or increased by the other drug; this relationship is known as 'Synergism'.

Antagonism – The action of one drug is decreased or abolished by the other drug; this relationship is known as 'Antagonism'.

Drug dosage – The appropriate amount of a drug needed to produce required degree of response is known as its dosage.

Adverse drug effect – An undesirable or unintended consequence of a drug administration is known as 'Adverse drug effect'.

Pharmacovigilence – The science and activities related to the recognition, evaluation, understanding and

prevention of adverse effects or any complications related to drugs is known as 'Pharmacovigilence'.

Drug Nomenclature

A drug has three categories of names -

1. Chemical name
2. Non-proprietary name
3. Proprietary name

Routes of Drug Administration

1. Local routes
   a. Topical
   b. Intra-arterial
   c. Intra-articular
2. Systemic routes
   a. Oral
   b. Sub-lingual/ Buccal
   c. Rectal
   d. Cutaneous
   e. Inhalation
   f. Nasal
   g. Parenteral

2020-7

i. Subcutaneous (s.c.)

ii. Intra-muscular (i.m.)

iii. Intra-venous (i.v.)

iv. Inter-dermal

Routes of Drug Excretion

1. Urine
2. Feces/ stool
3. Saliva
4. Sweat
5. Exhaled air
6. Milk

Drugs for Cardio-vascular System

Beta – Blockers

1. Propranolol
2. Labetalol
3. Carvedilol
4. Pindolol
5. Oxprenolol
6. Metoprolol

7. Atenolol
8. Bisoprolol
9. Esmolol
10. Nebivolol
11. Celiprolol

Cardiac Glycosides

1. Digoxin

Anti-arrhythmic drugs

1. Membrane stabilizing agents (Na+ channel blockers) - Quinidine - Procainamide - Lidocaine - Mexiletine - Adenosine
2. Anti-adrenergic agents (Beta blockers) - Propranolol - Esmolol
3. Agents widening AP (prolong repolarization) - - Amiodarone - Sotalol
4. Calcium channel blockers - - Verapamil - Diltiazem

Anti-hypertensive drugs

1. Sympathetic inhibitors - Clonidine - Methyldopa - Reserpine - Prazosin - Hydralazine - Indapamide - Dexazosin - Lacidipine

2020-7-1

2. ACE inhibitors - Captopril - Enalapril maleate - Lisinopril - Perindopril - Ramipril - Losartan potassium - Irbesartan - Valsartan - Olmesartan - Eprosartan mesylate - Amrinone etc.

Diuretics

1. Frusemide
2. Torasemide
3. Bumetanide
4. Spironolactone
5. Triamterne
6. Hydrochlorothiazide
7. Chlorthalidone
8. Acetazolamide
9. Telmisartan
10. Glyceral trinitrate
11. Nicorandil
12. Isosorbid dinitrate
13. Nifedipine
14. Verapamil

15. Diltiazem
16. Amlodipine

Peripheral vasodilators

1. Isoxsuprine
2. Cinnarizine
3. Cyclandelate
4. Pentoxifylline etc.

Coagulants

1. Vitamin K
2. Ethamsylate
3. Tranexamic acid
4. Calcium dobesilate
5. Aprotinin etc.

Anti-coagulants

1. Heparin
2. Daltiparin sodium
3. Reviparin sodium
4. Enoxaparin
5. Streptokinase

2020-7-

6. Urokinase
7. Abciximab
8. Tirofiban

Anti-platelet drugs

1. Aspirin
2. Clopidogrel
3. Cilostazol
4. Dipyridamole
5. Ticlopidine
6. Prasugrel etc.

Vasopressors

1. Dopamine HCl
2. Dobutamine HCl
3. Mephentermine
4. Phenylephrine

Drugs for pulmonary hypertension

1. Bosentan
2. Ambrisentan

Drugs for Musculo-Skeletal System

Opioid analgesics

1. Dextropropoxyphene
2. Pentazocine
3. Buprenorphine
4. Morphine sulphate
5. Tramadol HCl
6. Pethidine HCl etc.

Non-opioid analgesics

1. Aspirin
2. Leflunomide
3. Ibuprofen
4. Paracetamol
5. Carbamazepine
6. Naproxen
7. Auranofin
8. Indomethacin
9. Flurbiprofen
10. Mefenamic acid

2020-7

11. Piroxicam
12. Tenoxicam
13. Lornoxicam
14. Diclofenac sodium/ potassium
15. Aceclofenac potassium
16. Nimesulide
17. Diacerin
18. Glucosamine sulphate
19. Oxyphenbutazone

Muscle Relaxants

1. Dicyclomine
2. Tizanidine
3. Baclofen
4. Chlormezanone
5. Methocarbamol
6. Carisoprodol
7. Valethamate
8. Drotaverine
9. Thiocolchiside
10. Metaxalone

Neuromuscular Drugs

1. Anticholinesterase
2. Pyridostigmine bromide
3. Rivastigmine

Antibiotics

Penicillins

1. Benzyl penicillin
2. Ampicillin
3. Cloxacillin
4. Carbenicillin
5. Piperacillin
6. Amoxycillin

Carbapenem

1. Meropenem trihydrate
2. Imipenem
3. Faropenem

Cephalosporins

1. Cephazolin sodium
2. Cefixine trihydrate

3. Ceftazidine
4. Cefalexin
5. Cefadroxil
6. Cefuroxime
7. Cefoperazone sodium
8. Cefpodoxime proxetil
9. Cefdinir etc.

Aminoglycosides

1. Amikacin
2. Tobramycin sulphate
3. Neomycin
4. Gentamicin
5. Kanamycin
6. Netilmicin

Tetracyclines

1. Doxycycline
2. Tetracycline
3. Minocycline

Chloramphenicol

1. Chloramphenicol

Macrolids

1. Azithromycin
2. Roxithromycin
3. Clarithromycin
4. Clindamycin
5. Erythromycin
6. Polymyxin B
7. Spiramycin
8. Vancomycin
9. Spectinomycin etc.

Oxazolidinones

1. Linezolid

Quinolones

1. Ciprofloxacin
2. Gemifloxacin
3. Sparfloxacin
4. Norfloxacin
5. Lomefloxacin
6. Levofloxacin

2020-

7. Ofloxacin
8. Nalidixic acid

Sulphonamides

1. Co-trimoxazole
2. Timethoprim
3. Sulphadiazine
4. Sulfamoxole

Anti-fungals

1. Amphotericin B
2. Nystatin
3. Hamycin
4. Griseofulvin
5. Ketoconazole
6. Terbinafine
7. Fluconazole
8. Itraconazole

Anti-malarials

1. Sulfonamides
2. Chloroquine

3. Amodiaquine
4. Mefloquine
5. Quinine sulphate
6. Primaquine
7. Artesunate
8. Arteether
9. Lumefatrine
10. Proguanil HCl

Anti-leprotic drugs

1. Dapsone
2. Clofazimine

Anti-viral drugs

1. Acyclovir
2. Famciclovir
3. Ribavirin
4. Interferons
5. Amantadine

Anti-retroviral drugs

1. Abacavir sulphate

2020-7

2. Didanosine
3. Lamivudine
4. Stavudine
5. Zidovudine
6. Adefovir
7. Tenofovir
8. Oseltamivir
9. Atazanavir etc.

Drugs for Protozoal infections

1. Metronidazole
2. Ornidazole
3. Tinidazole
4. Secnidazole
5. Furazolidone

Anthelmintics

1. Mebendazole
2. Albendazole
3. Ivermectin
4. Niclosamide

Anti-tubercular drugs

1. Rifampicin
2. Isoniazid
3. Ethambutol
4. Pyrazinamide
5. Streptomycin
6. Cycloserine
7. Prothionamide etc.

Drugs for Central Nervous System

Sedatives and Tranquilizers

1. Diazepam
2. Alprazolam
3. Etizolam
4. Oxazepam
5. Buspirone
6. Lorazepam
7. Trifluoperazine
8. Quinidine
9. Melatonin etc.

2020-7-

Tricyclic and Related Anti-depressants

1. Amitriptylline
2. Imipramine
3. Amoxapine
4. Mirtazapine
5. Nitroxazepine
6. Fluoxetine HCl
7. Clomipramine
8. Doxepin
9. Escitalopram
10. Trimipramine
11. Sertaline HCl
12. Citalopram etc.

Antimanic drugs

1. Olanzapine
2. Lithium
3. Chlorpromazine
4. Haloperidol
5. Thioridazine

6. Loxapine
7. Clozapine etc.

Hypnotics

1. Barbiturates
2. Nitrazepam
3. Flurazepam
4. Zopiclone etc.

Anti-convulsants

1. Carbamazepine
2. Sodium valproate
3. Pregabalin
4. Clonazepam
5. Clobazem
6. Gabapentine etc.

Drugs for controlling rigidity & tremors

1. Levodopa
2. Carbidopa
3. Tetrabenazine
4. Ropinirole

2020-7-

5. Pramipexole
6. Selegiline
7. Bromocriptine
8. Amantadine
9. Piribedil

Anti-emetics and Anti-nauseants

1. Domperidone
2. Ondansetron
3. Granisetron
4. Prochlorperazine
5. Metoclopramide
6. Dimenhdyriante
7. Promethazine theoclate
8. Trifluoperazine etc.

Drugs for Migraine

1. Propranolol
2. Ergotamine
3. Sumatriptin
4. Flunarizine
5. Rizatriptan etc.

Cerebral activators

1. Piracetam
2. Pyritinol
3. Ginkgo Biloba
4. Dihydroergotoxine
5. Donepezil
6. Nimodipine
7. Galantamine etc.

Drugs for Peripheral Neuropathy

1. Mecobalamin
2. Methylcobalamin
3. Adenosylcobalamine
4. Benfotiamine
5. Epalrestat

Drugs for Gastro-intestinal System

H2 Blockers & Ulcer healing drugs

1. Cimetidine
2. Ranitidine
3. Famotidine

2020-7-1

4. Omeprazole
5. Lansoprazole
6. Pantoprazole
7. Esomeprazole
8. Rabeprazole
9. Sucralfate
10. Misoprostol etc.

Drugs modifying intestinal motility and acid secretions

1. Propantheline
2. Metoclopramide
3. Oxyphenonium
4. Mosapride citrate
5. Isopropamide
6. Hyoscine butylbromide
7. Mebeverine
8. Itopride HCl etc.

Laxatives, Purgatives and Lubricants

1. Isapgol hunk
2. Sodium picosulphate

3. Liquid paraffin
4. Lactulose

Anti-diarrhoeals

1. Norfloxacin
2. Tinidazole
3. Metronidazole
4. Ornidazole
5. Ciprofloxacin

Non-specific Anti-diarrhoeal drugs

1. 5 - Aminosalicylic acid
2. Sulphasalazine
3. Balsalazide
4. Racecadotril
5. Loperamide
6. Diphenoxylate etc.

Carminatives

1. Sodium bicarbonate
2. Dill oil
3. Cinnamon oil

2020-7

4. Citric acid
5. Alpha galactosidase etc.

Digestive enzyme preparations

1. Pepsin
2. Fungal diastase
3. Simethicone
4. Pancreatin

Drugs acting on Genito-urinary Tract

Antibiotics for Urinary tract

1. Nitrofurantoin

Urinary Tract analgesics and anti-spasmodics

1. Dehydroemetine
2. Phenazopyridine
3. Flavoxate HCl
4. Oxybutynin chloride
5. Alfuzocin
6. Tamsulosion HCl
7. Finesteride etc.

Locally acting drugs for urethral and vaginal infections

1. Clotrimazole
2. Miconazole
3. Econazole
4. Hamycin
5. Nystatin
6. Ciclopirox olamine
7. Dienoestrol
8. Povidone iodine
9. Lactobacillus sporogenes
10. Chlorquinaldol

Uterine stimulants

1. Oxytocin
2. Isoxsuprine
3. Ritodrine HCl
4. Carbopost
5. Dinoprostone
6. Mifeprostone

2020-7

Drugs for erectile dysfunction

1. Sildenafil citrate
2. Tadafil
3. Dapoxitine

Drugs for Respiratory System

Expectorants, Anti-tussives & Mucolytics

Expectorants -

1. Directly acting - Sodium citrate, Potassium citrate, Potassium iodide, Guaiacol, Guaiphenesin, Balsum of Tolu, Vasaka etc.
2. Reflexly acting - Ammonium chloride/ carbonate, Potassium iodide, Ipecacuanha etc.

Anti-tussives -

1. Codeine
2. Pholcodeine
3. Ethylmorphine
4. Noscapine
5. Dextromethorphan etc.

Mucolytics -

1. Bromhexine
2. Acetyl cysteine etc.

Bronchodilators

1. Sympathomimetics - Salbutamol, Terbutaline, Bambuterol, Salmeterol, Ephedrine etc.
2. Methylxanthines - Theophylline, Aminophylline, Choline theophyllinate etc.
3. Anticholinergics - Ipratropium bromide etc.

Mast cell stabilizers

1. Sodium cromoglycate
2. Ketotifen

Leukotriene antagonists

1. Montelukast sodium
2. Zafirlukast

Corticosteroids

1. Systemic - Hydrocortisone, Prednisolone etc.
2. Inhalational - Beclomethasone dipropionate, Budesonide etc.

2020

Anti-allergics

1. Dechlorpheniramine maleate
2. Pheniramine maleate
3. Diphenhydramine
4. Chlorpheniramine maleate
5. Cetirizine dihydrochloride
6. Levocetirizine hydrochloride
7. Clemastine fumarate
8. Fexofenadine
9. Azelastine hydrochloride etc.

Drugs for Skin

Topical antifungals & Anti-parasitics

1. Clotrimazole
2. Miconazole
3. Ketoconazole
4. Oxiconazole nitrate
5. Ciclopirox olamine
6. Quiniodochlor
7. Tolnaftate

8. Benzyl benzoate
9. Terbinafine etc.

Anti-infective dermatological preparations

1. Fusidic acid
2. Mupirocin
3. Nadifloxacin
4. Povidone - iodine
5. Acyclovir
6. Feracrylum
7. Doxepin hydrochloride
8. Sisomicin
9. Silver sulfadiazine

Topical steroids

1. Beclomethasone diproprionate
2. Betamethasone benzoate
3. Betamethasone diproprionate
4. Betamethasone valerate
5. Clobetasol proprionate
6. Fluocinolone acetonide

7. Hydrocortisone acetate
8. Mometasone furoate etc.

Non-steroidal topical drugs

1. Calcipotriol
2. Acitretin

Drugs acting of skin vasculature

1. Minoxidil
2. Tazarotene
3. Heparin

Drugs for acne vulgaris

1. Benzoyl peroxide
2. Retionic acid
3. Erythromycing
4. Clindamycin
5. Adapalene
6. Isotretinoin etc.

Emollients

1. Vegetable oils
2. Woolfat
3. Liquid paraffin

Dermal protectives

1. Magnesium stearate
2. Zinc stearate
3. Talc
4. Calamine
5. Zinc oxide
6. Boric acid etc.

Keratolytics

1. Salicylic acid
2. Resorcinol
3. Benzoic acid

Anti-seborrheic drugs

1. Selenium sulphide
2. Zinc pyrithione
3. Salicylic acid
4. Resorcinol

Anti-scabitic drugs

1. Permethrin

Melanizing drugs

1. Psoralen

2020

2. Trioxsalen
3. Methoxsalen

Drugs for Eyes

Anti-infective ophthalmic preparations

1. Ofloxacin
2. Norfloxacin
3. Sulphacetamide sodium
4. Ciprofloxacin
5. Levofloxacin
6. Gentamycin
7. Tobramycin
8. Polymyxin B
9. Soframycin
10. Acyclovir etc.

Anti-inflammatory and anti-allergic preparations

1. Flurbiprofen sodium
2. Diclofenac sodium
3. Ketorolac tromethamine
4. Sodium cromoglycate etc.

Mydriatics and Cycloplegics

1. Atropine
2. Homatropine
3. Phenylephrine
4. Tropicamide

Miotics

1. Pilocarpine
2. Timolol maleate
3. Betaxolol
4. Dipivefrine HCl
5. Travoprost
6. Dorzolamide

Vitreous substitutes

1. Polydimethyl siloxane

Drugs for Oro-pharyngeal Region

Nasal decongestants

1. Phenylephrine
2. Ephedrine
3. Sodium cromoglycate
4. Fluticasoen propionate

2020-7-

Hormones

Hormones and related drugs

1. Oestrogen
2. Estradiol valerate
3. Ethinylestradiol
4. Methyltestosterone
5. Tibolone
6. Progestins
7. Levonorgestrel
8. Norethindrone acetate
9. Dydrogesterone
10. Hydroxyprogesterone
11. Lynestrenol
12. Testosterone
13. Mesterolone
14. Danozol
15. Allyloestrenol
16. Bromocriptine
17. Norethisterone enantate

18. Vasopressin
19. Somatostatin
20. Desmostatin

Anabolic steroids

1. Nandrolone decanoate
2. Nandrolone phenylpropionate
3. Stanzolol

Corticosteroids & related drugs

1. Hydrocortisone acetate
2. Dexamethasone
3. Betamethasone
4. Fludrocortisone acetate
5. Prednisolone
6. Deflazacort
7. Triamcinolone

Hyperglycemic and hypoglycemic drugs

1. Insulin
2. Acarbose
3. Tolbutamide

4. Glibenclamide
5. Gliciazide
6. Metformin
7. Chloropropamide
8. Biguanides
9. Pioglitazone
10. Glimepride
11. Repaglinide
12. Miglitol
13. Voglibose
14. Aspartame
15. Chromium picolinate
16. Sitagliptine
17. Vildagliptine etc.

Drugs acting on Thyroid function

1. Carbimazole
2. Thyroxine sodium
3. Levothyroxine sodium
4. Cinacalcet
5. Iodine

Drugs for Nutrition

Vitamins etc.

1. Vitamin A
2. Vitamin E
3. Thiamine
4. Riboflavin (B2)
5. Niacin (B3)
6. Pyridoxine (B6)
7. Vitamin C
8. Alfacalcidol
9. Calcitriol
10. Cholecalciferol
11. Doxercalciferol
12. Colostrum

Appetite stimulants

1. Cyproheptadine

Hepato-billiary preparations

1. L-Ornithine-L-Aspartate
2. Silymarin

Anti-obesity drugs

1. Orlistat

Hypolipidaemic Drugs

1. Gemfibrozil
2. Bezafibrate
3. Fenofibrate
4. Lovastatin
5. Simvastatin
6. Atorvastatin
7. Rosuvastatin
8. Pravastatin
9. Ezetimibe etc.

Drugs for treating Gout

1. Allopurinol
2. Febuxostat
3. Probenecid
4. Colchicine

Drugs in poisoning

1. Leucovorin

2. D- Penicillamine
3. Dimercaprol
4. Desferrioxamine
5. Pralidoxime chloride
6. Naloxone
7. N-acetylcysteine
8. Deferasirox etc.

Drug dependence

1. Disulfiram
2. Nicotine
3. Naltrexone
4. Bupropion hydrochloride
5. Citicoline

Immuno-modulators

1. Lenalidomide
2. Fligrastim
3. Lenograstim

Immuno-suppresants

1. Azathioprine

2020-7-

2. Cyclosporine
3. Mycophenolate mofetil
4. Tacrolimus

Anesthetics

1. Lidocaine
2. Bupivacaine
3. Propofol
4. Lorazepam
5. Midazolam
6. Succinylcholine chloride
7. Halothane

Muscle relaxants (Peripherally acting)

1. Gallamine
2. Pancuronium
3. Atracurium
4. Vecuronium bromide
5. Ketamine
6. Thiopentone soidum
7. Fentanyl

Mucolytics, Proteolytic and other enzymes

1. Trypsin
2. Chymotrypsin
3. Hyaluronidase
4. Serratiopeptidase

Vaccines

1. Rabies vaccine
2. BCG vaccine
3. Tetanus toxoid vaccine
4. DPT vaccine
5. Influenza vaccine
6. Measles vaccine
7. MMR vaccine
8. Hepatitis vaccine
9. Cholera vaccine
10. Rubella vaccine
11. Meningococcal vaccine

Immunoglobulins

1. Lypholised human plasma protein

2. Anti-snake venom (ASV)
3. Human albumin
4. Human Anti-D immunoglobulin
5. Human normal immunoglobulin etc.

• • •

2020-7-11 12:0

1. प्रमुख द्रव्य प्रकरण

अगुरु (Aquilaria agallocha)

पर्याय: – प्रवर – लोह – राजार्ह – योगज – वंशिक

English name: Aloe wood/ Eagle wood

Family: Thymelaeaceae

प्रयोज्यांग: काण्डसार / तैल

गण: चरक मतेन – शीतप्रशमन – श्वासहर – शिरोविरेचन – तिक्तस्कन्ध

सुश्रुत मतेन – एलादि – सालसारादि – श्लेष्मसंशमन

रस: कटु, तिक्त **गुण:** लघु, रूक्ष, तीक्ष्ण

वीर्य: उष्ण **विपाक:** कटु

कर्म: – त्वच्य – कर्णाक्षिरोग हर

भेद: रा.नि.: 4 – कृष्णागुरु – काष्ठागुरु (पीत) – दाहागुरु – मंगल्यागुरु

भा.प्र.: 2 – अगुरु – कृष्णागुरु (– गुणाधिक – लोहवद्धारी मज्जति)

सूत्रः

अगुरूष्णं कटु त्वच्यं तिक्तं तीक्ष्णञ्च पित्तलम्।
लघु कर्णाक्षिरोगघ्नं शीतवातकफप्रणुत्।।
कृष्णं गुणाधिकं तत्तु लोहवद्वारी मज्जति।
अगुरुप्रभवः स्नेहः कृष्णागुरुसमः स्मृतः।।

भा.प्र. कर्पूरादिवर्ग 22-23

अग्निमन्थ (Premna integrifolia)

पर्यायः – जय – श्रीपर्णी – गणिकारिका – तर्कारी – नादेयी – वैजयन्तिका

Family: Verbenaceae

प्रयोज्यांगः पत्र / मूल / त्वक्

गणः चरक मतेन – शोथहर – शीतप्रशमन – अनुवासनोपग
सुश्रुत मतेन – बृहत् पञ्चमूल – वातसंशमन – वीरतर्वादि – वरुणादि

रसः तिक्त, कटु, कषाय, मधुर **गुणः** रूक्ष, लघु
वीर्यः उष्ण **विपाकः** कटु

कर्मः – शोथघ्न – पाण्डुरोगघ्न

भेदः 2 – अग्निमन्थ (बृहदग्निमन्थ) – तर्कारी [क्षुद्राग्निमन्थ (Clerodendrum phlomidis)]

सूत्रः

अग्निमन्थः श्वयथुनुद्वीर्योष्णः कफवातहृत्।
पाण्डुनुत्कटुकस्तिक्तस्तुवरो मधुरोऽग्निदः।।

भा.प्र. गुडूच्यादिवर्ग 24

अहिफेन (Papaver somniferum)

पर्यायः – खसफलक्षीर – आफूक

English name: Opium

Family: Papaveraceae

प्रयोज्यांगः खसफल क्षीर

गणः उपविष

रसः तिक्त, कषाय **गुणः** लघु, रूक्ष, सूक्ष्म, व्यवायी, विकासी

वीर्यः उष्ण **विपाकः** कटु

प्रभावः मादक

कर्मः – शोषण – ग्राही

भेदः 4 – श्वेत – पीत – कृष्ण – चित्र

क्षुप: खाखस पोश्ता (Poppy Capsule)

फल: डोडा

फल त्वक्: पोश्त (**धातूनां शोषक रूक्षमदकृद्वाग्विवर्धनम्**)

बीज: पोश्तदाना / खशखश / खाखस तिला (Poppy Seeeds)

फलक्षीर: अहिफेन

शोधन विधि: अहिफेन को पानी में घोलकर, कपड़े से छानकर अग्नि पर घन कर लें। तत्पश्चात् आर्द्रक स्वरस की 21 भावना दें।

सूत्र:

आफूकं शोषणं ग्राहि श्लेष्मघ्नं वातपित्तलम्।
खसफलोद्भूतवल्कलप्रायमित्यपि।। भा.प्र. हरीतक्यादिवर्ग 238

आमलकी (Emblica officinalis)

पर्याय: – धात्री – जातीफलरसा – शिव – श्रीफल – धात्रीफल

English name: Emblic myrobalan/ Indian gooseberry

Family: Euphorbiaceae

प्रयोज्यांग: फल

गण: चरक मतेन – वय:स्थापन – विरेचनोपग
सुश्रुत मतेन – त्रिफला – परूषकादि

रस: पञ्चरस, अम्ल प्रधान, लवण वर्जित **गुण:** गुरु, रूक्ष, शीत

वीर्य: शीत **विपाक:** मधुर

कर्म: – हरीतकी सम गुण – रक्तपित्तघ्न – प्रमेहघ्न – परम वृष्य – रसायन

सूत्र:

हरीतकीसमं धात्रीफलं किन्तु विशेषतः।
रक्तपित्तप्रमेहघ्नं परं वृष्यं रसायनम्।।
हन्ति वातं तदम्लत्वात्पित्तं माधुर्यशैत्यतः।
कफं रूक्षकषायत्वात्फलं धात्र्यास्त्रिदोषजित्।।
यस्य यस्य फलस्येह वीर्यं भवति यादृशम्।
तस्य तस्यैव वीर्य्येण मज्जानमपि निर्दिशेत्।।
भा.प्र. हरीतक्यादि वर्ग 39–41

अपामार्ग (Achyranthes aspera)

पर्याय: – शिखरी – अध: शल्य – मयूरक – मर्कटी – दुर्ग्रहा – किणिही – खरमञ्जरी

English name: The Prickly Chaff Flower

Family: Amaranthaceae

प्रयोज्यांग: मूल / तण्डुल / पत्र / पञ्चांग

गण: चरक मतेन – शिरोविरेचन – कृमिघ्न – वमनोपग
सुश्रुत मतेन – अर्कादि

2020-7-11

रसः कटु, तिक्त **गुणः** लघु, रूक्ष, तीक्ष्ण
वीर्यः उष्ण **विपाकः** कटु
कर्मः – सारक – रोचक – हृद् रुजाहर – अर्शोघ्न
भेदः 2 – श्वेत – रक्त
सूत्रः

अपामार्गः सरस्तीक्ष्णो दीपनस्तिक्तकः कटुः।
पाचनो रोचनश्छर्दिकफमेदोऽनिलापहः।
निहन्ति हृद्रुजाध्मार्शःकण्डूशूलोदरापचीः।।

भा.प्र. गुडूच्यादि वर्ग 220

आरग्वध (Cassia fistula)

पर्यायः – राजवृक्ष – शम्पाक – चतुरंगुल – व्याधिघात – कृतमाल – दीर्घफल – स्वर्णांग

English name: Pudding Pipe Tree/ Indian Laburnum/ Purging Cassia
Family: Caesalpinioideae
प्रयोज्यांगः फलमज्जा / मूलत्वक् / पुष्प / पत्र
गणः चरक मतेन – कुष्ठघ्न – कण्डूघ्न – विरेचन – तिक्तस्कन्ध
सुश्रुत मतेन – आरग्वधादि – श्यामादि – अधोभागहर

रसः मधुर **गुणः** गुरु, मृदु, स्निग्ध
वीर्यः शीत **विपाकः** मधुर
कर्मः – स्रंसनोत्तम – परम कोष्ठशुद्धिकर
सूत्रः

आरग्वधोगुरुः स्वादुः शीतलः स्रंसनोत्तमः।।
ज्वरहृद्रोगपित्तास्रवातोदावर्तशूलनुत्।
तत्फलं स्रंसनं रुच्यं कुष्ठपित्तकफापहम्।।
ज्वरे तु सततं पथ्यं कोष्ठशुद्धिकरं परम्।

भा.प्र. हरीतक्यादि वर्ग 149–150

आर्द्रक एवं शुण्ठी (Zingiber officinale)

पर्यायः शुण्ठीः – विश्वा – नागर – विश्वभेषज – ऊषण – कटुभद्र – श्रृंगवेर – महौषध आर्द्रकः – आर्द्रिका
English name: Ginger
Family: Scitaminae
प्रयोज्यांगः कन्द
गणः चरक मतेन – तृप्तिघ्न – अर्शोघ्न – दीपनीय – शूलप्रशमन – तृष्णानिग्रहण
सुश्रुत मतेन – पिप्पल्यादि – त्रिकटु भावमिश्र मतेन – पञ्चकोल – षड्भूषण

2020-7-1

रसः कटु **गुणः** (शुण्ठीः लघु, स्निग्ध) (आर्द्रकः गुरु, रूक्ष, तीक्ष्ण)

वीर्यः उष्ण **विपाकः** (शुण्ठीः मधुर) (आर्द्रकः कटु)

कर्मः शुण्ठीः – आमवातघ्नी – वृष्य – स्वर्य – श्लीपदहर – ग्राही

आर्द्रकः – भेदिनी

विशेषः भोजन पूर्वः आर्द्रक + सैन्धव

वर्ज्यः – कुष्ठ – पाण्डुरोग – मूत्रकृच्छ्र – रक्तपित्त – व्रण – ज्व – दाह – ग्रीष्म एवं शरद ऋतु

सूत्रः

शुण्ठीः **शुण्ठी रुच्यामवातघ्नी पाचनी कटुका लघुः।**
स्निग्धोष्णा मधुरा पाके कफवातविबन्धनुत्।।
वृष्या स्वर्य्यावमिश्वासशूलकासहृदामयान्।
हन्ति श्लीपदशोथार्श आनाहोदरमारुतान्।।

भा.प्र. हरीतक्यादि वर्ग 45-46

आर्द्रकः **आर्द्रिका भेदिनी गुर्वी तीक्ष्णोष्णा दीपनी मता।।**
कटुका मधुरा पाके रूक्षा वातकफापहा।
ये गुणाः कथिताः शुण्ठ्यास्तेऽपि सन्त्यार्द्रकेऽखिलाः।।
भोजनाग्रे सदा पथ्यं लवणार्द्रकभक्षणम्।

अग्निसन्दीपनं रुच्यं जिह्वाकण्ठविशोधनम्।।
कुष्ठपाण्ड्वामये कृच्छ्रे रक्तपित्ते व्रणे ज्वरे।
दाहे निदाघशरदोर्नैव पूजितमार्द्रकम्।।

भा.प्र. हरीतक्यादि वर्ग 49–52

अर्जुन (Terminalia arjuna) ②

पर्यायः – ककुभ – गाण्डीवी – पार्थ – धनञ्जय – नदीसर्ज

English name: Arjuna

Family: Combretaceae

प्रयोज्यांगः त्वक्

गणः चरक मतेन – कषायस्कन्ध – उदर्दप्रशमन
सुश्रुत मतेन – न्यग्रोधादि – सालसारादि

रसः कषाय **गुणः** लघु, रूक्ष

वीर्यः शीत **विपाकः** कटु

प्रभावः हृदय

कर्मः – हृद्य – मेदोहर – क्षतक्षयघ्न – विषघ्न

सूत्रः

ककुभः **शीतलो हृद्यः क्षतक्षयविषास्रजित्।**
मेदोमेहव्रणान् हन्ति तुवरः कफपित्तहृत्।। भा.प्र. वटादिवर्ग 27

English: Gall stone

परिचय: गाय अथवा बैल के पित्ताशय में प्राप्त अश्मरी विशेष।

गुणकर्म: – लेखन – शोथहर – संज्ञाप्रबोधन – मेध्य – आर्त्तवजनन – अश्मरीनाशन

मृगशृंग (Hart's horn/ Deer horn)

पर्याय: – एणशृंग – मृगविषाण – हरिणशृंग – विषाण

परिचय: यह हरिणजातीय वन्य पशु (बारहसिंगा) का शृंग (सींग) है।

ग्राह्य मृगशृंग: – कीट रहित – दीर्घ – भारयुक्त – दृढ़ – छोटे–छोटे शृंग से युक्त

गुणकर्म: दोषघ्नता – – कफनि:स्सारक

रोगघ्नता – – हृच्छूल – पार्श्वशूल – कास – श्वास – प्रतिश्यावहर

• • •

3. अन्नपान वर्ग प्रकरण

जल वर्ग

पर्याय – वारिवर्ग – पानीयवर्ग – तोयवर्ग – V

जल के पर्याय –

पानीयं सलिलं नीरं कीलालं जलमम्बु च।
आपो वार्वारि कं तोयं पय: पाथस्तथोदकम्।
जीवनं वनमम्भोऽर्णोऽमृतं घनरसोऽपि च।। भा प्र वारिवर्ग 1

– पानीय – सलिल – नीर – कीलाल – जल – अम्बु – आप – वा – वारि – क – तोय – पय: – पाथ: – उदक – जीवन – वन – अम्भ: – अर्ण – अमृत – घनरस

जल के भेद –

भावमिश्र मतेन – 2

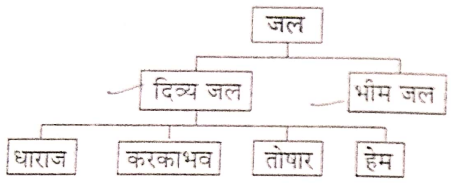

जल के सामान्य गुण –

निर्गन्धमव्यक्तरसं तृष्णाघ्नं शुचि शीतलम्।
अच्छं लघु च हृद्यं च तोयं गुणवदुच्यते।। सु.सू. 45.20

– निर्गन्ध – अव्यक्त रस – तृष्णाघ्न – शुचि – शीतल – अच्छ – लघु – हृद्य

जीवनं तर्पणं हृद्यं ह्लादि बुद्धिप्रबोधनम्।
तन्वव्यक्तरसं मृष्टं शीतं लघ्वमृतोपमम्।। अ.हृ.सू. 5.1

– जीवनीय – तर्पणीय – हृद्य – ह्लादकारक – बुद्धिप्रबोधक – तनु – अव्यक्त रस – मृष्ट – शीत – शुचि – अमृत तुल्य

शीतोदक के गुण –

शीतं मदात्ययग्लानिमूर्च्छाच्छर्दिश्रमभ्रमान्।।
तृष्णोष्णदाहपित्तास्रविषाण्यम्बु नियच्छति। अ.हृ.सू. 5.15–16

– मदात्यय – ग्लानि – मूर्च्छा – छर्दि – श्रम – भ्रम – तृष्णा – उष्णता – दाह – पित्तास्र (रक्तपित्त) – विष नाशक

उष्णोदक के गुण –

दीपनं पाचनं कण्ठ्यं लघूष्णं बस्तिशोधनम्।।
हिध्माध्मानानिलश्लेष्मसद्यःशुद्धिनवज्वरे।
कासामपीनसश्वासपार्श्वरुक्षु च शस्यते।। अ.हृ.सू. 5.16–17

– दीपन – पाचन – कण्ठ्य – लघु – उष्ण – बस्तिशोधन – हिक्का – आध्मान – वातकफज विकार – सद्यःशुद्धि – नवज्वर – कास – आम – पीनस – श्वासरोग – पार्श्वशूल में प्रशस्त

शृतशीतोदक के योग्य –

मद्यपानात्समुद्भूते रोगे पित्तोत्थिते तथा।।
सन्निपातसमुत्थे च शृतशीतं प्रशस्यते।
दाहातीसारपित्तासृङ्मूर्च्छामद्यविषार्तिषु।।
शृतशीतं जलं शस्तं तृष्णाच्छर्दिभ्रमेषु च। सु.सू. 45.42, 44–45

– मद्यपानजन्य रोग – पित्तज रोग – सान्निपातिक रोग – दाह – अतीसार – पित्तासृक् (रक्तपित्त) – मूर्च्छा – मद्य – विष – तृच्छा – छर्दि – भ्रम नाशक

पर्युषित जल के दोष –

न च पर्युषितं देयं कदाचिद्वारि जानता।।
अम्लीभूतं कफोत्क्लेदि न हितं तत् पिपासवे। सु.सू. 45.41–42
..... व्युषितं तत्रिदोषकृत्।। अ.हृ.सू. 5.18

2020-7-11 12:08

– अम्लता युक्त – कफोत्क्लेश कारक – अहितकर – त्रिदोषकारक

नारिकेलोदक के गुण –

नारिकेलोदकं स्निग्धं स्वादु वृष्यं हिमं लघु।
तृष्णापित्तानिलहरं दीपनं बस्तिशोधनम्।। अ.हृ.सू. 5.19

– स्निग्ध – मधुर – वृष्य – शीत – लघु – तृष्णाहर – पित्तवातज विकार शामक – दीपन – बस्तिशोधन

अल्पोदक पान योग्य अवस्थायें –

अरोचके प्रतिश्याये प्रसेके श्वयथौ क्षये।।
मन्देऽग्नावुदरे कुष्ठे ज्वरे नेत्रामये तथा।
व्रणे च मधुमेहे च पानीयं मन्दमाचरेत्।। सु.सू. 45.45–46

– अरोचक – प्रतिश्याय – प्रसेक – शोथ – क्षय – मन्दाग्नि – उदररोग – कुष्ठ – ज्वर – नेत्ररोग – व्रण – मधुमेह

जल परिपाक काल –

पीतं जलं जीर्य्यति यामयुग्माद्यामैकमात्राच्छृतशीतलञ्च।
तदर्धमात्रेण शृतं कदुष्णं पयः प्रपाके त्रय एव कालाः।।
भा प्र वारिवर्ग 86

– सामान्य जल → 1 याम
– शृतशीत जल → 1 प्रहर
– शृत कदुष्ण जल → ½ प्रहर

भोजन और जल का सम्बन्ध – अ.हृ.सू. 5.15

समस्थूलकृशा भुक्तमध्यान्तप्रथमाम्बुपाः।
भोजन के मध्यम में जलपान → सम
भोजन के अन्त में जलपान → स्थौल्य
भोजन के आदि में जलपान → कार्श्य

दुग्ध वर्ग

पर्याय – क्षीरवर्ग

दुग्ध के पर्याय – भा प्र दुग्धवर्ग।1

दुग्धं क्षीरं पयः स्तन्यं बालजीवनमित्यपि।
– दुग्ध – क्षीर – पयः – स्तन्य – बालजीवन

दुग्ध के सामान्य गुण –

प्रायशो मधुरं स्निग्धं शीतं स्तन्यं पयो मतम्।
प्रीणनं बृंहणं वृष्यं मेध्यं बल्यं मनस्करम्।।
जीवनीयं श्रमहरं श्वासकासनिबर्हणम्।
हन्ति शोणितपित्तं च सन्धानं विहतस्य च।।
सर्वप्राणभृतां सात्म्यं शमनं शोधनं तथा।
तृष्णाघ्नं दीपनीयं च श्रेष्ठं क्षीणक्षतेषु च।।
पाण्डुरोगेऽम्लपित्ते च शोषे गुल्मे तथोदरे।

अतीसारे ज्वरे दाहे श्वयथौ च विशेषतः।।
योनिशुक्रप्रदोषेषु मूत्रेष्वप्रचुरेषु च।
पुरीषे ग्रथिते पथ्यं वातपित्तविकारिणाम्।।
नस्यालेपावगाहेषु वमनास्थापनेषु च।
विरेचने स्नेहने च पयः सर्वत्र युज्यते।। च.सू. 1.107–112

– मधुर – स्निग्ध – शीत – स्तन्य – प्रीणन – बृंहण – वृष्य – मेध्य – बल्य – मनस्कर – जीवनीय – श्रमहर – श्वासहर – कासहर – शोणितपित्तहर – सन्धानकर – सभी प्राणियों के लिए सात्म्य – दोषशामक – स्रोतोशोधक – तृष्णाहर – दीपनीय आदि।

अष्टविध दुग्ध –>

अविक्षीरमजाक्षीरं गोक्षीरं माहिषं च यत्।
उष्ट्रीणामथ नागीनां वडवायाः स्त्रियास्तथा।। च.सू. 1.106

अष्टविध क्षीर			
अवि (Sheep)	अजा (Goat)	गो (Cow)	माहिष (Buffalo)
उष्ट्री (Camel)	नाग (Elephant)	वडव (Mare)	स्त्री (Human)

गो दुध के गुण –

अत्र गव्यं तु जीवनीयं रसायनम्।।
क्षतक्षीणहितं मेध्यं बल्यं स्तन्यकरं सरम्।

श्रमभ्रममदालक्ष्मीश्वासकासातितृट्क्षुधः।।
जीर्णज्वरं मूत्रकृच्छ्रं रक्तपित्तं च नाशयेत्। अ.हृ.सू. 5/21–23

– जीवनीय – रसायन – क्षतक्षीण में हितकर – मेध्य – बल्य – स्तन्यकर – सर – श्रम, भ्रम, मद, अलक्ष्मी, श्वास, कास, अतितृष्णा, अत्यधिक क्षुधा, जीर्णज्वर, मूत्रकृच्छ्र एवं रक्तपित्तनाशक

माहिष दुग्ध के गुण –

हितमत्यग्न्यनिद्रेभ्यो गरीयो माहिषं हिमम्।। अ.हृ.सू. 5/23

– अत्यग्नि एवं अनिद्रा में हितकर – अत्यधिक गुरु – शीत

अजा दुग्ध के गुण –

अल्पाम्बुपानव्यायामकटुतिक्ताशनैर्लघु।
आजं शोषज्वरश्वासरक्तपित्तातिसारजित्।। अ.हृ.सू. 5/24

– लघु – शोष – ज्वर – श्वास – रक्तपित्त – अतिसारनाशक

उष्ट्र दुग्ध के गुण –

ईषदूक्षोष्णलवणमौष्ट्रकं दीपनं लघु।
शस्तं वातकफानाहकृमिशोफोदरार्शसाम्।। अ.हृ.सू. 5/25

– ईषद् रूक्ष – उष्ण – लवण – दीपन – लघु – वात, कफ, आनाह, कृमि, शोफ, उदररोग एवं अर्श रोग में प्रशस्त

2020-7-11 12:08

मानुष दुग्ध के गुण –

मानुषं वातपित्तासृगभिघाताक्षिरोगजित्।
तर्पणाश्चोतनैर्नस्यैः ।। अ.ह.सू. 5/26

– वात, पित्त, असृक्, अभिघात एवं अक्षिरोगनाशक – तर्पण, आश्चोतन एवं नस्य में उपयोगी

आविक दुग्ध के गुण –

अहद्यं तूष्णमाविकम्।।
वातव्याधिहरं हिध्माश्वासपित्तकफप्रदम्। अ.ह.सू. 5/26–27

– अहद्य – उष्ण – वातव्याधिहर – हिध्मा, श्वास, पित्त एवं कफकर

हस्तिनी दुग्ध के गुण –

हस्तिन्याः स्थैर्यकृत् । अ.ह.सू. 5/27

– स्थैर्यकर

एकशफ प्राणियों के दुग्ध के गुण–

ऊढमुष्णं त्वैकशफं लघु।।
शाखावातहरं साम्ललवणं जडताकरम्। अ.ह.सू. 5/27–28

– उष्ण – लघु – शाखागत वातहर – अम्ल – लवण – जडताकर

अवस्था के अनुसार दुग्ध के गुण –

पयोऽभिष्यन्दि गुर्वामं, युक्त्या शृतमतोऽन्यथा।।
भवेद्गरीयोऽतिशृतं, धारोष्णममृतोपमम्। अ.ह.सू. 5/28–29

आम दुग्ध → – अभिष्यन्दि – गुरु
शृत दुग्ध → – अनभिष्यन्दि – लघु
अतिशृत दुग्ध → अत्यधिक गुरु
धारोष्ण दुग्ध → अमृत के समान

दधिवर्ग

दधि के सामान्य गुण –

रोचनं दीपनं वृष्यं स्नेहनं बलवर्धनम्।
पाकेऽम्लमुष्णं वातघ्नं मंगल्यं बृंहणं दधि।।
पीनसे चातिसारे च शीतके विषमज्वरे।
अरुचौ मूत्रकृच्छ्रे च काश्र्ये च दधि शस्यते।।
च.सू. 27.225–226

– रोचन – दीपन – वृष्य – स्नेहन – बल्य – अम्ल विपाक – उष्ण – वातघ्न – मंगल्य – बृंहणीय – पीनस – अतिसार – शीतज्वर – विषमज्वर – अरुचि – मूत्रकृच्छ्र – काश्र्य में हितकर

दधि के भेद –

सुश्रुत मतेन – 3

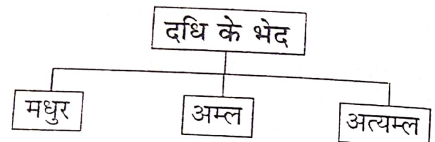

भावमिश्र मतेन – 4

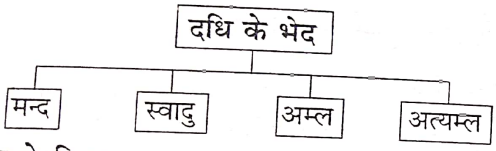

दधि सेवन के नियम –

न नक्तं दधि भुञ्जीत न चाप्यघृतशर्करम्।
नामुद्गयूषं नाक्षौद्रं नोष्णं नामलकैर्विना।। च.सू. 7.61

– रात्रि में – घृत एवं शर्करा मिलाये बिना – मुद्गयूष मिलाये बिना – मधु के बिना – उष्ण करके – आमलकी मिलाये बिना → दधि सेवन नहीं करना चाहिए।

तक्रवर्ग

पर्याय – – दण्डाहत – कालशेय – गोरस – विलोडित (कै.नि.)

तक्र के भेद –

भावमिश्र मतेन – 5

घोलं तु मथितं तक्रमुदश्चिच्छच्छिकाऽपि च।

ससरं निर्जलं घोलं मथितं त्वसरोदकम्।।
तक्रं पादजलं प्रोक्तमुदश्चित्त्वर्द्धवारिकम्।
छच्छिका सारहीना स्यात्स्वच्छा प्रचुरवारिका।। भा.प्र.तक्रवर्ग 1–2

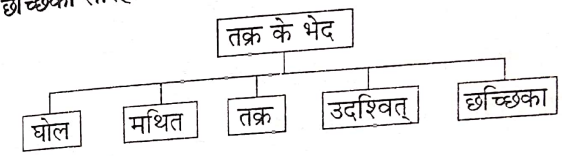

आचार्य चरक मतेन – 3

1. अनुद्धृत स्नेह 2. अर्धोद्धृत स्नेह 3. उद्धृत स्नेह (रूक्ष)

आचार्य चक्रपाणिदत्त मतेन – 4

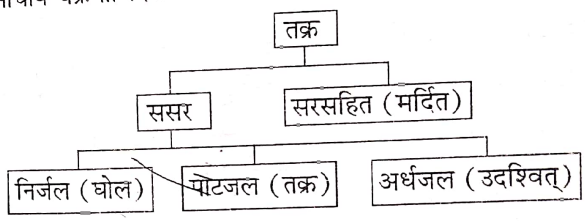

निर्माण विधि –

तक्रं पादजलं .....। भा.प्र. पूर्व। तक्रवर्ग 2

भाण्डस्य मध्ये दधि सन्निधाय, दध्नस्तु यन्त्रेण शनैर्हतं यत्।
तोयं निषिञ्चन् प्रहरं विनीय तोयेन तक्रं दशधा क्रमेण।

कै.नि. तक्रवर्ग।221

2020-7-1

भाण्ड के मध्य में दधि रखकर यन्त्र (मथानी) से शनैः - शनैः मथते हुए थोड़ा जल मिलाकर एक प्रहर (3 घण्टे) पर्यन्त मथने से तक्र बनता है।

गुण –

शोफार्शोग्रहणीदोषमूत्रग्रहोदरारुचौ।
स्नेहव्यापदि पाण्डुत्वे तक्रं दद्याद्गरेषु च।। च.सू. 27.229

– शोफ – अर्शोरोग – ग्रहणीदोष – मूत्रग्रह – उदररोग – अरुचि – स्नेहव्यापद् – पाण्डुरोग – गरविष में हितकर

रोगघ्नता –

शोफार्शोग्रहणीदोषमूत्रग्रहोदरारुचौ।
स्नेहव्यापदि पाण्डुत्वे तक्रं दद्याद्गरेषु च।। च.सू. 27.229

– शोथ – अर्शोरोग – ग्रहणीदोष – मूत्रग्रह – उदररोग – अरुचि – स्नेहजन्य व्यापद् – पाण्डुरोग – गरविष नाशक

दोषानुसार प्रयोग –

दोष	तक्र प्रयोग
वात दोष प्रकोप	अम्ल तक्र + सैन्धव
पित्त दोष प्रकोप	मधुर तक्र + शर्करा
कफ दोष प्रकोप	तक्र + त्रिकटु + क्षार

रसानुसार तक्र की दोषघ्नता –

मधुर तक्र	– कफप्रकोपक – पित्तशामक
अम्ल तक्र	– वातशामक – पित्तप्रकोपक

तक्र सेवन योग्य –

शीतकालेऽग्निमान्द्ये च कफोत्थेष्वामयेषु च।
मार्गावरोधे दुष्टे च वायौ तक्रं प्रशस्यते।। सु.सु. 45.87

– शीतकाल – अग्निमान्द्य – कफज विकार – मार्गावरोधज विकार – वात दुष्टि

तक्र सेवन अयोग्य –

नैव तक्रं क्षये दद्यान्नोष्णकाले न दुर्बले।
न मूर्च्छाभ्रमदाहेषु न रोगे रक्तपित्तजे।। भा.प्र. पूर्व। तक्रवर्ग।17

– क्षय रोग – ग्रीष्म ऋतु – दुर्बल व्यक्ति – मूर्च्छा – भ्रम – दाह – रक्तपित्त पीड़ित

मधु वर्ग

पर्याय – – माक्षिक – माध्वीक – क्षौद्र – सारघ – मक्षिकावान्त – वरटी वान्त – भृंगवान्त – पुष्परसोद्भव

मधु के भेद –

आचार्य चरक मतेन – 4

2020-7

जाति	श्रेष्ठता	वर्ण
माक्षिक	श्रेष्ठ	तैलवर्ण
भ्रामर	गुरु पाकी	श्वेतवर्ण
क्षौद्र		कपिलवर्ण
पौत्तिक		घृतवर्ण

आचार्य भावमिश्र मतेन – 8

माक्षिकं भ्रामरं क्षौद्रं पौत्तिकं छात्रमित्यपि।
आर्ष्यमौद्दालकं दालमित्यष्टौ मधुजातयः।। भा प्र मधुवर्ग 6

– माक्षिक – भ्रामर – क्षौद्र – पौत्तिक – छात्र – आर्ष्य – औद्दालक – दाल

मधु के गुण –

वातलं गुरु शीतं च रक्तपित्तकफापहम्।
सन्धातृ च्छेदनं रूक्षं कषायं मधुरं मधु।। च.सू. 27.245

– वातल – गुरु – शीत – रक्तपित्तघ्न – कफघ्न – सन्धानकर – छेदन – रूक्ष – कषाय – मधुर

नव एवं पुराण मधु के गुण –

नवं मधु भवेत्पुष्ट्यै नातिश्लेष्महरं सरम्।
पुराणं ग्राहकं रूक्षं मेदोघ्नमतिलेखनम्।। भा प्र मधुवर्ग। 25

नव मधु → – पुष्टिकारक – नातिश्लेष्महर – सर
पुराण मधु → – ग्राही – रूक्ष – मेदोघ्न – अतिलेखन

उष्ण मधु का उपयोग –

प्रच्छर्दने निरूहे च मधूष्णं न निवार्यते।
अलब्धपाकमाश्वेव तयोर्यस्मान्निवर्तते।। अ.हृ.सू. 5/54

– वमनकर्म – निरूह बस्ति के लिए

उष्ण मधु की मारकता –

मधु चोष्णमुष्णार्तस्य च मधु मरणाय। च.सू. 26.84

घृत वर्ग

पर्याय – – आज्य – हविस् – सर्पिस्

घृत के सामान्य गुण –

स्मृतिबुद्ध्यग्निशुक्रौजःकफमेदोविवर्धनम्।
वातपित्तविषोन्मादशोषालक्ष्मीज्वरापहम्।।
सर्वस्नेहोत्तमं शीतं मधुरं रसपाकयोः।
सहस्रवीर्यं विधिभिर्घृतं कर्मसहस्रकृत्।। च.सू. 27.231–232

– स्मृति – बुद्धि – अग्नि – शुक्र – ओज – कफ – मेद वर्द्धक – वातपित्तघ्न – विष – उन्माद – शोष – अलक्ष्मी – ज्वरहर – सर्व स्नेहों में उत्तम – शीत – मधुर रसात्मक – मधुर विपाकी – सहस्र वीर्य युक्त आदि।

वयानुसार घृत के नाम –

- चरक मतेन –
  - पुराण घृत – 10 वर्ष पुराना – उग्रगन्ध
  - प्रपुराण घृत – 10 वर्ष से पुराना एवं 100 वर्ष तक – लाक्षारसनिभम् – शीत – सर्वग्रहनाशनम् – मेध्य – विरेचन के लिए उत्तम
  - 100 वर्ष पुराना घृत – कोई भी रोग इससे असाध्य नहीं – दृष्ट स्पर्शन एवं नस्य से सर्वग्रहनाशन – अपस्मार एवं ग्रहोन्माद में हितकर
- सुश्रुत मतेन –
  - पुराण घृत – 10 वर्ष पुराना
  - कौम्भ सर्पि – 10 से 100 वर्ष के बीच
  - महाघृत – 100 वर्ष से ऊपर

घृत माहात्म्य –

सर्पिस्तैलं वसा मज्जा सर्वस्नेहोत्तमा मताः।
एषु चैवोत्तमं सर्पिः संस्कारस्यानुवर्तनात्।। च.सू. 13.13

चतुर्विध स्नेहों में सर्पि सर्वोत्तम स्नेह है। इसका कारण है सर्पि का → संस्कारानुवर्तन

नवनीत के गुण –

नवनीतं हितं गव्यं वृष्यं वर्णबलाग्निकृत्।।
संग्राहि वातपित्तासृक्क्षयार्शोऽर्दितकासहृत्।
तद्धितं बालके वृद्धे विशेषादमृतं शिशोः।। भा प्र नवनीतवर्ग 1–2

– वर्ण्य – बल्य – अग्निवर्द्धक – संग्राहि – वातपित्तघ्न – रक्तपित्तघ्न – क्षयघ्न – अर्शोघ्न – अर्दितनाशक – कासघ्न – बालक एवं वृद्धों के लिए हितकर – शिशुओं के लिए अमृत तुल्य

तैल वर्ग

परिभाषा –

तिलादिस्निग्धवस्तूनां स्नेहस्तैलमुदाहृतम्। भा प्र तैलवर्ग 1

तिल आदि स्नेहयुक्त वस्तुओं के स्नेह भाग को मुनिगण 'तैल' कहते हैं।

सामान्य गुण –

मारुतघ्नं न च श्लेष्मवर्धनं बलवर्धनम्।
त्वच्यमुष्णं स्थिरकरं तैलं योनिविशोधनम्।। च.सू. 13.15

– वातघ्न – कफघ्न – बलवर्धन – त्वच्य – उष्ण – स्थिरकर – योनिविशोधन

कषायानुरसं स्वादु सूक्ष्ममुष्णं व्यवायि च।
पित्तलं बद्धविण्मूत्रं न च श्लेष्माभिवर्धनम्।।

वातघ्नेषूत्तमं बल्यं त्वच्यं मेधाग्निवर्धनम्।
तैलं संयोगसंस्कारात् सर्वरोगापहं मतम्।।
तैलप्रयोगादजरा निर्विकारा जितश्रमाः।
आसन्नतिबलाः संख्ये दैत्याधिपतयः पुरा।। च.सू. 27.286–288

– कषाय अनुरस – मधुर – सूक्ष्म – उष्ण – व्यवायि – पित्तल – पुरीष एवं मूत्र बद्धताकारक – न श्लेष्मल – उत्तम वातघ्न – बल्य – त्वच्य – मेधा एवं अग्नि वर्द्धक – संयोग संस्कार से सर्वरोगहर आदि।

तिल तैल के गुण –

तैलं स्वयोनिवत्तत्र मुख्यं तीक्ष्णं व्यवायि च।
त्वग्दोषकृदचक्षुष्यं सूक्ष्मोष्णं कफकृन्न च।। अ.हृ.सू. 5/55

– सर्वश्रेष्ठ – तीक्ष्ण – व्यवायि – त्वक्दोषकारकर – अचक्षुष्य – सूक्ष्म – उष्ण वीर्य – कफ को न बढ़ाने वाला – कृश व्यक्तियों का बृंहण करनेवाला – स्थूल व्यक्तियों का कर्षण करनेवाला – मल बांधनेवाला – कृमिहर – संस्कार से सर्वरोगहर

एरण्ड तैल के गुण –

ऐरण्डतैलं मधुरं गुरु श्लेष्माभिवर्धनम्।
वातासृग्गुल्महृद्रोगजीर्णज्वरहरं परम्।। च.सू. 27.289

– मधुर – गुरु – श्लेष्मवर्द्धक – वातरक्त, गुल्म, हृद्रोग, जीर्णज्वर नाशक

सर्षप तैल के गुण –

कटूष्णं सार्षपं तीक्ष्णं कफशुक्रानिलापहम्।
लघु पित्तास्त्रकृत् कोठकुष्ठार्शोव्रणजन्तुजित्।। अ.हृ.सू. 5/59

– कटु – उष्ण – तीक्ष्ण – कफघ्न – शुक्रघ्न – वातघ्न – लघु – रक्त एवं पित्तकर
– कोठ – कुष्ठ – अर्श – व्रण – क्रिमि नाशक

कतिपय तैलों के गुण –

आक्ष अर्थात् बिभीतक तैल	निम्ब तैल	उमा अर्थात् अतसी तैल	कुसुम्भ तैल
– मधुर – शीतल – केश्य – गुरु – पित्तवातहर	– कुछ उष्ण – तिक्त – कृमि कुष्ठ और कफनाशक	– उष्ण – त्वक्दोष कफ और पित्तवर्धक	– उष्ण – त्वक्दोष – कफ और पित्तवर्धक

शूकधान्य वर्ग

परिभाषा – शूकयुक्त फलवाले धान्यों को 'शूकधान्य' कहते हैं।

षष्टिक के गुण –

शीतः स्निग्धोऽगुरुः स्वादुस्त्रिदोषघ्नः स्थिरात्मकः।
षष्टिकः प्रवरो गौरः कृष्णगौरस्ततोऽनु च।। च.सू. 27.13

2020-7-11 12:10

– शीत – स्निग्ध – लघु – मधुर – त्रिदोषघ्न – स्थिर

यव के गुण –

रूक्षः शीतोऽगुरुः स्वादुर्बहुवातशकृद्यवः।
स्थैर्यकृत् सकषायश्च बल्यः श्लेष्मविकारनुत्।। च.सू. 27.19

– रूक्ष – शीत – लघु – मधुर – बहुवात एवं बहु पुरीषकर – स्थैर्यकर – कषाय – बल्य – कफविकारनाशक

गोधूम के गुण –

सन्धानकृद्वातहरो गोधूमः स्वादुशीतलः।
जीवनो बृंहणो वृष्यः स्निग्धः स्थैर्यकरो गुरुः।। च.सू. 27.21

– सन्धानकर – वातहर – मधुर – शीतल – जीवनीय – बृंहणीय – वृष्य – स्निग्ध – स्थैर्यकर – गुरु

शूकधान्यों का श्रेष्ठाश्रेष्ठत्व –

आहार द्रव्य	श्रेष्ठ	हीनतम
शूकधान्य	लोहित शालि	यवक

शमीधान्य वर्ग

पर्याय – शिम्बी धान्य

मुद्ग के गुण –

कषायमधुरो रूक्षः शीतः पाके कटुर्लघुः।
विशदः श्लेष्मपित्तघ्नो मुद्गः सूप्योत्तमो मतः।। च.सू. 27.23

– कषाय – मधुर – रूक्ष – शीत – कटु विपाक – लघु – विशद – कफपित्तघ्न – सूप के लिए उत्तम

माष के गुण –

वृष्यः परं वातहरः स्निग्धोष्णो मधुरो गुरुः।
बल्यो बहुमलः पुंस्त्वं माषः शीघ्रं ददाति च।। च.सू. 27.24

– वृष्य – परम वातहर – स्निग्ध – उष्ण – मधुर – गुरु – बल्य – बहु मलकर – पुंस्त्वकर

कुलत्थ के गुण –

उष्णाः कषायाः पाकेऽम्लाः कफशुक्रानिलापहाः।
कुलत्था ग्राहिणः कासहिक्काश्वासार्शसां हिताः।। च.सू. 27.26

– उष्ण – कषाय – अम्ल विपाक – कफ, शुक्र एवं वातहर – ग्राही – कास – हिक्का – श्वास – अर्श में हितकर

तिल के गुण –

स्निग्धोष्णो मधुरस्तिक्तः कषायः कटुकस्तिलः।
त्वच्यः केश्यश्च बल्यश्च वातघ्नः कफपित्तकृत्।। च.सू. 27.30

– स्निग्ध – उष्ण – मधुर – तिक्त – कषाय – कटु – त्वच्य – केश्य – बल्य – वातघ्न – कफपित्तकर

2020-7-11 12:10

शमीधान्यों का श्रेष्ठाश्रेष्ठत्व –

आहार द्रव्य	श्रेष्ठ	हीनतम
शमीधान्य	मुद्ग	माष

फल वर्ग

मृद्वीका के गुण –

तृष्णादाहज्वरश्वासरक्तपित्तक्षतक्षयान्।
वातपित्तमुदावर्तं स्वरभेदं मदात्ययम्।।
तिक्तास्यतामास्यशोषं कासं चाशु व्यपोहति।
मृद्वीका बृंहणी वृष्या मधुरा स्निग्धशीतला।।च.सू. 27.125–126

– तृष्णा – दाह – ज्वर – श्वास – रक्तपित्त – क्षत – क्षय – वातपित्त – उदावर्त – स्वरभेद – मदात्यय – तिक्तास्यता – मुखशोष – कास शामक – बृंहणीय – वृष्य – मधुर – स्निग्ध – शीतल

कपित्थ के गुण –

कपित्थमामं कण्ठघ्नं विषघ्नं ग्राहि वातलम्।।
मधुराम्लकषायत्वात् सौगन्ध्याच्च रुचिप्रदम्।
परिपक्वं च दोषघ्नं विषघ्नं ग्राहि गुर्वपि।। च.सू. 27.136–137

आम कपित्थः – कण्ठघ्न – विषघ्न – ग्राही – वातल

पक्व कपित्थः – मधुर – अम्ल – कषाय – सुगन्धि – रुचिकर – दोषघ्न – विषघ्न – ग्राही – गुरु

बिल्व के गुण –

बिल्वं तु दुर्जरं पक्वं दोषलं पूतिमारुतम्।
स्निग्धोष्णतीक्ष्णं तद्बालं दीपनं कफवातजित्।। च.सू. 27.138

पक्व बिल्वः – दुर्जर – दोषल – पूति मारुतकर

बाल बिल्वः – स्निग्ध – उष्ण – तीक्ष्ण – दीपन – कफवातघ्न

बिभीतक के गुण –

रसासृङ्मांसमेदोजान्दोषान् हन्ति बिभीतकम्।।
स्वरभेदकफोत्क्लेदपित्तरोगविनाशनम्। च.सू. 27.148–149

– रस, रक्त, मांस एवं मेदो दोषनाशक – स्वरभेद – कफ – उत्क्लेद – पित्तरोग नाशक

दाडिम के गुण –

अम्लं कषायमधुरं वातघ्नं ग्राहि दीपनम्।।
स्निग्धोष्णं दाडिमं हृद्यं कफपित्ताविरोधि च।
च.सू. 27.149–150

– अम्ल – कषाय – मधुर – वातघ्न – ग्राही – दीपन – स्निग्ध – उष्ण – हृद्य – कफपित्त अविरोधि

वाताम के गुण –

वातामाद्युष्णवीर्यं तु कफपित्तकरं सरम्।।
परं वातहरं स्निग्धम्। अ.हृ.सू. 6/123–124

2020-7-11 12:10

– उष्ण वीर्य – कफपित्तकफ – सर – परम वातहर – स्निग्ध

जम्बु के गुण –

जाम्बवं गुरु विष्टम्भि शीतलं भृशवातलम्।।

संग्राहि मूत्रशकृतोरकण्ठ्यं कफपित्तजित्। अ.ह.सू. 6/127–128

– गुरु – विष्टम्भि – शीतल – अत्यधिक वातकारक – मूत्र एवं मल संग्राहि – अकण्ठ्य – कफपित्तघ्न

आम्र फल के गुण –

वातपित्तास्त्रकृद्बालं, बद्धास्थि कफपित्तकृत्।।

गुर्वाम्रं वातजित्पक्वं स्वाद्वम्लं कफशुक्रकृत्।

अ.ह.सू. 6/128–129

बाल आम्र फल के गुण	बद्धास्थि आम्र फल के गुण	पक्व आम्र फल के गुण
– वातकारक – पित्तकारक – रक्तकारक	– कफपित्तकारक	– गुरु – वातशामक – मधुर – अम्ल – कफवर्द्धक – शुक्रवर्द्धक

वृक्षाम्ल के गुण –

वृक्षाम्लं ग्राहि रूक्षोष्णं वातश्लेष्महरं लघु।। अ.ह.सू. 6/129

– ग्राहि – रुक्ष – उष्ण – वातकफघ्न – लघु

भल्लातक के गुण –

भल्लातकस्य त्वङ्मांसं बृंहणं स्वादु शीतलम्।

तदस्थ्यग्निसमं मेध्यं कफवातहरं परम्।। अ.ह.सू. 6/134

भल्लातक त्वचा एवं मांस के गुण	भल्लातक अस्थि के गुण
– बृंहण – मधुर – शीतल	– अग्नि सम – मेध्य – परम कफवातघ्न

लकुच के गुण –

फलानामवरं तत्र लकुचं सर्वदोषकृत्। अ.ह.सू. 6/140

– फलों में अवर – त्रिदोषकारक

फलवर्ग का श्रेष्ठाश्रेष्ठत्व –

आहार द्रव्य	श्रेष्ठ	हीनतम
फल	मृद्वीका	लकुच

शाक वर्ग

पटोलशाक के गुण –

हृद्यं पटोलं कृमिनुत्स्वादुपाकं रुचिप्रदम्। अ.हृ.सू. 6/79

– हृद्य – कृमिघ्न – मधुर विपाक – रुचिकर

वासा शाक के गुण –

वृषं तु वमिकासघ्नं रक्तपित्तहरं परम्। अ.हृ.सू. 6/80

– वमनहर – कासघ्न – परम रक्तपित्तहर

कारवेल्लक के गुण –

कारवेल्लं सकटुकं दीपनं कफजित्परम्।। अ.हृ.सू. 6/80

– कटु रसात्मक – दीपन – परम कफनाशक

वार्ताक के गुण –

वार्ताकं कटु तिक्तोष्णं मधुरं कफवातजित्।
सक्षारमग्निजननं हृद्यं रुच्यमपित्तलम्।। अ.हृ.सू. 6/81

– कटु – तिक्त – उष्ण – मधुर – कफवातघ्न – सक्षार – अग्निजनन – हृद्य – रुच्य – अपित्तल

विदारी के गुण –

विदारी वातपित्तघ्नी मूत्रला स्वादुशीतला।।
जीवनी बृंहणी कण्ठ्या गुर्वी वृष्या रसायनम्। अ.हृ.सू. 6/85–86

– वातपित्तघ्न – मूत्रल – मधुर – शीतल – जीवनीय – बृंहणीय – कण्ठ्य – गुरु – वृष्य – रसायन

जीवन्ती शाक के गुण –

चक्षुष्या सर्वदोषघ्नी जीवन्ती मधुरा हिमा।। अ.हृ.सू. 6/86

– चक्षुष्य – त्रिदोषघ्न – मधुर – शीत

कूष्माण्ड के गुण –

वल्लीफलानां प्रवरं कूष्माण्डं वातपित्तजित्।।
बस्तिशुद्धिकरं वृष्यम्। अ.हृ.सू. 6/88–89

– वल्ली फलों में प्रवर – वातपित्तघ्न – बस्तिशुद्धिकर – वृष्य

तर्कारी एवं वरुण के गुण –

तर्कारीवरुणं स्वादु सतिक्तं कफवातजित्। अ.हृ.सू. 6/97

– मधुर – तिक्त – कफवातघ्न

कासमर्द के गुण –

कृमिकासकफोत्क्लेदान् कासमर्दो जयेत्सरः।। अ.हृ.सू. 6/100

– कृमिघ्न – कासघ्न – कफोत्क्लेद नाशक – सर

सर्षप के गुण –

गुरूष्णं सार्षपं बद्धविण्मूत्रं सर्वदोषकृत्।। अ.हृ.सू. 6/101

– गुरु – उष्ण – मल एवं मूल बाँधनेवाला – त्रिदोषकर

2020-7-11

मूलक के गुण –

बाल मूलक	महत् मूलक	स्निग्ध सिद्ध मूलक	शुष्क मूलक	आम मूलक
– अव्यक्त रस – किञ्चित् क्षार – तिक्त – दोषहर – लघु – उष्ण – गुल्म – कास – क्षय – श्वास – व्रण – नेत्ररोग – गल रोग – स्वर – अग्नि–साद – उदावर्त – पीनस नाशक	– कटु रस – कटु विपाक – उष्ण वीर्य – त्रिदोषकारक – गुरु – अभिष्यन्दि	वातनाशक	वात–कफघ्न	त्रिदोष–कारक

सुरस के गुण –

हिध्माकासविषश्वासपार्श्वरुक्पूतिगन्धहा।
सुरसः ।। अ.ह.सू. 6/108

– हिक्का – कास – विष – श्वास – पार्श्वशूल – पूतिगन्ध नाशक

आर्द्रिका के गुण –

आर्द्रिका तिक्तमधुरा मूत्रला न च पित्तकृत्। अ.ह.सू. 6/109

– तिक्त – मधुर – मूत्रल – न पित्तकर

लशुन के गुण –

लशुनो भृशतीक्ष्णोष्णः कटुपाकरसः सरः।।
हृद्यः केश्यो गुरुर्वृष्यः स्निग्धो रोचनदीपनः।
भग्नसन्धानकृद्बल्यो रक्तपित्तप्रदूषणः।।
किलासकुष्ठगुल्मार्शोमेहक्रिमिकफानिलान्।
सहिध्मापीनसश्वासकासान् हन्ति रसायनम्।।
अ.ह.सू. 6/109–111

गुण → – अत्यधिक तीक्ष्ण – अत्यधिक उष्ण – सर – गुरु – स्निग्ध

रस → – कटु विपाक – कटु रस

दोषकर्म → – कफवातघ्न

कर्म → – हृद्य – केश्य – वृष्य – रोचन – दीपन – भग्नसन्धानकारक – बल्य – रक्तपित्त प्रदूषक – रसायन

रोगघ्नता → – किलास – कुष्ठ – गुल्म – अर्शोरोग – मेह नाशक – क्रिमिघ्न – हिक्का – पीनस – श्वास – कास नाशक

2020-7-11 12

पलाण्डु के गुण –

पलाण्डुस्तद्गुणन्यूनः श्लेष्मलो नातिपित्तलः। अ.हृ.सू. 6/112

– लशुन की अपेक्षा न्यून गुण – कफवर्द्धक – न अतिपित्तवर्द्धक

गृञ्जनक के गुण –

कफवातर्शसां पथ्यः स्वेदेऽभ्यवहृतौ तथा।।
तीक्ष्णो गृञ्जनको ग्राही पित्तिनां हितकृन्न सः।

अ.हृ.सू. 6/112–113

– कफवातज अर्श में स्वेदन एवं भोजनार्थ पथ्य

सूरण के गुण –

दीपनः सूरणो रुच्यः कफघ्नो विशदो लघुः।।
विशेषादर्शसां पथ्यः ।। अ.हृ.सू. 6/113–114

– दीपन – रुचिकर – कफघ्न – विशद – लघु – अर्श में विशेष रूप से पथ्य

शाकवर्ग की अवयवानुसार गुणवत्ता –

पत्रे पुष्पे फले नाले कन्दे च गुरुता क्रमात्।। अ.हृ.सू. 6/114

शाक के अवयव	गुरुता
पत्र	+
पुष्प	++
फल	+++
नाल	++++
कन्द	+++++

शाकवर्ग का श्रेष्ठाश्रेष्ठत्व –

आहार द्रव्य	श्रेष्ठ	हीनतम
शाक	जीवन्ती	सर्षप

मांस वर्ग

अष्टविध मांसवर्ग –

मांसमित्याहुरष्टधा।
ह्यमृग्यं वैष्किरिकं किञ्च प्रातुदं च बिलेशयम्।
प्रासहं च महामृग्यमप्चरं मात्स्यमष्टधा।।1.। अ.हृ.सू. 6/54.11.1

मांसवर्ग – 8							
मृग	विष्किर	प्रतुद	बिलेशय	प्रसह	महामृग	अप्चर	मत्स्य
10 प्राणी	21 प्राणी	10 प्राणी	4 प्राणी	26 प्राणी	10 प्राणी	11 प्राणी	18 प्राणी

2020-7-11 12:11

अष्ट मांसवर्ग का देशानुसार वर्गीकरण –

आद्यान्त्या जांगलानूपा मध्यौ साधारणौ स्मृतौ। अ.ह.सू. 6/55

जांगल देश	आनूप देश	साधारण देश
• मृग	• महामृग	• बिलेशय
• विष्किर	• अप्चर	• प्रसह
• प्रतुद	• मत्स्य	

जांगल मांस के गुण –

तत्र बद्धमलाः शीता लघवो जांगला हिताः।।

पित्तोत्तरे वातमध्ये सन्निपाते कफानुगे। अ.ह.सू. 6/55–56

– विबन्धकर – शीतल – लघु

– कफानुग, वातमध्य और पित्तोत्तर सन्निपात में हितकर

शिखि मांस के गुण –

नातिपथ्यः शिखी पथ्यः श्रोत्रस्वरवयोदृशाम्।। अ.ह.सू. 6/58

– सामान्यतः न अतिपथ्यकर

– श्रोत्र – स्वर – वय – दृष्टि के लिए पथ्य

कुक्कुट मांस के गुण –

तद्वच्च कुक्कुटो वृष्यः । अ.ह.सू. 6/59

– शिखि मांस के समान – वृष्य

चटक मांस के गुण –

चटकाः श्लेष्मलाः स्निग्धा वातघ्नाः शुक्रलाः परम्।। अ.ह.सू. 6/60

– कफवर्द्धक – स्निग्ध – वातघ्न – परम शुक्रल

बिलेशयादि मांस की तुलनात्मक गुणवत्ता –

गुरूष्णस्निग्धमधुरा वर्गाश्चातो यथोत्तरम्।

मूत्रशुक्रकृतो बल्या वातघ्नाः कफपित्तलाः।। अ.ह.सू. 6/61

मांस वर्ग	गुरु गुण	उष्ण गुण	स्निग्ध गुण	मधुर रस
बिलेशय वर्ग	+	+	+	+
प्रसह वर्ग	++	++	++	++
महामृग वर्ग	+++	+++	+++	+++
अप्चर वर्ग	++++	++++	++++	++++
मत्स्य वर्ग	+++++	+++++	+++++	+++++

अजामांस के गुण –

नातिशीतगुरुस्निग्धं मांसमाजमदोषलम्।।

शरीरधातुसामान्यादनभिष्यन्दि बृंहणम्। अ.ह.सू. 6/63–64

– न अतिशीत – न अति गुरु – न अति स्निग्ध – अदोषल – शरीरस्थ धातु के समान गुण वाला – अनभिष्यन्दि – बृंहण

2020-7-11 12:11

गोमांस के गुण –

शुष्ककासश्रमात्यग्निविषमज्वरपीनसान्।
कार्श्यं केवलवातांश्च गोमांसं सन्नियच्छति।। अ.हृ.सू. 6/65

– शुष्क कास – श्रम – अत्यग्नि – विषमज्वर – पीनस – कार्श्य – केवल वात नाशक

लिंग–अवयवादि भेदानुसार मांस के गुण –

पुंस्त्रियोः पूर्वपश्चार्धे गुरुणी, गर्भिणी गुरुः।
लघुर्योषिच्चतुष्पात्सु, विहंगेषु पुनः पुमान्।।
शिरःस्कन्धोरुपृष्ठस्य कट्याः सक्थ्नोश्च गौरवम्।
तथाऽऽमपक्वाशययोर्यथापूर्वं विनिर्दिशेत्।।
शोणितप्रभृतीनां च धातूनामुत्तरोत्तरम्।
मांसाद्गरीयो वृषणमेढ्रवृक्कयकृद्गुदम्।। अ.हृ.सू. 6/69–71

पुमान् का पूर्वार्ध मांस	गुरु
स्त्री का पश्चार्ध मांस	गुरु
गर्भिणी मांस	गुरु
चतुष्पाद मांस	स्त्री मांस – लघु
विहंग मांस	पुमान् मांस – लघु
अंगानुसार मांस का उत्तरोत्तर लघुत्व	शिर → स्कन्ध → ऊरू → पृष्ठ → कटि → सक्थि → आमाशय → पक्वाशय

धातुओं का उत्तरोत्तर गुरुत्व	रक्त → मांस → मेद → अस्थि → मज्जा → शुक्र
अंगानुसार मांस उत्तरोत्तर गुरुत्व	मांस → वृषण → मेढ्र → वृक्क → यकृत् → गुद

मांसवर्ग का श्रेष्ठाश्रेष्ठत्व –

आहार द्रव्य	श्रेष्ठ	हीनतम
मृग मांस	ऐणेय	गोमांस
पक्षी	लाव	काणकपोत
विलेशय	गोधा	मण्डूक
मत्स्य	रोहित	चिलचिम

आहारयोगी वर्ग

सन्दर्भ – च.सू. अध्याय 27.286–318

तैल के सामान्य गुण –

कषायानुरसं स्वादु सूक्ष्ममुष्णं व्यवायि च।
पित्तलं बद्धविण्मूत्रं न च श्लेष्माभिवर्धनम्।।
वातघ्नेषूत्तमं बल्यं त्वच्यं मेधाग्निवर्धनम्।
तैलं संयोगसंस्कारात् सर्वरोगापहं मतम्।।
तैलप्रयोगादजरा निर्विकारा जितश्रमाः।
आसन्नतिबलाः संख्ये दैत्याधिपतयः पुरा।। च.सू. 27.286–288

2020-7-11 12:11

– कषाय अनुरस – मधुर – सूक्ष्म – उष्ण – व्यवायि – पित्तल – पुरीष एवं मूत्र बद्धताकारक – न श्लेष्मल – उत्तम वातघ्न – बल्य – त्वच्य – मेधा एवं अग्नि वर्द्धक – संयोग संस्कार से सर्वरोगहर आदि।

एरण्ड तैल के गुण –

ऐरण्डतैलं मधुरं गुरु श्लेष्माभिवर्धनम्।
वातासृग्गुल्महृद्रोगजीर्णज्वरहरं परम्।। च.सू. 27.289

– मधुर – गुरु – श्लेष्मवर्द्धक – वातरक्त, गुल्म, हृद्रोग, जीर्णज्वर नाशक

शुण्ठी के गुण –

सस्नेहं दीपनं वृष्यमुष्णं वातकफापहम्।
विपाके मधुरं हृद्यं रोचनं विश्वभेषजम्।। च.सू. 27.296

– सस्नेह – दीपन – वृष्य – उष्ण – वातकफघ्न – मधुर विपाकी – हृद्य – रोचन

पिप्पली के गुण –

श्लेष्मला मधुरा चार्द्रा गुर्वी स्निग्धा च पिप्पली।
सा शुष्का कफवातघ्नी कटूष्णा वृष्यसंमता।। च.सू. 27.297

आर्द्र पिप्पली: – श्लेष्मल – मधुर – गुरु – स्निग्ध

शुष्क पिप्पली: – कफवातघ्न – कटु – उष्ण – वृष्य

मरिच के गुण –

नात्यर्थमुष्णं मरिचमवृष्यं लघु रोचनम्।
छेदित्वाच्छोषणत्वाच्च दीपनं कफवातजित्।। च.सू. 27.298

– नाति उष्ण – अवृष्य – लघु – रोचन – छेदि – शोषण – दीपन – कफवातघ्न

हिंगु के गुण –

वातश्लेष्मविबन्धघ्नं कटूष्णं दीपनं लघु।
हिंगु शूलप्रशमनं विद्यात् पाचनरोचनम्।। च.सू. 27.299

– वातकफघ्न – विबन्धहर – कटु – उष्ण – दीपन – लघु – शूल प्रशमन – पाचन – रोचन

सैन्धव के गुण –

रोचनं दीपनं वृष्यं चक्षुष्यमविदाहि च।
त्रिदोषघ्नं समधुरं सैन्धवं लवणोत्तमम्।। च.सू. 27.300

– रोचन – दीपन – वृष्य – चक्षुष्य – अविदाही – त्रिदोषघ्न – मधुर – उत्तम लवण

यवक्षार के गुण –

हृत्पाण्डुग्रहणीरोगप्लीहानाहगलग्रहान्।
कासं कफजमर्शांसि यावशूको व्यपोहति।। च.सू. 27.305

2020-7-11 12:11

– हृद्रोग – पाण्डुरोग – ग्रहणी रोग – प्लीहा – आनाह – गलग्रह – कास – कफज अर्श नाशक

मांसरस के गुण –

प्रीणनः सर्वभूतानां हृद्यो मांसरसः परम्।।
शुष्यतां व्याधिमुक्तानां कृशानां क्षीणरेतसाम्।
बलवर्णार्थिनां चैव रसं विद्याद्यथामृतम्।।
सर्वरोगप्रशमनं यथास्वं विहितं रसम्।
विद्यात् स्वर्यं बलकरं वयोबुद्धीन्द्रियायुषाम्।।
व्यायामनित्याः स्त्रीनित्या मद्यनित्याश्च ये नराः।
नित्यं मांसरसाहारा नातुराः स्युर्न दुर्बलाः।। च.सू. 27.312–315

– प्रीणन – परम् हृद्य – शुष्क, व्याधिमुक्त, कृश, क्षीण रेतस्, बल एवं वर्ण के इच्छुक के लिए अमृत तुल्य – सर्वरोगप्रशमन – स्वर्य – वय, बुद्धि, इन्द्रिय और आयु के लिए बलकर – व्यायाम नित्या, स्त्री नित्या, मद्य नित्या के लिए नित्य सेवनीय आदि।

• • •

2020-7-11